THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

epaper.vaartha.com

तीन मंजिला मकान गिरा, 10 की मौत

मेरठ, 15 सितंबर (एजेंसियां)। यूपी के मेरठ में शनिवार शाम हुए हादसे में अब तक 10 की मौत हो गई। मरने वालों में 6 बच्चे भी शामिल हैं। 5 लोगों को रेस्क्यू कर हॉस्पिटल भेजा गया है। 22 घंटे से लगातार रेस्क्यू जारी है। अभी मलबे में किसी के दबे होने की जानकारी नहीं है, लेकिन टीम ऑपरेशन में लगी है। टीम मलबे को हटाकर स्निफर डॉग्स की मदद से देख रही है कि कोई और तो नहीं दबा है। हादसा शनिवार शाम 5.15 बजे लोहिया नगर थाना क्षेत्र के जाकिर कॉलोनी में हुआ था। 3 मंजिला घर ढह गया था। इसमें एक ही परिवार के 15 लोग दब गए थे। शुरुआती जांच में सामने आया कि तीन मंजिला बिल्डिंग 50 साल पुरानी थी।

वर्ष-29 अंक : 175 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टणम, तिरुपति से प्रकाशित) भाद्रपद शु.13 2081 सोमवार, 16 सितंबर-2024

प्रधान संपादक - डॉ. गिरीश कुमार संघी हैदराबाद नगर ✲ पृष्ठ : 16 मूल्य : 8 रुपये

एके का पद छोड़ने का ऐलान

दो दिन में इस्तीफा दूंगा, सिसोदिया भी पद नहीं लेंगे; पार्टी विधायक नया मुख्यमंत्री चुनेंगे

नई दिल्ली, 15 सितंबर (एजेंसियां)। केजरीवाल ने दिल्ली के आप ऑफिस में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते समय इस्तीफे का ऐलान किया। इस दौरान उन्होंने 'भगत सिंह की जेल डायरी' किताब भी दिखाई। 2 दिन पहले (13 सितंबर) जमानत पर जेल से बाहर आए अरविंद केजरीवाल ने रविवार को कहा कि वे 2 दिन में मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे देंगे। उन्होंने कहा- भाजपा ने मुझ पर बेईमानी, भ्रष्टाचार के आरोप लगाए हैं, अब जनता की अदालत में मेरी ईमानदारी का फैसला होगा। दो-तीन दिन में विधायकों की बैठक में नया सीएम चुना जाएगा। चुनाव तक मैं मुख्यमंत्री की कुर्सी पर नहीं बैठूंगा। केजरीवाल ने कहा कि मनीष सिसोदिया पर भी वही आरोप हैं, जो मुझ पर हैं। उनका भी यही सोचना है कि वे भी पद पर नहीं रहेंगे, चुनाव जीतने के बाद ही पद संभालेंगे।

इस्तीफे के बाद आगे क्या?

मुख्यमंत्री कौन होगा: केजरीवाल ने कहा कि जनता को तय करना है कि केजरीवाल ईमानदार है या बेईमान। चुनाव के बाद जनता ने चुना तो पद पर बैठूंगा। चुनाव होने तक पार्टी दो-तीन दिन में नया मुख्यमंत्री चुनेगी। आतिशी, कैलाश गहलोत, गोपाल राय, सौरभ भारद्वाज और सुनीता केजरीवाल में से कोई एक मुख्यमंत्री बन सकता है।

इस्तीफे के बाद केजरीवाल क्या करेंगे: 5 अक्टूबर को हरियाणा में वोटिंग है। राज्य में कांग्रेस से आप का गठबंधन नहीं हुआ है। इसके बाद यहां सभी 90 सीटों पर पार्टी ने प्रत्याशी उतारे हैं। केजरीवाल का पूरा फोकस अब हरियाणा में चुनाव प्रचार पर होगा। जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव में भी आप चुनाव लड़ रही है।

भगत सिंह की किताब लेकर पहुंचे: केजरीवाल सभा में भगत सिंह की जेल में लिखी किताब भगत सिंह की जेल डायरी लेकर पहुंचे। कहा कि भगत सिंह के खत अंग्रेज बाहर ले जाते थे। मैं जेल में था, मेरी चिट्ठी एलजी तक नहीं पहुंचाई गई। मुझे धमकाया गया कि दोबारा ऐसा ना करूं।

खुद को क्रांतिकारी मुख्यमंत्री कहा: केजरीवाल ने कहा कि भगत सिंह के बाद, 90-95 साल बाद आजाद भारत में एक क्रांतिकारी मुख्यमंत्री जेल गया। 15 अगस्त से 3 दिन पहले एलजी से कहा था कि मेरी जगह आतिशी को तिरंगा फहराने दिया जाए। चिट्ठी एलजी तक नहीं गई।

माता सीता की तरह मेरी अग्निपरीक्षा: दिल्ली सीएम ने कहा कि जब 14 साल के बाद भगवान राम वनवास से लौटे तो माता सीता को अग्नि परीक्षा देनी पड़ी थी। आज मैं अग्निपरीक्षा दूंगा।

गैर भाजपाई सीएम जेल जाएं तो इस्तीफा ना दें: केजरीवाल ने कहा- मैं सभी नॉन भाजपा सीएम से प्रार्थना करता हूं। अगर पीएम जेल भेजें तो इस्तीफा मत देना। हम सबको मिलकर लड़ना है। बहुमत से सरकार आई और मुख्यमंत्री इस्तीफा दे दे। इनका फॉर्मूला आम आदमी पार्टी ने फेल कर दिया।

दिल्ली विधानसभा चुनाव नवंबर में हो: केजरीवाल बोले- फरवरी में चुनाव हैं, मैं मांग करता हूं कि चुनाव नवंबर में कराए जाएं। महाराष्ट्र के साथ चुनाव हों। आपका फैसला आने तक मैं जिम्मेदारी नहीं संभालूंगा। आम आदमी पार्टी से कोई और मुख्यमंत्री बनेगा।

केजरीवाल के इस्तीफे के मायने

सीएम, लेकिन पावर नहीं: दिल्ली शराब नीति केस में अरविंद केजरीवाल 177 दिन बाद जेल से जमानत पर बाहर आए। सुप्रीम कोर्ट ने शर्त रखी कि वो सीएम ऑफिस नहीं जाएंगे और ना ही किसी फाइल पर साइन करेंगे। यानी जेल से बाहर आने और मुख्यमंत्री रहते हुए भी उनके पास पावर नहीं रहा। सरकार कैबिनेट भरोसे चलेगी।

5 महीने का कार्यकाल बचा: दिल्ली विधानसभा का कार्यकाल फरवरी 2025 में खत्म हो रहा है। यानी सरकार के पास चुनाव में सिर्फ 5 महीने ही बचे हैं। इस दौरान सरकारें लोकलुभावन चुनावी फैसले लेती हैं। केजरीवाल कोर्ट की शर्तों में बंधे। जेल से छूटने के बाद केजरीवाल के साथ सिंपथी है।

>14

जम्मू-कश्मीर में 72 घंटे के भीतर छठा एनकाउंटर

श्रीनगर, 15 सितंबर (एजेंसियां)। पुंछ के मेंढर इलाके में रविवार सुबह पुलिस और सेना ने सर्च ऑपरेशन चलाया। जम्मू-कश्मीर में बीते 72 घंटे में चौथी बार आतंकियों और सुरक्षाबलों के बीच मुठभेड़ हुई। रविवार (15 सितंबर) की दोपहर कठुआ के नुकनाली नाला में गोलीबारी हो रही है। सेना और पुलिस को आतंकियों के होने की जानकारी मिली थी। सेना और पुलिस जब इलाके में जॉइंट ऑपरेशन चला रही थी। तभी आतंकियों ने टीम पर गोलीबारी की। इलाके में 2-3 आतंकियों के छिपे होने की आशंका जताई गई है।

इससे पहले आज सुबह पुंछ में सेना और आतंकियों के बीच मुठभेड़ हुई। मेंढर के गुरसाई टॉप के पास पठानतीर इलाके में 2-3 आतंकी छिपकर सेना पर फायरिंग कर रहे हैं। यहां भी ऑपरेशन जारी है। सेना ने बताया कि एनकाउंटर वाली जगह पर और जवानों को भी भेजा जा रहा है। जम्मू-कश्मीर में बीते 3 दिन में 6वां एनकाउंटर है।

पीएम बोले- झारखंड के 3 दुश्मन, जेएमएम-राजद, कांग्रेस

राजद बदला ले रही, कांग्रेस को विकास से मतलब नहीं जेएमएम बांग्लादेशी घुसपैठियों के साथ

जमशेदपुर, 15 सितंबर (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जमशेदपुर में बीजेपी की परिवर्तन महारैली में शामिल हुए। सभा को संबोधित करते हुए विपक्ष पर जोरदार हमला बोला।

विधानसभा चुनाव से पहले पीएम नरेंद्र मोदी आज झारखंड दौरे पर हैं। जमशेदपुर में परिवर्तन महारैली को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने विपक्ष पर जोरदार हमला बोला है। उन्होंने कहा कि झारखंड के तीन दुश्मन हैं, जेएमएम, कांग्रेस और आरजेडी। राजद तो अलग झारखंड बनने के बाद से ही बदला ले रही है। वहीं कांग्रेस को झारखंड से नफरत है। इतने साल सत्ता में रहने के बाद भी कांग्रेस ने झारखंड के विकास के लिए कुछ नहीं किया। मौके पर पीएम ने ये भी कहा कि अगर आप प्रदेश का विकास चाहते हैं तो बीजेपी को मौका दीजिए।

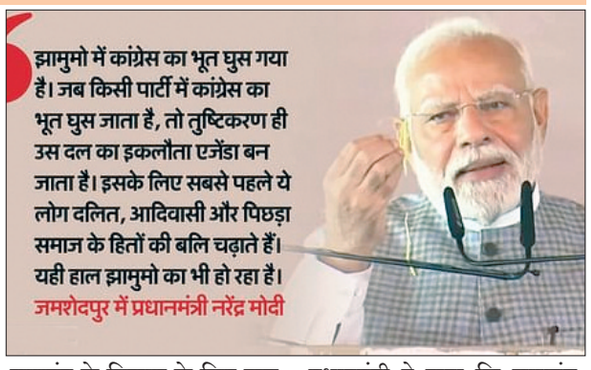

वहीं घुसपैठ को लेकर पीएम ने जेएमएम पर निशाना साधा। प्रधानमंत्री ने कहा कि झारखंड मुक्ति मोर्चा वाले बांग्लादेशी घुसपैठियों के साथ खड़ी है। तुष्टिकरण की राजनीति में सबसे पहले ये लोग दलित, आदिवासी और पिछड़ा समाज के हितों की बलि चढ़ाते हैं।

मोदी ने छह वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी दिखाई

नई दिल्ली/हैदराबाद, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आज वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के ज़रिए झारखंड के टाटानगर में 660 करोड़ रुपये से अधिक की विभिन्न रेलवे परियोजनाओं का शिलान्यास किया और उन्हें राष्ट्र को समर्पित किया। उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) के 32 हजार लाभार्थियों को मंजूरी पत्र भी वितरित किए। इससे पहले, मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के ज़रिए टाटानगर जंक्शन रेलवे स्टेशन पर छह वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी दिखाई। प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन की शुरुआत बाबा बैद्यनाथ, बाबा बासुकीनाथ और भगवान बिरसा मुंडा की धरती को नमन करने के साथ की। उन्होंने झारखंड में कर्म पर्व के पवित्र अवसर का भी उल्लेख किया, जिसे प्रकृति की पूजा के लिए समर्पित माना जाता है।

>14

डॉक्टरों की होगी यूनिक आईडी

एनएमसी पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन जरूरी, पता चलेगा देश में कुल कितने डॉक्टर, कौन सी डिग्री

नई दिल्ली, 15 सितंबर (एजेंसियां)। इंडियन मेडिकल रजिस्टर (आईएमआर) में रजिस्टर्ड सभी एमबीबीएस डॉक्टरों को भी नेशनल मेडिकल रजिस्टर (एनएमआर) में भी रजिस्टर्ड करना होगा।

देश में अब हर डॉक्टर की एक अलग पहचान होगी। उन्हें एक यूनिक आईडी नंबर दिया जाएगा। सरकार ने सभी डॉक्टरों के लिए नेशनल मेडिकल रजिस्टर (एनएमआर) में रजिस्ट्रेशन अनिवार्य कर दिया है। डॉक्टरों को एमबीबीएस सर्टिफिकेट, रजिस्ट्रेशन और आधार कार्ड सबमिट करना होगा। इस पोर्टल को नेशनल मेडिकल कमीशन ने तैयार किया है।

नेशनल मेडिकल कमीशन ने हाल ही में एक नोटिस जारी किया था। जिसमें लिखा था कि, इंडियन मेडिकल रजिस्टर (आईएमआर) में रजिस्टर्ड सभी एमबीबीएस डॉक्टरों को अब नेशनल मेडिकल रजिस्टर (एनएमआर) में भी रजिस्टर्ड करना होगा। इस पोर्टल से देश के सभी मेडिकल कॉलेज/इंस्टीट्यूट, स्टेट मेडिकल काउंसिल भी जुड़े होंगे।

पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन के लिए डॉक्टरों को अपनी आधार आईडी, एमबीबीएस डिग्री सर्टिफिकेट की एक डिजिटल कॉपी और स्टेट मेडिकल काउंसिल/मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया से मिले सर्टिफिकेट की कॉपी सब्मिट करनी होगी। बाकी जानकारी खुद से दर्ज करनी होगी। एक बार फॉर्म भरने के बाद यह वैरिफिकेशन के लिए संबंधित स्टेट मेडिकल काउंसिल को भेजा जाएगा। स्टेट काउंसिल फिर इस आवेदन को आगे रिव्यू के लिए संबंधित कॉलेज या संस्थान को भेज देगा।

वैरिफिकेशन के बाद एप्लीकेशन नेशनल मेडिकल कमीशन को भेज दी जाएगी। एनएमसी इसे वैरिफाई करके पोर्टल पर लाइव कर देगा।

नेशनल मेडिकल कमीशन के एक अधिकारी के मुताबिक, आज तक हमारे पास ऐसा कोई डेटा नहीं था, जो यह बता सके कि देश में कुल कितने डॉक्टर हैं। हालांकि एक अनुमानित संख्या है मगर सही आंकड़े अब पता चलेंगे। इसके अलावा कितने डॉक्टरों ने देश छोड़ दिया। कितने डॉक्टरों का लाइसेंस रद्द हुआ। कितने डॉक्टरों की जान गई। ये सारी जानकारी अब एक पोर्टल पर दिखेगी। अधिकारी के मुताबिक, करीब 13 लाख से ज्यादा डॉक्टर इससे जुड़ सकते हैं।

राहुल गांधी तो नंबर 1 आतंकी हैं

केंद्रीय मंत्री रवनीत बिट्टू ने दिया विवादित बयान

नई दिल्ली, 15 सितंबर (एजेंसियां)। बीजेपी नेता और केंद्रीय मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी को लेकर विवादित बयान दिया है। रेल राज्य मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू ने कहा कि नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी को देश के नंबर 1 आतंकी बताया है। बिट्टू ने कहा कि कांग्रेस नेता ने सिखों को बांटने की कोशिश की है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सिख किसी दल से जुड़े नहीं हैं। यह चिंगारी लगाने की कोशिश है और राहुल गांधी नंबर एक टेररिस्ट हैं,उन पर तो ईनाम होना चाहिए। बिट्टू राहुल गांधी के अमेरिका में सिखों को लेकर दिए गए बयान पर अपनी प्रतिक्रिया दे रहे थे।

राहुल गांधी हिंदुस्तानी नहीं

केंद्रीय मंत्री यहीं नहीं रुके, उन्होंने कहा कि राहुल गांधी हिंदुस्तानी नहीं हैं। उन्होंने अपना अधिक समय देश के बाहर बिताया है। उनके दोस्त और परिवार वहां हैं। इसलिए उन्हें अपने देश से अधिक प्यार नहीं हैं। राहुल गांधी बाहर जाकर हर चीज को उल्टा-पुल्टा बोलते हैं। उन्होंने कहा कि अब तो राहुल गांधी कभी ओबीसी, कभी कास्ट की बात करते हैं। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि राहुल गांधी के पास समझ नहीं है।

सिखों को बांटने की कोशिश

अमेरिका में राहुल गांधी के बयान को लेकर भी केंद्रीय मंत्री ने उनपर निशाना साधा। रवनीत सिंह बिट्टू ने कहा कि उन्होंने सिखों को बांटने की कोशिश की है। उन्होंने कहा कि सिख किसी पार्टी से नहीं जुड़े हैं। उन्होंने सवाल उठाया कि किस सिख ने कहा है कि वह कड़ा नहीं पहन सकते? किस सिख ने कहा कि वह पगड़ी नहीं पहन सकते, वह गुरुद्वारे नहीं जा सकते? उन्होंने कहा कि राहुल गांधी चिंगारी लगाने का काम करते हैं। पहले मुस्लिमों में कोशिश की अब सिखों के बारे में बोल रहे हैं। बिट्टू ने कहा कि अब अलगाववादियों राहुल के बयान की तारीफ कर रहे हैं।

राहुल पर होना चाहिए ईनाम

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि जो देश के दुश्मन हैं, हर समय गोली बंदूक की बात करते हैं, जहाजों, ट्रेनों और रोड को उड़ाने की बात करते हैं, जब वो लोग राहुल के समर्थन में आ गए हैं। ऐसे में आप अंदाजा लगा सकते हैं राहुल गांधी खुद देश के नंबर 1 टेररिस्ट हैं। उन्होंने कहा कि अगर किसी पर ईनाम होना चाहिए पकड़ने के लिए या देश का सबसे बड़ा जो दुश्मन है, वो आज राहुल गांधी है।

फोटो खिंचावने से मजाक बनता है

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि राहुल मजदूरों, मेकेनिक, कारपेंटर के पास जाकर फोटो खिंचाते हैं। इससे मजाक बनता है। उन्होंने कहा कि देश की आम जनता का दर्द ही राहुल गांधी को नहीं पता। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी इतने समय से सांसद हैं फिर भी लोगों की समस्या ही समझने में लगे हैं। उन्होंने कहा कि हम लोग एक साथ संसद सदस्य बनें लेकिन उन्हें आज तक रिक्शेवाले के पास जाकर सीख रहा है। क्या उनको अब तक यह नहीं पता चला कि मजदूर का दर्द क्या है, मोची का दर्द क्या है?

किसानों की महापंचायत खत्म

चंडीगढ़, 15 सितंबर (एजेंसियां)। हरियाणा के जींद में आज किसान संगठनों ने किसान-मजदूर महापंचायत की। गैर राजनीतिक संयुक्त किसान मोर्चा के नेता अभिमन्यु कोहाड़ ने महापंचायत की अध्यक्षता की। पंजाब से किसान नेता जगजीत सिंह दल्लेवाल महापंचायत में मौजूद रहे। इस दौरान अनाज मंडी में भारी पुलिस बल तैनात रहा। महापंचायत में किसानों ने ऐलान किया कि 22 सितम्बर को पिपली में महापंचायत का आयोजन किया जाएगा। साथ ही सरकार के खिलाफ रैलियां भी निकाली जाएंगी। किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल ने कहा कि हरियाणा की जनता भाजपा सरकार को उसके 10 साल के शासन की सजा देना चाहती है। भाजपा सरकार इससे डर गई है और अपना गुस्सा किसानों पर निकाल रही है। किसान-मजदूरों पर गोली चलाने वाली सरकार को जनता दोबारा सत्ता में नहीं आने देगी।

हरियाणा चुनाव : अनिल विज की सीएम पद पर दावेदारी

मैं सबसे सीनियर नेता; अमित शाह ने नायब सैनी को मुख्यमंत्री चेहरा बताया था

अंबाला, 15 सितंबर (एजेंसियां)। हरियाणा के पूर्व गृहमंत्री और अंबाला कैंट के भाजपा उम्मीदवार अनिल विज ने मुख्यमंत्री पद पर दावा ठोका है। उन्होंने रविवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इसमें विधायक-मंत्री रहते हुए खुद के कराए काम गिनवाए। विज ने कहा, 'मैं सबसे सीनियर नेता हूं। अपनी सीनियरिटी के दम पर मुख्यमंत्री बनने का दावा पेश करूंगा। पार्टी बनाती है या नहीं, यह उनका फैसला है।' विज से पहले गुरुग्राम से सांसद और केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह भी सीएम पद के लिए अपना दावा पेश कर चुके हैं। 29 जून 2024 को केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने पंचकूला में नायब सैनी के चेहरे पर हरियाणा विधानसभा चुनाव लड़ने की बात कही थी। इसके बावजूद हरियाणा के कई सीनियर लीडर सैनी के नाम पर नाराजगी जता रहे हैं।

सारे हरियाणा से लोग आ रहे हैं। मैं जहां-जहां गया, लोग कह रहे हैं कि आप सीनियर हो, सीएम क्यों नहीं बने? मैं उन लोगों की मांग पर अपनी सीनियरिटी के दम पर मुख्यमंत्री बनने का दावा पेश करूंगा। पार्टी बनाती है या नहीं, यह उनका फैसला है। विज ने कहा कि मैंने आज तक कोई पद नहीं मांगा, लेकिन आज दावा पेश कर रहा हूं। अगर पार्टी ने मुझे सीएम बना दिया तो मैं हरियाणा की तकदीर बदल दूंगा, तस्वीर बदल दूंगा। इसी साल हुए लोकसभा चुनाव से पहले बीजेपी ने मनोहर लाल खट्टर को हटाकर नायब सैनी को हरियाणा का मुख्यमंत्री बनाया था। तब भी सैनी की ताजपोशी से अनिल विज नाराज हो गए थे। उनकी नाराजगी कई मीटिंग्स में खुलकर नजर आई थी।

31 प्रीडेटर ड्रोन खरीद के समझौते पर अगले महीने दस्तखत करेंगे भारत-अमेरिका

नई दिल्ली, 15 सितंबर (एजेंसियां)। भारत अगले महीने अमेरिका के साथ 31 एमक्यू-9बी 'हंटर-किलर' प्रीडेटर ड्रोन खरीदने के लिए एक बड़ा समझौता करने वाला है। रक्षा मंत्रालय इस डील के लिए 'ड्राफ्ट नोट' को अंतिम रूप दे रहा है, जिसके बाद इसे वित्त मंत्रालय और फिर प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली सुरक्षा पर कैबिनेट कमेटी की मंजूरी के लिए भेजा जाएगा। अमेरिका ने इस सरकारी समझौते के लिए 3.9 बिलियन डॉलर (लगभग 33,500 करोड़ रुपये) की कीमत बताई थी। यह खबर ऐसे समय में आई है जब प्रधानमंत्री मोदी 21 सितंबर को अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन द्वारा आयोजित चौथे क्वाड नेताओं के शिखर सम्मेलन में भाग लेने वाले हैं।

रक्षा मंत्रालय की अनुबंध बातचीत समिति की रिपोर्ट मंजूर कर ली गई है।

एक सूत्र ने बताया, 'अनुबंध पर अक्टूबर के मध्य में हस्ताक्षर होने की उम्मीद है। लागत, यहां एक एमआरओ (रखरखाव, मरम्मत, ओवरहाल) सुविधा की स्थापना, प्रदर्शन-आधारित लॉजिस्टिक सहायता और ऐसे अन्य मुद्दों को कठिन बातचीत के बाद अंतिम रूप दे दिया गया है।' हालांकि इस सौदे में कोई सीधा टेक्नोलॉजी ट्रांसफर नहीं होगा, लेकिन 31 ड्रू से संचालित विमानों को यहां इकट्ठा किया जाएगा।

ड्रोन-निर्माता जनरल एटॉमिक्स भारत में निवेश करेगा और 30 प्रतिशत से ज्यादा घटकों की सोर्सिंग भारतीय कंपनियों से करेगा। ड्रोन-निर्माता जनरल एटॉमिक्स स्वदेशी रूप से ऐसे उच्च-ऊंचाई वाले, डेवलेप ड्रोन विकसित करने के लिए डीआरडीओ और अन्य को गाइड भी करेगा।

नौसेना और वायुसेना को मिलेंगे एडवांस ड्रोन

पिछले महीने खबर आई थी कि भारत इस सौदे के लिए तकनीकी-व्यावसायिक बातचीत में तेजी ला रहा है। इस सौदे के तहत 15 सी गार्जियन ड्रोन नौसेना के लिए और 8-8 स्काई गार्जियन सेना और भारतीय वायुसेना के लिए रखे गए हैं। यह कदम ऐसे समय में उठाया गया है जब चीन और पाकिस्तान दोनों ही अपने सशस्त्र यूएवी के बेड़े को लगातार बढ़ा रहे हैं।

हमारा विश्वास हिल गया : सुप्रीम कोर्ट

दोषियों की सजा माफ कराने के लिए झूठे बयान दे रहे अधिवक्ता

नई दिल्ली , 15 सितंबर (एजेंसियां)। दोषियों की सजा माफी और समय से पहले रिहाई कराने के लिए अधिवक्ता सुप्रीम कोर्ट में झूठे बयान दे रहे हैं। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने नाराजगी जाहिर की है। कोर्ट ने कहा कि लगातार इस तरह के मामले सामने आ रहे हैं। इससे हमारा विश्वास हिल गया है। न्यायमूर्ति अभय एस ओका और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने कहा कि पिछले तीन हफ्तों में उसके सामने ऐसे कई मामले आए हैं जहां दलीलों में गलत बयान दिए गए।

पीठ ने अपने आदेश में कहा कि अदालत में सजा में छूट न दिए जाने की शिकायत को लेकर बड़ी संख्या में याचिकाएं दायर की जा रही हैं। पिछले तीन सप्ताह में यह छठा-सातवां मामला हमारे सामने आया है, जिसमें दलीलों में गलत बयान दिए गए हैं। शीर्ष अदालत में पीठ के सामने रोज 60-80 मामले दर्ज होते हैं। जजों के लिए हर मामले के प्रत्येक पेज को पढ़ना संभव नहीं है। फिर भी हर मामले को करीब से देखा जाता है।

पीठ ने कहा कि हमारा सिस्टम विश्वास पर काम करता है। जब हम मामलों की सुनवाई करते हैं तो हम बार के सदस्यों पर भरोसा करते हैं। लेकिन जब हमारे सामने इस तरह के मामले आते हैं, तो हमारा विश्वास हिल जाता है। कोर्ट ने कहा कि एक मामले में छूट की मांग के लिए दायर रिट याचिका में न केवल गलत बयान दिए गए हैं, बल्कि अदालत के समक्ष एक गलत बयान दिया गया।

कोर्ट ने कहा कि याचिकाकर्ताओं के तत्कालीन एडवोकेट ने जेल अधिकारियों को संबोधित 15 जुलाई, 2024 के ईमेल में झूठे बयान दोहराए। वकील इस स्थिति से अवगत थे, लेकिन 19 जुलाई, 2024 को एक गलत बयान दिया गया कि सभी याचिकाकर्ताओं सजा की अवधि समाप्त नहीं हुई है। पीठ ने कहा इस मामले में जुर्माना लगाया जाना चाहिए। लेकिन हम याचिकाकर्ताओं को उनके वकीलों द्वारा की गई गलतियों के लिए दंडित नहीं कर सकते।

कोर्ट में दायर याचिका में कहा गया था कि चार याचिकाकर्ताओं ने एक मामले में 14 साल की सजा बिना छूट के काट ली है।

एमपी के 10 और राजस्थान के 8 जिलों में तेज बारिश का अलर्ट

नई दिल्ली, 15 सितंबर (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश में बीते 4 दिन से लगातार तेज बारिश हो रही है। इस कारण घाघरा, कोसी, शारदा और सरयू नदियां उफान पर हैं। बहराइच में घाघरा और सरयू नदी का जलस्तर बढ़ने से 20 गांवों में बाढ़ आ गई। मुरादाबाद में मुरादाबाद-दिल्ली हाईवे पर कोसी नदी का पानी पहुंच गया है। करीब 2 फीट तक पानी भरने के कारण एक लेन बंद कर दी गई है। यूपी में आज 22 जिलों में भारी बारिश का अलर्ट है। मध्य प्रदेश के 10 और राजस्थान के 8 जिलों में आज तेज बारिश का अलर्ट है। बिहार के 38 में से 32 जिलों में भी तेज बारिश हो सकती है। उत्तराखंड में भी कई जिलों में तेज बारिश के चलते बाढ़ जैसे हालात हैं। पिछले 24 घंटे में बारिश से संबंधित घटनाओं में प्रदेश में 4 लोगों की मौत हुई। वहीं, 2 लोग लापता हैं। 500 लोगों को रेस्क्यू भी किया गया। उत्तराखंड में कई जगहों पर लैंडस्लाइड भी हुई, जिसके चलते 478 सड़कों को बंद कर दिया गया। इनमें कई नेशनल हाईवे भी शामिल हैं।

16 सितंबर को 9 राज्यों में 7 सेमी बारिश का अनुमान

मौसम विभाग के मुताबिक, पूर्वी मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों में बहुत भारी बारिश (20 सेमी तक) हो सकती है।

दिल्ली-मुरादाबाद हाईवे पर 2 फीट पानी भरा

पूर्वी उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड, ओडिशा, नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा के कुछ इलाकों में भारी बारिश (7 सेमी तक) का अनुमान है। झारखंड, पश्चिम बंगाल, बिहार, ओडिशा और नॉर्थ-ईस्ट के राज्यों में 16 से 20 सितंबर के बीच भारी बारिश हो सकती है। 17 सितंबर को छत्तीसगढ़ में भारी बारिश हो सकती है। वहीं, 18 सितंबर को वेस्ट मध्य प्रदेश में भारी बारिश हो सकती है।

इस बार मानसून सामान्य से 16 अधिक दिन एक्टिव रहेगा

आम तौर पर मानसून की 18 सितंबर के बाद से पश्चिमी राजस्थान के रास्ते वापसी शुरू हो जाती है, लेकिन इस बार इसके करीब 16 दिन और एक्टिव रहने के आसार बन रहे हैं।

यानी देश में सितंबर के आखिर तक तेज बारिश का दौर देखने को मिलेगा। प्राइवेट वेदर एजेंसी स्काईमेट के अनुसार, मानसून वापसी के बाद अक्टूबर में भी बारिश की संभावना है। मौसम विभाग के मुताबिक, इस बार के मानसून में अब तक 108 फीसदी यानी 8% ज्यादा बारिश हो चुकी है। इसके बावजूद देश के करीब एक चौथाई यानी 185 जिलों (26%) में सूखे की स्थिति है।

68 जिले ऐसे हैं, जिनमें सामान्य से 60% बारिश हुई हैं, इनमें 19 अकेले राजस्थान में हैं। सबसे ज्यादा प्रभावित उत्तर प्रदेश (30 जिले), बिहार (25), झारखंड (11), ओडिशा (11), पंजाब (15) हैं।

मानसून के 16 अधिक दिन एक्टिव रहने की वजह

मौसम विभाग के मुताबिक, एक डिप्रेशन उत्तर-पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ऊपर बना हुआ है। ये उत्तराखंड की तरफ बढ़ रहा है। इसका असर हिमाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों पर भी होगा।

एक नया लो प्रेशर का एरिया साउथ बांग्लादेश के पास है, जो 2 दिन में डिप्रेशन बनेगा। यह इस सीजन का चौथा डिप्रेशन होगा। इसके चलते बिहार, झारखंड, ओडिशा और छत्तीसगढ़ में बारिश होगी। मौसम विभाग के मुताबिक, आने वाले दिनों में राजस्थान, गुजरात, वेस्ट मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र समेत साउथ के राज्यों में भारी बारिश की आशंका कम देखने को मिलेगी।

मध्य प्रदेश: 4 संभाग में अलर्ट

सितंबर में बारिश का तीसरा स्ट्रॉन्ग सिस्टम रविवार से एक्टिव हो रहा है। अगले 3 दिन तक मध्यप्रदेश के पूर्वी हिस्से- जबलपुर, रीवा, शहडोल और सागर संभाग में भारी बारिश होगी। रविवार को सिंगरौली, सीधी, अनूपपुर, शहडोल, उमरिया, डिंडौरी में भारी बारिश का ऑरेंज अलर्ट है।

पटना समेत 32 जिलों में बारिश का अलर्ट,

बिहार में अगले दो दिन तक बारिश का अलर्ट है। मौसम विभाग के अनुसार मानसून एक्टिव होने की वजह से बिहार समेत पूरे पूर्वी भारत में फिर से भारी बारिश की संभावना है। मौसम विज्ञान केंद्र ने प्रदेश के सभी 38 जिलों में रविवार को बारिश की संभावना जताई है। इसमें 6 जिले में भारी बारिश का अलर्ट है।

गोंडा में घाघरा नदी उफान पर, 20 गांवों में बाढ़

4 दिन की बारिश के बाद यूपी की नदियां उफान पर हैं। मुरादाबाद-दिल्ली हाईवे पर कोसी नदी का पानी पहुंच गया। पुलिस की टीम ने एक लेन से वाहनों को गुजारा। गोंडा में घाघरा नदी खतरे के निशान से 87 सेंटीमीटर ऊपर बह रही है। 20 गांवों में बाढ़ आ गई। आज 22 जिलों में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है।

4 जिलों में बूंदाबांदी की संभावना, चंडीगढ़ समेत 3 शहरों में बारिश

पंजाब में आज (15 सितंबर) मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। पठानकोट, होशियारपुर, नवांशहर और रूपनगर में हल्की बारिश का अनुमान है, लेकिन तापमान में अधिक बदलाव नहीं देखने को मिलेगा। राज्य का औसतन तापमान सामान्य के करीब रहने का अनुमान है।

सीएम सिद्धारमैया की सुरक्षा में चूक

मंच पर कूदा व्यक्ति, सुरक्षा कर्मियों ने लिया एक्शन

बेंगलुरु, 15 सितंबर (एजेंसियां)। बेंगलुरु में सीएम सिद्धारमैया की सुरक्षा में चूक हुई है। राज्य में रविवार को लोकतंत्र दिवस कार्यक्रम चल रहा था। जिस दौरान मुख्यमंत्री सिद्धारमैया की सुरक्षा में चूक का मामला सामने आया है। जिसकी वीडियो भी सामने आई है। वीडियो में सामने आया कि एक अज्ञात व्यक्ति मंच के सामने बैठा था और वो अचानक से मंच पर कूदा और वो मंच पर बैठे मुख्यमंत्री के पास पहुंचने की कोशिश कर रहा था, लेकिन जैसे ही व्यक्ति मंच पर कूदा वैसे ही सारे सुरक्षाकर्मी एक्शन में आ गए और उन्होंने व्यक्ति को चारों तरफ से घेर लिया।

व्यक्ति को पुलिस के हवाले किया

व्यक्ति को सुरक्षाकर्मियों ने घेरते हुए सीधे-सीधे उसे मंच से नीचे उतारा और फिर पुलिस ने फौरन उसे दबोच लिया और उसे हिरासत में ले लिया। सामने आई वीडियो में व्यक्ति भी साफ दिखाई दे रहा है, उसने नीले रंग की शर्ट पहन रखी है।

शॉल फेंकने की कोशिश की

घटना के वीडियो में दिखाई दे रहा है कि व्यक्ति सीधे वहीं कूदा था जहां सीएम सिद्दारमैया बैठे थे, लेकिन सीएम के पीछे एक सुरक्षा कर्मी खड़ा था जोकि व्यक्ति के मंच पर कूदने से पहले ही सतर्क हो गया था और भांप गया था कि यह व्यक्ति मंच पर कूदने वाला है। इसी के चलते सुरक्षाकर्मी पहले ही सीएम के आगे आकर खड़ा हो गया, जिससे सीएम भी हैरान हुए और सुरक्षा कर्मी को देखने लगे, इतने में ही पलक झपकते ही व्यक्ति ने मंच पर छलांग लगा दी, लेकिन व्यक्ति के मंच पर कूदते ही उसे सुरक्षा कर्मियों ने दबोच लिया। हालांकि, व्यक्ति बस सीएम से कुछ ही इंच दूर रह गया था। उस के हाथ में एक शॉल भी था जो उसने सीएम की तरफ फेंकना चाहा, लेकिन सुरक्षा कर्मी ने उस शॉल को भी पकड़ लिया। सीएम सिद्धारमैया को इस घटना में किसी तरह की कोई चोट नहीं आई, वो व्यक्ति उन तक पहुंचने में कामयाब नहीं हो पाया, लेकिन स्टेज पर बैठे सारे लोग एक दम से यह सब देखते ही हैरान हो गए।

मंत्री छगन भुजबल ने भाषण के दौरान कम करवाई हनुमान चालीसा की आवाज, कहा- काम कैसे करूंगा?

मुंबई, 15 सितंबर (एजेंसियां)। महाराष्ट्र के नासिक में मंत्री छगन भुजबल को जनसभा के दौरान हनुमान चालीसा की तेज आवाज से इतनी परेशानी हुई कि उन्हें ये कहना पड़ा कि इसकी आवाज कम करवाएं। उन्होंने ये भी कहा कि इतनी तेज आवाज आ रही है, मैं भाषण कैसे करूंगा? दरअसल महाराष्ट्र के नासिक में छगन भुजबल एक जनसभा को संबोधित कर रहे थे। इसी दौरान भगवान हनुमान की आरती शुरू हो गई और हनुमान चालीसा की भी तेज आवाज आने लगी। पहले छगन भुजबल को कुछ समझ में नहीं आया। तब उनके बगल में खड़े एक व्यक्ति ने कहा कि खुद बजरंग बली आपके लिए दौड़ कर आए हैं। फिर भुजबल ने पूछा कि क्या बजरंग बली की आरती चल रही है? इस पर एनसीपी कार्यकर्ता ने कहा कि आरती नहीं, हनुमान चालीसा चल रही है। आरती रोज होती है। भुजबल ने कहा कि अगर संभव है तो थोड़ा आवाज कम करिए। फिर भुजबल

के आदेश पर हनुमान चालीसा की आवाज कम की गई। हनुमान चालीसा की आवाज की वजह से छगन भुजबल को भाषण देने में परेशानी हो रही थी। उनका कहना था कि कितनी आवाज आ रही है। भाषण कैसे करूंगा। संभव हो तो थोड़ा आवाज कम करिए। पुलिस इंस्पेक्टर तत्काल इसका संज्ञान लें। मैं खुद बजरंग बली का भक्त हूं। उन्हीं की वजह से ये सब काम हो रहा है। भुजबल ने ये भी पूछा कि मंदिर कहां है? इस पर कार्यकर्ता ने बताया कि पास में ही गांव में मंदिर हैं। भुजबल ने कहा कि बजरंग बली को कहिए, बजरंग बली तोड़ दुश्मन की नली। थोड़ा आवाज कम करिए।

9 मिनट की स्पीच में 76 बार मैं, मेरा सुवेंदु अधिकारी ने सीएम ममता बनर्जी पर साधा निशाना

कोलकाता, 15 सितंबर (एजेंसियां)। रेप मर्डर केस को लेकर अब जमकर सियासत की जा रही है, नेताओं ने इस केस को लेकर एक दूसरे पर वार-पलटवार का सिलसिला शुरू कर दिया है। हाल ही में बीजेपी के नेता और पश्चिम बंगाल में विपक्ष के नेता सुवेंदु अधिकारी ने सीएम ममता बनर्जी का एक वीडियो जारी किया है। सीएम ममता बनर्जी शनिवार को पीड़िता के लिए इंसाफ की मांग कर रहे जूनियर डॉक्टर्स के प्रदर्शन स्थल पर पहुंची थी, सीएम बनर्जी ने प्रदर्शनस्थल पर डॉक्टरों को संबोधित किया था, उनकी स्पीच के वीडियो को ही विपक्षी पार्टी के नेता सुवेंदु अधिकारी ने शेयर किया है।

सुवेंदु अधिकारी का सीएम पर हमला

सुवेंदु अधिकारी ने वीडियो शेयर करते हुए लिखा, सीएम ने "मैं,मेरा, खुद, मुझे, शब्दों का 9 मिनट में 76 बार इस्तेमाल किया। साथ ही उन्होंने लिखा, सीएम ममता बनर्जी जब

जूनियर डॉक्टर के प्रदर्शन स्थल स्वास्थ्य भवन पहुंची थी तो उन्होंने जूनियर डॉक्टर्स को संबोधित करते हुए कई बार खुद की बात की और खुद को बढ़ा-चढ़ा कर दिखाया। सुवेंदु अधिकारी ने सीएम ममता बनर्जी पर निशाना साधते हुए कहा, यहीं उनका व्यक्तित्व हैं, हर चीज उनके लिए सिर्फ उन से जुड़ी ही होती है। साथ ही उन्हें सुवेंदु अधिकारी ने सेल्फ सेंट्रिक भी कहा और बोले, सीएम की इसी बात की वजह से इस गतिरोध को खत्म करने का कोई भी समाधान निकालना बेहद मुश्किल है। कोलकाता में 9 अगस्त को जूनियर डॉक्टर के साथ रेप हुआ और मर्डर कर दिया गया। पीड़िता के साथ हुए दुष्कर्म के बाद पूरे देश जूनियर डॉक्टर को इंसाफ दिलाने की मांग उठने लगी। इसी के चलते जूनियर डॉक्टर्स स्वास्थ्य भवन में लगातार प्रदर्शन कर रहे हैं। शुक्रवार को तेज बारिश में भी जूनियर डॉक्टर्स प्रदर्शन स्थल पर डटे रहे। इसी के बाद शनिवार को सीएम प्रदर्शन स्थल पहुंची और उन्होंने प्रदर्शनकारियों से काम पर वापस लौटने की अपील की और कहा कि मैं आपको इंसाफ दिला कर रहूंगी। सीएम ने इस मौके पर कहा, मैं खुद छात्र आंदोलन से आई हूं। उन्होंने जूनियर डॉक्टर्स से कहा, मैंने अपने जीवन में बहुत संघर्ष किया है, मैं आपके संघर्ष को समझती हूं। मुझे मेरी पोस्ट की चिंता नहीं है।

मालदा में दिनदहाड़े कांग्रेस नेता की हत्या, गोलियों से भूना, बम से भी हमला

कोलकाता, 15 सितंबर (एजेंसियां)। पश्चिम बंगाल के मालदा में रविवार सुबह कुछ बदमाशों ने दिनदहाड़े कांग्रेस के एक नेता की हत्या कर दी। इस घटना से आस-पास के इलाकों में दहशत मच गई है। घटना मानिकचक के धरमपुर स्टैंड के पास स्थित बाजार की बताई जा रही है। मृतक का नाम शेख सैफुद्दीन बताया जा रहा है, जो कांग्रेस से जुड़े हुए थे। मृतक कांग्रेस नेता के बेटे के मुताबिक, उनके पिता रविवार सुबह करीब 9 बजे मानिकचक गए थे। इसी दौरान नकाबपोश बदमाशों ने कांग्रेस नेता को घेर लिया और उन पर अंधाधुंध गोलीबारी कर दी। जानकारी के अनुसार, इस दौरान बदमाशों ने बम से भी हमला किया। हमले में कांग्रेस नेता ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। मृतक के बेटे ने इस हमले का आरोप टीएमसी समर्थित अपराधियों पर लगाया है। बेटे ने आरोप लगाया कि इस घटना में गोपालपुर क्षेत्र के तृणमूल कांग्रेस के अध्यक्ष शेख नासिर शामिल हैं। उनके नेतृत्व में ही बदमाशों ने वारदात को अंजाम दिया और मेरे पिता की बेरहमी से हत्या कर दी। फिलहाल घटना की जानकारी मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

मुंबई एयरपोर्ट पर उड़ान से पहले खराब हुई फ्लाइट, पैसेंजर्स को घंटों तक कराया गया इंतजार; किया हंगामा

मुंबई, 15 सितंबर (एजेंसियां)। इंडिगो एयरलाइंस की एक फ्लाइट में देरी के बाद मुंबई एयरपोर्ट पर यात्रियों ने जमकर हंगामा किया। बताया जा रहा है कि फ्लाइट मुंबई से दोहा जाने वाली थी। फ्लाइट का समय सुबह 3:55 बजे था। लेकिन टेक्निकल एरर की वजह से फ्लाइट की उड़ान में देर हो गई। इस दौरान यात्रियों को काफी देर तक फ्लाइट के अंदर बैठाए रखा गया। इसके बाद यात्रियों ने इंडिगो एयरलाइंस पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए हंगामा किया है। यात्रियों का आरोप है कि उन्हें फ्लाइट में बैठा दिया गया, लेकिन उन्हें यह नहीं बताया गया कि इंजन में खराबी है। प्राथमिक रूप से मिली जानकारी के मुताबिक इंडिगो एयरलाइंस की फ्लाइट लेट होने का कारण टेक्निकल एरर बताया जा रहा है। सुबह मुंबई से दोहा जाने वाली इंडिगो एयरलाइन की 3:55 बजे की फ्लाइट ने उड़ान नहीं भरी। इसके बाद यात्रियों ने हंगामा किया। यात्रियों का आरोप है कि उन्हें फ्लाइट में बैठा दिया गया, लेकिन उन्हें नहीं बताया गया कि इंजन में खराबी है। यात्रियों को बोर्डिंग के बाद करीब 3 से 4 घंटे तक विमान में इंतजार कराया गया, जिसके बाद उन्होंने शिकायत की। इस दौरान एयरपोर्ट पर इंडिगो कर्मचारियों के साथ यात्रियों की बहस भी हुई। यात्रियों को कई घंटे तक फ्लाइट में बैठाए रखा गया।

कुछ घंटों के इंतजार के बाद यात्रियों को विमान से निकालकर इमीग्रेशन वेटिंग एरिया में बैठा दिया गया। पैसेंजर्स का आरोप है कि उन्हें अब तक एयरलाइन द्वारा कोई ठोस जानकारी नहीं दी गई है और एयरपोर्ट से बाहर निकलने की अनुमति भी नहीं मिल रही है। हालांकि कुछ देर पहले एयरलाइंस ने उनसे कहा कि वो होटल में ठहरने का इंतजाम कर रहे हैं। इस फ्लाइट के करीब 250 से 300 यात्री मुंबई एयरपोर्ट पर फंसे हुए हैं। इस घटना पर इंडिगो एयरलाइंस ने बयान जारी कर माफी मांगी है। जारी बयान के अनुसार इंडिगो एयरलाइंस ने कहा, 'मुंबई से दोहा जाने वाली इंडिगो की फ्लाइट 6ई 1303 तकनीकी कारण से लेट हो गई।

हमारी एयरपोर्ट टीम ने प्रभावित ग्राहकों को तुरंत सहायता प्रदान की, जलपान और आवश्यक व्यवस्थाएं प्रदान कीं। विमान ने एक-दो बार अपने गंतव्य के लिए प्रस्थान करने की कोशिश की, लेकिन विभिन्न प्रक्रियात्मक देरी और बढ़े हुए समय के कारण अंततः उड़ान रोकनी पड़ी। ग्राहकों को होटल उपलब्ध कराए जा रहे हैं और उनके अंतिम गंतव्य के अनुसार उन्हें दोबारा बुक किया जा रहा है। इंडिगो अपने ग्राहकों को हुई असुविधा के लिए ईमानदारी से माफी मांगता है।'

जम्मू-कश्मीर में नहीं बनेगी बहुमत वाली सरकार चुनाव से पहले क्या-क्या बोले गुलाम नबी आजाद?

जम्मू, 15 सितंबर (एजेंसियां)। कश्मीर में धारा 370 के हटने के बाद पहली बार विधानसभा चुनाव होने जा रहे हैं, जिसको लेकर सभी पार्टियां कमर कसती हुई नजर आ रही हैं। बीजेपी ने मुस्लिम कैंडिडेट्स पर दांव खेला है, तो वहीं कांग्रेस ने नेशनल कॉन्फ्रेंस के साथ गठबंधन कर लिया है लेकिन राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री गुलाम नबी आजाद ने सभी पार्टियों के वादों को खोखला बताते हुए दावा किया है कि इस बार राज्य में पूर्ण बहुमत की सरकार नहीं बनेगी।

पूर्व मुख्यमंत्री गुलाम नबी आजाद ने कहा कि तमाम पार्टियां जो दावे चुनाव में कर रही हैं वह दावे खोखले हैं हालांकि मेरी तबीयत खराब थी जो हम इन चुनाव में करना चाहते थे वैसे तो नहीं कर पा रहे हैं लेकिन यहां 20 से 22 युवा हमने चुनाव मैदान में उतारे हैं उनके लिए मैं चुनाव रैली के दौरे पर आया हूं। उम्मीद है कि जनता जीत का सहरा हमारे उम्मीदवारों के सर पर बांधेगी। उन्होने आगे कहा कि इस बात का हमें दुख है कि एक तो इन 10 सालों में तीन बार चुनाव हो जाते और जम्मू कश्मीर से जो विशेष राज्य का दर्जा छिना गया। उसका हमें काफी ज्यादा दुख है। मैंने राज्यसभा में अपने भाषण में कहा भी था कि राज्य को दर्जा वापस दिया जाए आज प्रधानमंत्री और गृहमंत्री उसी को लेकर सभाओं में बोल रहे हैं।

इसके अलावा गुलाब नबी आजाद ने इंजीनियर राशिद की बेल को लेकर कहा कि अच्छी बात है कि उनको बेल मिली और अगर कोई भी बेकसूर है उसको भी सरकार की तरफ से बेल देनी चाहिए। जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद पर काफी काम सरकार ने किया है लेकिन कुछ समय पहले से आतंकवाद जरूर बढ़ा है। गुलाम नबी आजाद ने कहा कि जम्मू कश्मीर में हमारा मकसद लोगों की खिदमत करना है और हमारा एजेंडा है डेवलपमेंट और युवाओं को रोजगार देना।

विदेश में नौकरी दिलाने वालों से सावधान! पंजाब की 25 ट्रैवल एजेंसियों पर एक्शन

अमृतसर, 15 सितंबर (एजेंसियां)। पंजाब पुलिस ने विदेश में नौकरी दिलाने का झांसा देकर युवाओं के साथ ठगी करने वाली कंपनियों पर एक्शन लिया है। पंजाब में कई जगह पर पुलिस ने 25 ट्रैवल एजेंसियों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। जानकारी के मुताबिक, मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के निर्देशों पर ये कार्रवाई की गई है। ये कंपनियां सोशल मीडिया पर अलग अलग विज्ञापन देकर नौजवानों के साथ ठगी करती हैं। सोशल मीडिया के दौर में एक पोस्ट को वायरल होने में वक्त नहीं लगता है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म खासकर इंस्टाग्राम और फेसबुक पर दिन में कई नौकरियों के विज्ञापन सामेन आते हैं। पंजाब में ऐसे ही विज्ञापन देने वाली कंपनियों के खिलाफ एक्शन लिया गया है। ये कंपनियां अपने विज्ञापन में विदेशों में नौकरी दिलाने का झांसा देती हैं। इनके झांसे में अक्सर ऐसे नौजवान आते हैं जो रोजगार की तलाश में होते हैं। पुलिस ने ये एक्शन अमृतसर, जालंधर, होशियारपुर, लुधियाना, पटियाला, संगरूर समेत कई इलाकों में किया है।

आरजी कर मामले में पुलिसकर्मी की गिरफ्तारी के बाद प्रदर्शन

सीबीआई कार्यालय के बाहर पहुंचे आंदोलनकारी

कोलकाता, 15 सितंबर (एजेंसियां)। पश्चिम बंगाल के कोलकाता में रविवार सुबह कई लोगों ने सीजीओ कॉम्प्लेक्स स्थित केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) के कार्यालय के बाहर प्रदर्शन किया। यह प्रदर्शन उस समय हुआ जब सीबीआई के अधिकारी ताला थाना प्रभारी अभिजीत मंडल को नियमित मेडिकल परीक्षण के लिए ले जा रहे थे। ताला थाने के प्रभारी अभिजीत मंडल को आरजी कर अस्पताल में महिला चिकित्सक के साथ दुष्कर्म और हत्या के मामले में गिरफ्तार किया गया है।

मंडल को सीबीआई ने कोर्ट में किया पेश

आंदोलनकारी सीजीओ कॉम्प्लेक्स के बाहर एकत्र हुए। उनके हाथों में तख्तियां और पोस्टर थे। प्रदर्शनकारियों ने महिला चिकित्सक के लिए न्याय की मांग करते हुए नारे लगाए तथा सीबीआई द्वारा मामले को अपने हाथ में लिए जाने से पहले पुलिस द्वारा की गई जांच की आलोचना की। आरजी कर अस्पताल की घटना के मामले में सीबीआई द्वारा की जा रही जांच के सिलसिले में शनिवार शाम गिरफ्तार किए गए मंडल को रविवार को सियालदह अदालत में पेश किया गया। सीबीआई के अधिकारी मंडल के साथ सीजीओ कॉम्प्लेक्स से बाहर निकलते समय प्रदर्शनकारियों को पीछे करते दिखे। अधिकारियों ने बताया कि मंडल को सबूतों से छेड़छाड़, प्राथमिकी दर्ज करने में देरी समेत अन्य आरोपों के तहत गिरफ्तार किया गया है। बता दें, सीबीआई ने शनिवार शाम को पूर्व प्रिंसिपल संदीप घोष और ताला थाने के प्रभारी अभिजीत मंडल को गिरफ्तार किया था। इसके बाद स्वास्थ्य भवन में विरोध प्रदर्शन कर रहे जूनियर डॉक्टरों ने गिरफ्तारी का जश्न मनाया और विरोध स्थल पर गाना गाते हुए दिखाई दिए थे।

जानवरों को चराने गए शख्स पर बाघ ने किया अटैक दोपहर में मिला शव

मुंबई, 15 सितंबर (एजेंसियां)। महाराष्ट्र के गोंदिया जिले के जामडी वन क्षेत्र में बाघ के हमले में एक व्यक्ति की मौत हो गई। एक अधिकारी ने शनिवार को यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि कलपाथरी निवासी बसंतराव धोरे (44) शुक्रवार को अपने जानवरों को चराने के लिए ले गए थे, लेकिन घर नहीं लौटे, जिसके बाद ग्रामीणों ने उनकी तलाश शुरू की। मानद वन्यजीव वार्डन सावन बहेकर ने बताया, धोरे का आधा खाया हुआ शव दोपहर में 'एफडीसीएम रिजर्व फॉरेस्ट' में मिला। उसकी गर्दन पर बाघ के दांतों के निशान थे। कुछ दिन पहले ही उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी से बाघ के हमले से जुड़ी खबर सामने आई थी। दक्षिण खीरी वन प्रभाग के महेशपुर रेंज में बुधवार को एक बाघ के हमले में 40 वर्षीय व्यक्ति की मौत हो गई थी। वहां बीते 15 दिन में बाघ के हमले में मौत की दूसरी घटना घटी थी। बाघ ने मूड़ा अस्सी गांव के निवासी जाकिर पर उस समय हमला किया जब वह अपने गन्ने के खेत में काम कर रहा था।

महाराष्ट्र में चुनाव से पहले पोस्टर वार

अजित पवार की सीएम पद की दावेदारी आई सामने

मुंबई, 15 सितंबर (एजेंसियां)। महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव नजदीक आने के साथ ही राजनीतिक हलचल तेज हो गई हैं। सभी प्रमुख दल विधानसभा चुनावों की तैयारी कर रहे हैं। इसी साल के नवंबर और दिसंबर के बीच होने वाले इन चुनावों में सभी पार्टियां रैलियों के माध्यम से जनता से सक्रिय रूप से जुड़ती नजर आई हैं। इस बीच महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित पवार को संभावित भावी मुख्यमंत्री के रूप में पेश करने वाले पोस्टर सामने आए हैं। महाराष्ट्र के बारामती में अजित पवार को भावी मुख्यमंत्री के रूप में दर्शाने वाले पोस्टर सामने आए हैं। अखिल भारतीय तनुलवाड़ी वेस सार्वजनिक गणेश मंडल पंडाल में ऐसे पोस्टर लगाए गए हैं। यह पहली बार नहीं है। जब इस तरह के पोस्टर सामने आए हैं। एनसीपी कार्यकर्ताओं ने इससे पहले भी इसी तरह के पोस्टर लगाए हैं। ये घटनाक्रम महायुति गठबंधन के भीतर सीएम पद को लेकर चल रही चर्चाओं के बीच सामने आए हैं। भाजपा और

शिंदे की शिवसेना और पवार की एनसीपी से मिलकर बने महायुति गठबंधन में नेतृत्व की भूमिका को लेकर अंदरूनी कलह चल रहा है। हाल ही में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने इन मुद्दों को सुलझाने के लिए महाराष्ट्र का दौरा किया। उन्होंने अपने दौरे के दौरान मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस से मुलाकात की। अपने दौरे के दौरान जेपी नड्डा ने दक्षिण मुंबई स्थित अपने आधिकारिक आवास पर गणेश पूजा में हिस्सा लिया। इसके बाद वे एक और पूजा सत्र के लिए देवेंद्र फडणवीस के आधिकारिक आवास पर गए। इन धार्मिक अनुष्ठानों के बाद नड्डा ने पार्टी नेताओं के साथ बैठक की। जिसमें उन्होंने गठबंधन के भीतर एकता पर जोर दिया और उनसे मिलकर काम करने का आग्रह किया। पिछले हफ्ते केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह भी उच्चस्तरीय चर्चा के लिए मुंबई आए थे। शाह ने चुनावी रणनीतियों और गठबंधन की गतिशीलता पर चर्चा करने के लिए एकनाथ शिंदे, देवेंद्र फडणवीस और अजित पवार से मुलाकात की। ये बैठकें चुनावों से पहले सत्तारूढ़ गठबंधन के भीतर सामंजस्य बनाने के लिए चल रहे प्रयासों का हिस्सा हैं। आपको बता दें कि महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव नवंबर या दिसंबर में होने की उम्मीद है। जिससे इन राजनीतिक चर्चाओं में तेजी आ गई है। जैसे-जैसे पार्टियाँ अपनी तैयारियाँ और सार्वजनिक कार्यक्रम रखती हैं। वैसे-वैसे गठबंधनों के भीतर एकता बनाए रखने और अंतरकलह को दूर करने पर फोकस किया जाता है।

THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

मेरा हैदराबाद

युविचार

शिक्षा बुढ़ापे के लिए सबसे अच्छा प्रावधान है।

बीसी जाति की जनगणना पूरी करके स्थानीय निकाय चुनाव कराएंगे : रेवंत रेड्डी

नए टीपीसीसी अध्यक्ष के शपथ ग्रहण समारोह में भाग लिया

हैदराबाद, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। मुख्यमंत्री श्री ए रेवंत रेड्डी ने आज (रविवार) गांधी भवन में नए टीपीसीसी अध्यक्ष महेश कुमार गौड़ के शपथ ग्रहण समारोह में भाग लिया। इस मौके पर सीएम रेवंत रेड्डी ने कहा कि हम सभी के लिए यह खुशी का क्षण है कि पार्टी के वरिष्ठ नेता महेश कुमार गौड़ ने तेलंगाना कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में पदभार ग्रहण किया। कई राजनीतिक चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, एआईसीसी की वरिष्ठ नेता सोनिया गांधी ने तेलंगाना राज्य के गठन का वादा पूरा किया।कांग्रेस आलाकमान ने मुझे 27 जून, 2021 को टीपीसीसी अध्यक्ष नियुक्त किया। 7 जुलाई को राज्य कांग्रेस प्रमुख के रूप में कार्यभार संभालने के बाद से, मैं पार्टी के सभी नेताओं के सहयोग और समन्वय के साथ आगे बढ़ा। इंद्रवेली में विजय का बिगुल बजाया और तेलंगाना राज्य में कांग्रेस को सत्ता में लाया। राहुल गांधी ने 2 लाख रुपये तक के कृषि ऋण माफ करने का आश्वासन दिया और राज्य सरकार ने उसे पूरा किया। 23 लाख किसानों के बैंक खातों में 18,000 करोड़ रुपये जमा किए और किसानों के जीवन में खुशियाँ लाईं। सरकार सोनिया गांधी द्वारा घोषित छह गारंटियों को भी चरणबद्ध तरीके से लागू कर रही है। भट्टी विक्रमार्क और खुद भट्टी विक्रमार्क ने राज्य में बदलाव लाने के नारे के साथ पदयात्रा शुरू की। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी तेलंगाना में लोगों के आशीर्वाद से सत्ता में आई। मेरी सरकार ने सत्ता में आने के 48 घंटे के भीतर पहली दो गारंटियों को लागू किया। अब तक 85 करोड़ महिलाओं ने टीजीएसआरटीसी बस में मुफ्त यात्रा की सुविधा का लाभ उठाया है। गरीब तबके तक चिकित्सा सेवा पहुंचाने के उद्देश्य से राजीव आरोग्यश्री की सीमा बढ़ाकर 10 लाख रुपये कर दी गई है। 200 यूनिट तक मुफ्त बिजली भी दी जा रही है और गरीबों के घरों में रोशनी लाई जा रही है। गरीब महिलाओं को 500 रुपये में घरेलू रसोई गैस सिलेंडर दिया जा रहा है।जैसा कि वादा किया गया था, सरकार ने किसानों की आंखों में खुशी देखने के लिए 15 अगस्त तक 2 लाख रुपये तक के कृषि ऋण माफ कर दिए हैं। बीआरएस नेता हरीश राव ने चुनौती दी कि अगर सरकार 15 अगस्त तक 2 लाख रुपये तक के कृषि ऋण माफ कर दे तो वे विधायक पद से इस्तीफा दे देंगे। बीआरएस नेता क्यों छिप रहे हैं और पद क्यों नहीं छोड़ रहे हैं? सरकार अगले कृषि सत्र से बढ़िया किस्म के धान पर 500 रुपये प्रति क्विंटल बोनस देगी। उन्होंने कहा कि अपनी पदयात्रा के दौरान हमने अभियान चलाया कि बेरोजगारों को नौकरी तभी मिलेगी जब केसीआर और केटीआर को उनके पदों से हटाया जाएगा। सत्ता में आने के बाद 3 महीने के भीतर ही 30,000 नौकरियां दी जा चुकी हैं। नौकरियों की भर्ती का काम चल रहा है। बेरोजगारों के कौशल विकास के लिए यंग इंडिया स्किल यूनिवर्सिटी की स्थापना का श्रेय तेलंगाना सरकार को जाता है। सरकार ओलंपिक पदक लाने के लिए दृढ़ संकल्प है और इस दिशा में कार्रवाई शुरू हो चुकी है। जल्द ही तेलंगाना में एक खेल विश्वविद्यालय की स्थापना की जाएगी। राज्य सरकार 2028 ओलंपिक खेलों में देश की ओर से स्वर्ण पदक जीतने की जिम्मेदारी लेगी। हैदराबाद को एक महानगरीय शहर के रूप में बढ़ावा देने के प्रयास किए जा रहे हैं। मुचेरला में चौथा शहर विकसित किया जाएगा। सरकार और पार्टी को समन्वित तरीके से कल्याणकारी कार्यक्रमों को आगे बढ़ाना चाहिए। तेलंगाना राज्य को देश के लिए आदर्श बनाने के लिए पूर्णकालिक टीपीसीसी अध्यक्ष नियुक्त करने के लिए पार्टी हाईकमान से अनुरोध किया। 2023 के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की जीत सेमीफाइनल थी और फाइनल 2029 में होना है। अंतिम जीत राहुल गांधी की है, क्योंकि भारत के प्रधानमंत्री को नई दिल्ली में लाल किले की प्राचीर से राष्ट्रीय ध्वज फहराना चाहिए। अगले लोकसभा चुनाव में 15 एमपी सीटें जीतना तेलंगाना में फाइनल में कांग्रेस की असली जीत होगी। सभी को कड़ी मेहनत करनी चाहिए और अथक प्रयासों से ही वांछित परिणाम मिलेंगे। कुछ प्रतिद्वंद्वी पार्टी ताकतों ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं और नेताओं पर हमला करने की कोशिश की। अगर प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस पार्टी की सहनशीलता के स्तर की परीक्षा लेते हैं तो हम उन्हें हरा देंगे। महेश कुमार गौड़ को कम मत आंकिए। मैं भी नए टीपीसीसी अध्यक्ष का समर्थन कर रहा हूं। तीन या चार महीने में बीसी जाति की जनगणना पूरी करके स्थानीय निकाय चुनाव कराएंगे। कांग्रेस नेताओं से अपील करते हुए कहा कि स्थानीय निकाय चुनावों में पार्टी कार्यकर्ताओं को जिताने के लिए हमें कड़ी मेहनत करनी चाहिए।

महेश कुमार गौड़ ने टीपीसीसी अध्यक्ष का पदभार संभाला

हैदराबाद, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। महेश कुमार गौड़ ने रविवार को तेलंगाना प्रदेश कांग्रेस कमेटी (टीपीसीसी) के अध्यक्ष का पदभार संभाला। हैदराबाद के गांधी भवन में आयोजित एक समारोह में पूर्व टीपीसीसी अध्यक्ष और मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने उन्हें जिम्मेदारियां सौंपी।कार्यक्रम से पहले, महेश कुमार गौड़ और उनकी पत्नी ने विशेष प्रार्थना में भाग लिया। महेश कुमार गौड़ ने कांग्रेस नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ गन पार्क शहीद स्मारक पर श्रद्धांजलि अर्पित की। वहां से, वे गांधी भवन की ओर एक विशाल रैली में शामिल हुए। रैली में भव्य प्रदर्शन हुए, जिसमें वाहनों का जुलूस, घोड़े की गाड़ियाँ, ऊँट, आदिवासी नृत्य, बोनालु समारोह और शिव सत्तुलु द्वारा प्रस्तुतियाँ शामिल थीं। गांधी भवन में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी, कांग्रेस तेलंगाना प्रभारी दीपादास मुंशी, एआईसीसी सचिव, मंत्री, विधायक और डीसीसी अध्यक्ष शामिल हुए। कुल 350 मेहमानों को आमंत्रित किया गया था, जिनमें से कई लोग सभा में शामिल हुए। इससे पहले, महेश कुमार गौड़ ने शहर में अपने निवास पर टीटीडी वैदिक विद्वानों से आशीर्वाद लिया। महेश कुमार अब चौथे टीपीसीसी अध्यक्ष हैं।

शिल्पकला वेदिका में रिवायत का आयोजन होगा

हैदराबाद, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। उस्ताद पूरन चंद वडाली और लखविंदर वडाली के साथ सूफी और शास्त्रीय संगीत यात्रा की एक शाम रिवायत का आयोजन 21 सितंबर को शिल्पकला वेदिका, माधापुर में शाम 6.30 बजे किया जाएगा। दो दशकों के बाद, प्रसिद्ध वडाली परिवार सूफी और शास्त्रीय संगीत की एक अविस्मरणीय शाम के लिए हैदराबाद लौट आया है।

केंद्र और राज्य सरकारें कर रही है 17 सितंबर के समारोहों की तैयारी

हैदराबाद, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना सरकार 17 सितंबर को तेलंगाना पीपुल्स रूल डे के रूप में मना रही है और इसे मनाने के लिए सभी जिला कलेक्ट्रेट में व्यवस्थाएं की जा रही हैं। राज्य सरकार ने आदेश जारी कर कहा है कि सभी सरकारी कार्यालयों और स्थानीय निकायों में राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाना चाहिए। तेलंगाना सरकार ने जनप्रतिनिधियों के नामों को अंतिम रूप दे दिया है, जो 33 जिलों में ध्वज का अनावरण करेंगे। दूसरी ओर, केंद्र सरकार भी 17 सितंबर को तेलंगाना मुक्ति दिवस के रूप में यहां परेड ग्राउंड में एक आधिकारिक समारोह आयोजित कर रही है। कांग्रेस सरकार ने 17 सितंबर को तेलंगाना जन शासन दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया है। विधानसभा अध्यक्ष और विधान परिषद के अध्यक्ष तथा राज्य के कैबिनेट मंत्री समारोह के हिस्से के रूप में विभिन्न स्थानों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराएंगे। यह याद किया जा सकता है कि 17 सितंबर, 1948 को तत्कालीन हैदराबाद राज्य निजाम के शासन से भारतीय संघ में विलीन हो गया था। कम्युनिस्ट इस दिन को तेलंगाना मुक्ति दिवस, कांग्रेस तेलंगाना विलय दिवस, भाजपा तेलंगाना मुक्ति दिवस तथा मुख्य विपक्षी दल बीआरएस तेलंगाना राष्ट्रीय एकता दिवस और न्यू डेमोक्रेसी पार्टी तेलंगाना विरोधी दिवस के रूप में मनाते हैं। पदभार ग्रहण करने से पहले, टीपीसीसी अध्यक्ष के रूप में सीएम रेवंत रेड्डी ने कहा था कि सत्ता हासिल करने के बाद वे आधिकारिक रूप से हैदराबाद के विलय दिवस का जश्न मनाएंगे और तिरंगा भी फहराएंगे। हालांकि, 'तेलंगाना जन शासन दिवस' मनाने की घोषणा करते हुए एक आदेश जारी किया गया था। मुख्यमंत्री ने कहा कि तेलंगाना सरकार ने राज्य में लोकतांत्रिक शासन के युग की शुरुआत को चिह्नित करने के लिए इसे मनाने का फैसला किया है। मुख्यमंत्री मंगलवार को पब्लिक गार्डन में राष्ट्रीय ध्वज का अनावरण करेंगे और उपस्थित जनसमूह को संबोधित करेंगे।

मेयर ने एलबी नगर मेट्रो स्टेशन पर पॉली हेल्थ क्लिनिक का उद्घाटन किया

हैदराबाद, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। जीएचएमसी मेयर गडवाल विजयलक्ष्मी ने कहा है कि देश में पहली बार हैदराबाद मेट्रो स्टेशनों पर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध हैं। मिट्टा एक्सेलेंस के तत्वावधान में अब एलबी नगर मेट्रो स्टेशन पर पॉली हेल्थ क्लिनिक उपलब्ध है। रविवार को मुख्य अतिथि के तौर पर मेट्रो ट्रेन से यात्रा करने वाली मेयर विजयलक्ष्मी ने एक हेल्थ क्लिनिक का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि मेट्रो यात्रियों के अलावा आसपास के इलाकों के लोग भी चिकित्सा सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। उन्होंने कहा कि पहली बार एलबी नगर मेट्रो स्टेशन पर हेल्थ एटीएम भी उपलब्ध है। मेयर ने कहा कि यह देश में एक रिकॉर्ड है कि मेट्रो स्टेशन पर ब्लड टेस्ट डायग्नोस्टिक सुविधा, मेडिकल शॉप, मेडिकल स्पेशलिस्ट, फिजियोथेरेपी, टेली मेडिसिन, डेंटल केयर जैसी आधुनिक कॉर्पोरेट स्तर की चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध हैं। इब्राहिमपटनम के विधायक मालरेड्डी रंगारेड्डी ने कहा कि यह बहुत अच्छी बात है कि जिन मेट्रो ट्रेनों में लाखों लोग यात्रा करते हैं, उनमें किसी भी बीमारी के लिए मेट्रो स्टेशनों पर तुरंत आपातकालीन क्लीनिक उपलब्ध कराए जाते हैं। मिट्टा एक्सेलेंस के अध्यक्ष डॉ मिट्टा श्रीनिवास रेड्डी ने कहा कि पहला क्लिनिक एलबी नगर में शुरू किया गया है और जल्द ही इसे मियापुर और रायदुर्गम मेट्रो स्टेशनों में उपलब्ध कराया जाएगा। उन्होंने कहा कि इसे देश भर के 100 मेट्रो केंद्रों में स्थापित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गए एनीमिया मुक्त भारत आह्वान के तहत मुफ्त हीमोग्लोबिन परीक्षण करेंगे। उन्होंने यह भी घोषणा की कि दृष्टि जांच और ऑडियोमेट्री जैसे 21 परीक्षण मुफ्त में किए जाएंगे। मिट्टा एक्सेलेंस के निदेशक डॉ निखिल कुमार रेड्डी, डॉ निकिता रेड्डी, वरिष्ठ पत्रकार डॉ मोहम्मद रफी और अन्य ने भाग लिया।

वंदे भारत ट्रेनों को पीएम मोदी दिखाएंगे हरी झंडी

नागपुर-सिकंदराबाद और दुर्ग-विशाखापत्तनम के लिए वंदे भारत

हैदराबाद, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सोमवार को नागपुर-सिकंदराबाद और दुर्ग-विशाखापत्तनम वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनों को हरी झंडी दिखाएंगे। ये विभिन्न राज्यों में चलने वाली सात वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनों में से दो होंगी जिन्हें प्रधानमंत्री अहमदाबाद से वीडियो लिंक के माध्यम से हरी झंडी दिखाएंगे। दक्षिण मध्य रेलवे (एससीआर) के अधिकारियों ने बताया कि सिकंदराबाद रेलवे स्टेशन पर एक औपचारिक समारोह आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम में तेलंगाना के राज्यपाल जिष्णु देव वर्मा, मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी, केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री जी किशन रेड्डी, गृह राज्य मंत्री बंदी संजय कुमार और वरिष्ठ अधिकारी भाग लेंगे।

नागपुर-सिकंदराबाद वंदे भारत एक्सप्रेस 19 सितंबर से नियमित सेवाएं चलाने के लिए तैयार है। एससीआर के अनुसार, ट्रेन नागपुर और सिकंदराबाद के बीच 585 किलोमीटर की दूरी 7 घंटे और 15 मिनट में तय करेगी। इससे महाराष्ट्र और तेलंगाना के विभिन्न शहरों के बीच संपर्क और गति बढ़ेगी। इस ट्रेन में दो एग्जीक्यूटिव क्लास कोच और 18 चेयर कार कोच हैं, जिनकी संयुक्त बैठने की क्षमता 1,440 है। यह ट्रेन नागपुर, बल्हारशाह और अन्य शहरों से सिकंदराबाद पहुंचने के लिए दिन के समय यात्रा की सुविधा प्रदान करती है। ट्रेन संख्या 20101 नागपुर-सिकंदराबाद नागपुर से 5 बजे प्रस्थान करेगी और 12.15 बजे सिकंदराबाद पहुंचेगी। ट्रेन संख्या 20102 सिकंदराबाद-नागपुर वंदे भारत एक्सप्रेस सिकंदराबाद से 13.00 बजे प्रस्थान करेगी और 20.20 बजे नागपुर पहुंचेगी। बीच में यह ट्रेन सेवाग्राम, चंद्रपुर, बल्हारशाह, रामागुंडम और काजीपेट रेलवे स्टेशनों पर दोनों दिशाओं में रुकेगी। सोमवार को प्रधानमंत्री द्वारा हरी झंडी दिखाए जाने वाली वंदे भारत ट्रेनों में दुर्ग-विशाखापत्तनम वंदे भारत भी शामिल है। इससे दोनों शहरों के बीच यात्रा का समय घटकर 8 घंटे रह जाने की संभावना है।

20 सितंबर से शुरू होकर, दुर्ग-विशाखापत्तनम वंदे भारत एक्सप्रेस (ट्रेन संख्या 20829/20830) दोनों ओर से गुरुवार को छोड़कर, सप्ताह में छह दिन चलेगी। इस ट्रेन में 16 कोच होंगे। यह ट्रेन रायपुर, महासमुंद, खारियार रोड, कांटाबांजी, टिटलागढ़, केसिंगा, रायगढ़ा और विजयनगरम में रुकेगी। 20829 दुर्ग-विशाखापट्टनम वंदे भारत दुर्ग से 5.45 बजे रवाना होगी और 13.45 बजे विशाखापट्टनम पहुंचेगी। इसी तरह 20830 विशाखापट्टनम-दुर्ग वंदे भारत विशाखापट्टनम से 14.50 बजे रवाना होगी और 22.50 बजे दुर्ग पहुंचेगी।

महिलाओं को सशक्त बनाने के 40 साल पूरे होने का जश्न मना

हैदराबाद, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। महिला कांग्रेस के 40वें स्थापना दिवस के अवसर पर रविवार को यहां गांधी भवन में महिला कांग्रेस अध्यक्ष सुनीता राव के नेतृत्व में एक भव्य समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम के हिस्से के रूप में, गांधी भवन में महिला कांग्रेस के सदस्यता अभियान का आधिकारिक तौर पर शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर, सुनीता राव ने भारत की लौह महिला, देश की पहली महिला प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने बताया कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की महिला विंग के निर्देशों का पालन करते हुए इंदिरा गांधी के मार्गदर्शन में 40 साल पहले महिला कांग्रेस की स्थापना की गई थी।अपने भाषण में सुनीता राव ने महिला सशक्तिकरण, वित्तीय सहायता और जागरूकता के लिए कांग्रेस पार्टी की दीर्घकालिक प्रतिबद्धता पर जोर दिया। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे पार्टी ने महिलाओं को राजनीति में नेतृत्व के पद देकर लगातार उनका सम्मान किया है, जिससे एक अधिक समान और सशक्त समाज का मार्ग प्रशस्त हुआ है। महिला कांग्रेस के लिए सदस्यता अभियान अब 100 के किफायती पंजीकरण शुल्क के साथ आता है। इसके अतिरिक्त, प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए, उन महिलाओं की सुविधा के लिए एक ऑनलाइन पंजीकरण पोर्टल शुरू किया गया है जो महिला अधिकारों और राजनीतिक सशक्तिकरण के लिए शामिल होना और योगदान देना चाहती हैं।

राज्य के स्कूलों को मिलेगा समर्पित खेल कैलेंडर

हैदराबाद, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। राज्य के स्कूली छात्रों के लिए जल्द ही एक खेल कैलेंडर होगा, जो शैक्षणिक कैलेंडर की तर्ज पर होगा। स्कूली शिक्षा विभाग ने स्कूली स्तर पर खेलों को बढ़ावा देने का फैसला किया है और इसी शैक्षणिक वर्ष से खेल कैलेंडर बनाने का फैसला किया है। हाल ही में हुई राज्य स्कूल गेम्स फेडरेशन की बैठक में यह निर्णय लिया गया है। फेडरेशन को खेल कैलेंडर तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है, जिसमें स्कूलों में होने वाले हर महीने के खेल और खेल प्रतियोगिताओं का ब्यौरा होगा। सभी हाई स्कूलों में छठी से दसवीं कक्षा तक के लिए प्रतिदिन एक खेल पीरियड शुरू किया जाएगा। इसके अलावा जिन सरकारी स्कूलों में खेल का मैदान नहीं है, वहां खेल का मैदान भी बनाया जाएगा।

योजना के तहत मंडल, जिला और राज्य स्तर पर अंडर-14, 17 और 19 प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी तथा राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों का चयन किया जाएगा। वर्तमान में राज्य में 26,000 से अधिक सरकारी स्कूल हैं।

बीजेपी कार्यकर्ताओं को अखिलेश यादव का पुतला फूंकना पड़ा भारी, पुलिस के सामने हो गया गजब कांड

हरदोई, 15 सितंबर (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के हरदोई जिले में भाजपा कार्यकर्ता सपा मुखिया अखिलेश यादव का पुतला जलाने जा रहे थे। मगर सपा मुखिया का पुतला फूंकते समय वह खुद ही झुलस गए। पिछले दिनों सपा मुखिया अखिलेश यादल ने मुख्यमंत्री योगी पर तंस कसते हुए कहा था कि, मठाधीश और माफिया में कोई अंतर नहीं होता। अखिलेश के इस बयान को लेकर भाजपा उनका विरोध कर रही है। इसी को लेकर भारतीय जनता युवा मोर्चा के कार्यकर्ता अखिलेश यादव का पुतला जला रहे थे। उसी समय पुलिस वहां आ गई। भाजपा कार्यकर्ताओं और पुलिस के बीच पुतला फूंकते समय छीना-झपटी हुई। इस दौरान भाजपा कार्यकर्ताओं के हाथ में पुतले का कुछ हिस्सा रह गया, जिसे उन्होंने पेट्रोल डालकर जलाना चाहा। इसी दौरान उसमे तेज आग लग गई। इसकी चपेट में भाजपा कार्यकर्ता आ गए और झुलस गए।

शहर के सिनेमा चौराहे पर भाजपा युवा मोर्चा के कार्यकर्ता अखिलेश यादव का पुतला लेकर पहुंचे। इस दौरान सपा और अखिलेश यादव को लेकर जमकर नारेबाजी की गई। मौके पर पुलिस भी मौजूद थी। तभी अखिलेश यादव का पुतला फूंकने की कोशिश भाजपा कार्यकर्ता करने लगे। इसी बीच पुलिस और भाजपा कार्यकर्ताओं के बीच पुतले की खींचतान शुरू हो गई और पुलता टूट गया। तभी भाजपा कार्यकर्ता बचे हुए पुतले को ही जलाने की कोशिश करने लगे और तेज आग लगने से झुलस गए।

केंद्रीय मंत्री से बीजेपी सांसद रमेश अवस्थी ने की मुलाकात

कहा- 'फिर से शुरू होगी लाल इमली मिल'

कानपुर, 15 सितंबर (एजेंसियां)। कानपुर में यूपी के सीएम योगी ने सीसामऊ विधान सभा क्षेत्र में स्थापित बंद पड़ी लाल इमली मिल जोकि कानपुर की पहचान थी। जिसे दोबारा से चलाने का वादा किया था। अब बीजेपी सीएम के इस वादे को पूरा करने के लिए कवायत करती भी दिख रही है। उपचुनाव से पहले इस मिल को शुरू करने की खुशखबरी शायद कानपुर वालों को जल्द मिल जाए। कानपुर से बीजेपी सांसद रमेश अवस्थी ने केंद्रीय कपड़ा मंत्री से मुलाकात कर इस बात की उम्मीद जताई कि सीएम के वादे को केंद्रीय नेतृत्व की ओर से जल्द मंजूरी मिल सकती है। कानपुर के जीआईसी ग्राउंड में कुछ दिन पहले यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ ने जनसभा की थी। उपचुनाव को लेकर भी तैयारियां और जनता से बीजेपी को जिताने की अपील की थी इसी अपील के बीच सीएम ने चुनावी दांव भी लगाया था। कानपुर की बरसों से बंद पड़ी कानपुर शान और मिल उद्योग के लिए जानी जाने वाली लाल इमली मिल को एक बार फिर से शुरू करने का विश्वास जताया था। जिसको लेकर कानपुर से बीजेपी के सांसद रमेश अवस्थी ने केंद्रीय कपड़ा मंत्री गिरिराज से दिल्ली में मुलाकात की और कानपुर की लाल इमली मिल को चलाने की चर्चा की

इस सीट पर लंबे समय से सपा का कब्जा रहा

कानपुर में सीसामऊ सीट पर वैसे तो लंबे समय से सपा का कब्जा रहा है और इस सीट पर बीजेपी अपना कब्जा करना चाहती है। जिसको लेकर कवायद तेज है और उपचुनाव की तारीखों के ऐलान से पहले वो यहां सपा और बीजेपी के बीच जीत और हार के अंतर को मिटा कर जीत हासिल करना चाहती है। ये अंतर महज ,12 हजार वोटों का रहा है। जिससे सपा के विधायक इरफान सोलंकी बीजेपी से जीत कर इस सीट पर विधायक बने थे। दरअसल इस सीट पर 40 प्रतिशत मुस्लिम मतदाता है जो सपा के लिए एक बड़ा विनर फैक्टर साबित होता है।

बिहार बीजेपी के नेता का बड़ा बयान, सीएम अरविंद केजरीवाल के इस्तीफे का कारण बताया

पटना, 15 सितंबर (एजेंसियां)। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने रविवार को ऐलान किया कि वह अगले दो दिन में सीएम के पद से इस्तीफा दे देंगे। अरविंद केजरीवाल ने आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए यह ऐलान किया है। अब केजरीवाल के इस इस्तीफे के ऐलान पर बीजेपी ने हमला करना शुरू कर दिया है। इसी कड़ी में बिहार बीजेपी के प्रवक्ता राकेश सिंह ने बड़ा बयान देते हुए निशाना साधा है। साथ ही तंज कसते हुए कारण भी बताया है। राकेश सिंह ने कहा, अरविंद केजरीवाल में नैतिकता होती तो वे बहुत पहले रिजाइन कर दिए होते। हमको लगता है विश्व भर में कोई पहला मुख्यमंत्री ऐसा होगा जो जेल में बैठे हुए भी पद पर बना रहा। दूसरी बात राजनीति में कुछ शुचिता बची रहे, राजनीति में कुछ मान मर्यादा बची रहे, इसलिए उन्हें पहले इस्तीफा दे देना चाहिए था। वो तो जेल से बाहर आने के बाद अब इस्तीफे की बात कर रहे हैं क्योंकि उनको शर्म आ रही होगी कि जनता से कैसे आंख मिलाएं? जनता के बीच कैसे जाएं? अब उनको लग रहा होगा कि इस्तीफा दे देंगे तो जनता के बीच जा सकते हैं इसलिए उन्होंने इस तरह का फैसला लिया है। उधर आरजेडी ने अरविंद केजरीवाल के इस फैसले को साहसिक बताया है। केजरीवाल के इस्तीफे के ऐलान पर आरजेडी के प्रवक्ता मृत्युंजय तिवारी ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि उन्होंने (अरविंद केजरीवाल) अपने फैसले से बीजेपी को आईना दिखाते हुए चुनाव में जाने की बात कही है।

किशनगंज में डीएमयू ट्रेन के इंजन में लगी आग, यात्रियों ने कूदकर बचाई जान

किशनगंज, 15 सितंबर (एजेंसियां)। किशनगंज में रविवार को एक ट्रेन के इंजन में अचानक आग लग गई। तेघरिया रेल फाटक के निकट आग लगी। डीएमयू ट्रेन में लगी आग से अफरातफरी मच गई। यात्री ट्रेन से कूदने लगे जिससे मौके पर लोगों की काफी भीड़ जुट गई। आग बुझाने की कोशिश में रेल कर्मी जुट गए। आग लगने की सूचना रेल कर्मी ने स्थानीय पुलिस और अग्निशमन विभाग को दी। वहीं, मिली जानकारी के अनुसार जान-माल की क्षति होने की सूचना नहीं है। बता दें कि यह ट्रेन किशनगंज से सिलीगुड़ी जा रही थी। किशनगंज में डीएमयू ट्रेन में आग लग गई। आग लगने से रेल यात्री परेशान हो गए। ट्रेन करीब दोपहर 12 बजकर 10 मिनट पर किशनगंज स्टेशन से खुली थी। शहर के तेघरिया रेल फाटक के निकट इस ट्रेन के इंजन में आग लग गई। ट्रेन में यात्री भरी हुई थी। इंजन के ऊपर धुआं उठता देखकर लोको पायलट ने अचानक ब्रेक लगा दिया। आग लगने की सूचना जैसे ही रेल प्रशासन को मिली मौके पर रेल कर्मी पहुंच कर आग बुझाने की कोशिशों में जुट गए।

इस रूट में ट्रेनों का परिचालन पूरी तरह ठप

आग लगने के कारणों का फिलहाल पता नहीं चल पाया है। ट्रेन किशनगंज से सिलीगुड़ी जा रही थी तभी इंजन से धुआं उठता देख इसकी सूचना यात्रियों ने रेल अधिकारी को दी। हालांकि इस आगलगी की घटना में अभी तक जान माल के नुकसान की कोई खबर नहीं है। एसएसबी के जवान भी आग बुझाने की कोशिश में जुट गए। किशनगंज गौहाटी अप लाइन पर फिलहाल ट्रेनों का परिचालन पूरी तरह रुक गया है। इससे इस रूट के पैसेंजरों की परेशानी बढ़ गई है।

यूपी के इस आईपीएस ने एक माह में निपटवा डाले बरेली जोन में रेप और पाक्सो एक्ट के 221 मुकदमे

बरेली, 15 सितंबर (एजेंसियां)। मुख्यमंत्री के निर्देश पर महिला और बाल अपराधों को लेकर एडीजी जोन रमित शर्मा के आदेश पर एक माह तक पुलिस ने यौन आरोपियों के खिलाफ मुकदमों के निस्तारण का अभियान चलाया। एडीजी जोन ने महिला संबंधी अपराधों में प्राथमिकता के आधार पर विवेचना कर मुकदमों के निस्तारण के निर्देश दिये थे। महिलाओं और बच्चियों के साथ होने वाले यौन अपराधों में आरोपियों पर त्वरित कार्रवाई के उद्देश्य से एडीजी जोन रमित शर्मा के आदेश पर जोन भर में मुकदमों के निस्तारण को लेकर अभियान चलाया गया। बरेली जोन में एक माह पहले 257 रेप और पाक्सो एक्ट के मुकदमे थे।

बिहार के डिप्टी सीएम विजय सिन्हा बोले

'राहुल गांधी और तेजस्वी यादव सोने का चम्मच लेकर पैदा हुए'

वाराणसी, 15 सितंबर (एजेंसियां)। बिहार के डिप्टी सीएम विजय सिन्हा वाराणसी दौरे पर रहे। इस दौरान उन्होंने मीडिया से बातचीत की। विजय सिन्हा ने कहा कि एकादशी के दिन बाबा विश्वनाथ की नगरी काशी में हम सभी पूजा करने आए हैं। यहां की ऊर्जा पूरे देश को ऊर्जावान बनाती है। इस पवित्र नगरी आना किसी के लिए भी सौभाग्य की बात है। मानवता के प्रति समर्पण भाव, मानवता की रक्षा जैसी बातों की प्रेरणा हमें काशी की धरती से मिलती है।

बिहार के डिप्टी सीएम विजय सिन्हा ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी और राजद के तेजस्वी यादव पर जमकर जुबानी हमला बोला। मीडिया से बातचीत में बिहार के डिप्टी सीएम ने कहा कि राहुल गांधी और तेजस्वी यादव दोनों सोने का चम्मच लेकर पैदा हुए हैं। एक आरजेडी के जंगलराज के युवराज है, तो दूसरा भ्रष्टाचार के युवराज है और दोनों का चरित्र एक समान है। यह अय्याश लोग हैं। यह चार्टर्ड प्लेन पर बर्थडे मनाने वाले लोग हैं। इनके पिता जानवरों के चारा तक छीन लिए और जनता को इन्होंने लूटा।

सबका साथ सबका विकास होगा

लालू यादव ने तेजस्वी यादव को पढाने का प्रयास किया, लेकिन वह नौवीं कक्षा भी पास न कर सके। खिलाड़ी बनने चले थे वहां पर भी असफल हो गए, राजनीति में भी किस्मत आजमाया लेकिन सभी जगह वह नाकाम रहे। यह लोग अब हर क्षेत्र में असफल व्यक्ति हैं। इन लोगों पर जनता विश्वास नहीं करती। इसके अलावा वक्फ संशोधन विधेयक पर भी उन्होंने कहा कि जब तक देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी हैं किसी को डरने की जरूरत नहीं है। सबका साथ सबका विकास होगा। सांस्कृतिक विरासत का सम्मान होगा। अंतिम पंक्ति पर बैठे हुए व्यक्ति का भी कल्याण होगा।

विजय सिन्हा ने बिहार के जाति जनगणना के आधार पर देश में भी जाति जनगणना होनी चाहिए। इन सवालों का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि अलग-अलग राज्य के अपनी-अपनी विचारधारा हैं और उनकी अपनी-अपनी नीतियां हैं। भारतीय जनता पार्टी को इसमें कोई आपत्ति नहीं है बल्कि भारतीय जनता पार्टी ने तो इसमें सहयोग किया था। लेकिन जो लोग जाति जनगणना के नाम पर समाज को लड़ाना चाहते हैं वह कभी भी गरीबों के हितैषी नहीं हो सकते।

32 साल के इंस्पेक्टर की बस में सोते-सोते मौत

खबर सुनकर पत्नी बेहोश; लखनऊ से प्रयागराज आ रहे थे

प्रयागराज, 15 सितंबर (एजेंसियां)। प्रयागराज में 32 साल के इंस्पेक्टर की चलती बस में मौत हो गई। वह लखनऊ से प्रयागराज जा रहे थे। घटना का पता उस वक्त चला, जब बस प्रयागराज पहुंची। मगर वह बस से नहीं उतरे। कंडक्टर जगाने आया तो उनका शरीर बेजान था। कंडक्टर ने हिलाया तो वह गिर गए। तुरंत सीनियर अफसरों और पुलिस को सूचना दी। आनन-फानन में उनको एसआरएन हॉस्पिटल ले जाया गया। वहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। परिवार में पत्नी, 10 और 8 साल के दो बेटे हैं। पत्नी मौत की खबर सुनते ही बेहोश हो गई। वह

मूलरूप से सहारनपुर के रहने वाले थे। 2013 बैच के अनुराग शर्मा अभी लखनऊ कोर्ट की सुरक्षा में तैनात थे। अनुराग प्रयागराज क्राइम ब्रांच के साथ-साथ करेली और खुल्दाबाद थानों के प्रभारी भी रहे थे। हाल ही में उनका ट्रांसफर लखनऊ हुआ था। ऐसे में परिवार अभी प्रयागराज के खुल्दाबाद में रहता है। रविवार को छुट्टी थी। इस वजह से प्रयागराज आ रहे थे। अनुराग शनिवार देर शाम को लखनऊ से मिर्जापुर जाने वाली बस में बैठे थे। प्रयागराज का टिकट लिया। थोड़ी देर बाद सो गए। रात ढाई बजे बस प्रयागराज पहुंची। उन्हें जीरो रोड बस स्टैंड पर उतरना था, लेकिन नहीं उतरे। इसके बाद कंडक्टर उनके पास आया तो घटना का पता चला। पुलिस ने बताया कि चूंकि वह सादे कपड़ों में थे, इसलिए उनकी तुरंत पहचान नहीं हो पाई। उनकी जेब से मोबाइल और आईडी मिली। इसके बाद उनकी शिनाख्त हुई।

होटल में छापेमारी, दो लड़के-लड़कियां सहित संचालक हिरासत में

अररिया, 15 सितंबर (एजेंसियां)। फारबिसगंज एसडीपीओ मुकेश कुमार साहा के नेतृत्व में थानाध्यक्ष राघवेन्द्र कुमार सिंह और कनीय पुलिस पदाधिकारियों ने गुप्त सूचना के आधार पर सदर रोड स्थित एक होटल में छापेमारी किया। होटल के दो अलग अलग कमरे से दो युवती और दो युवक को हिरासत में लिया है। होटल के संचालक सह मैनेजर को भी पुलिस ने हिरासत में लिया है। पुलिस सूत्रों के अनुसार होटल के दो अलग अलग कमरे से जिस दो युवकों को पुलिस ने हिरासत में लिया है। उसमें से एक युवक नरपतगंज प्रखंड क्षेत्र का है और दूसरा युवक खुटोना जिला मधुबनी का निवासी बताया जा रहा है। जबकि होटल से पकड़ी गई दोनों लड़कियों में एक अररिया की और एक नरपतगंज क्षेत्र की बताई जा रही है। सभी लोगों से पुलिस फारबिसगंज थाना में पूछताछ कर रही है। छापेमारी अभियान में एसडीपीओ मुकेश कुमार साहा और थानाध्यक्ष के अलावे अनि रौनक सिंह, शिल्पी कुमारी, सोनी कुमारी, उपेंद्र शर्मा और पुलिस बल शामिल थी। एसडीपीओ मुकेश कुमार साहा ने कहा कि सभी से पूछताछ की जा रही है। पूछताछ और जांच के बाद ही कुछ कहा जा सकता है।

उपचुनाव में सपा की खास रणनीति। मंगेश के बहाने पीडीए को गोलबंद करेगी पार्टी, अखिलेश यादव का है ये प्लान

लखनऊ, 15 सितंबर (एजेंसियां)। समाजवादी पार्टी सुल्तानपुर डकैती मामले में पुलिस मुठभेड़ में मारे गए मंगेश यादव के बहाने पीडीए को गोलबंद करेगी। विधानसभा उपचुनाव के मद्देनजर इसे पार्टी की खास रणनीति माना जा रहा है। सपा एनकाउंटर में मारे गए आरोपियों के जातिगत आंकड़े भी गांव-गांव पहुंचाएगी। मंगेश यादव एनकाउंटर पर सपा लगातार सवाल उठा रही है। विधान परिषद में नेता प्रतिपक्ष लाल बिहारी यादव मंगेश यादव के परिजनों से मिलने जौनपुर गए थे। वहीं, शुक्रवार को सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने भी उनके परिजनों से लखनऊ में मिलकर संदेश देने का काम किया कि इस मामले को अंजाम तक पहुंचाएंगे।

इसके साथ ही अखिलेश ने एनकाउंटर में मारे गए आरोपियों के आकड़े भी रखे हैं। सपा अध्यक्षा कहना कहना है कि ये फर्जी एनकाउंटर हैं। इनमें मारे गए 60 फीसदी लोग पिछड़े, अल्पसंख्यक और दलित हैं, जबकि 19 फीसदी में अन्य जातियों के लोग हैं। 21 प्रतिशत का डाटा उपलब्ध नहीं है। सपा सूत्रों का कहना है कि संविधान और आरक्षण के मुद्दों के साथ ही एनकाउंटरों के मुद्दे पर भी सपा आक्रामक ढंग से प्रचार करेगी। इसके लिए सभी जिला व महानगर कमेटियों को निर्देश दे दिए गए हैं। जिले व क्षेत्रवार कार्यकर्ताओं के साथ संगठन की समीक्षा में भी इस पर जोर दिया जा रहा है।

इससे पहले, सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा था कि यूपी पुलिस फर्जी एनकाउंटर कर रही है। मंगेश यादव को घर से उठाकर मारा गया था। मैं सच्चाई जानने के लिए उनके परिवार से मिला था। उन्होंने आरोप लगाया कि यूपी पुलिस साजिश करने और एनकाउंटर करने का काम कर रही है।

अम्बेडकरनगर में गणेश प्रतिमा का विसर्जन कर लौट रहे लोगों पर हमला

ग्रामीणों ने थाने पर किया हंगामा

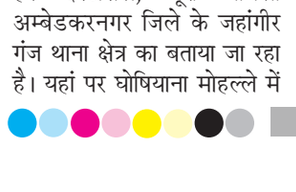

अम्बेडकरनगर, 15 सितंबर (एजेंसियां)। जिले में गणेश प्रतिमा का विर्सजन कर लौट रहे लोगों से विवाद का मामला सामने आया है। बताया जा रहा है कि सामने से आ रही पिकअप को रास्ता देने को लेकर विवाद हुआ। इसके बाद समुदाय विशेष के लोगों ने गणेश प्रतिमा का विसर्जन करके लौट रहे लोगों पर हमला कर दिया। घटना के बाद ग्रामीणों ने थाने पहुंचकर हंगामा किया। वहीं हंगामें के बाद पुलिस ने बवाल और मारपीट करने वालों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। पुलिस ने SC/ST, लूट और छेड़खानी समेत गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है। इसके अलावा मुख्य आरोपी जिल्ले हसन को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। दरअसल, पूरा मामला अम्बेडकरनगर जिले के जहांगीर गंज थाना क्षेत्र का बताया जा रहा है। यहां पर घोषियाना मोहल्ले में रास्ता देने को लेकर विवाद शुरू हुआ। मिली जानकारी के अनुसार क्षेत्र में गणेश प्रतिमा का विसर्जन कर लौट रहे लोगों का पिकअप वाहन से रास्ते पर पास लेने को लेकर विवाद हो गया। इसके बाद विशेष समुदाय के लोगों ने गणेश प्रतिमा विसर्जन कर लौट रहे लोगों पर हमला कर दिया। घटना के बाद थाने पर पहुंच कर ग्रामीणों ने हंगामा करना शुरू कर दिया। ग्रामीणों ने दारोगा पर लापरवाही बरतने का आरोप लगाया और घंटों तक हंगामा किया।

घटना की सूचना मिलते ही पुलिस के उच्च अधिकारियों सहित कई थानों की पुलिस मौके पर पहुंच गई। इसके बाद थाने पर पहुंची भीड़ को पुलिस ने बड़ी मुश्किल से समझा बुझाकर शांत किया। इसके बाद तहरीर लेकर बवाल और मारपीट करने वालों के खिलाफ एसी/एसटी, लूट और छेड़खानी सहित कई गम्भीर धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया। पुलिस ने मुख्य आरोपी जिल्ले हसन को गिरफ्तार कर लिया है। अपर पुलिस अधीक्षक पूर्वी ने बताया कि मामले में मुकदमा दर्ज कर एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है। अन्य की गिरफ्तारी के लिए दबिश दी जा रही है।

टूरिस्ट हब बना उत्तर प्रदेश

सिर्फ 6 माह में घूमने के लिए आए 33 करोड़ लोग, पर्यटन विभाग ने जारी किया आंकड़ा

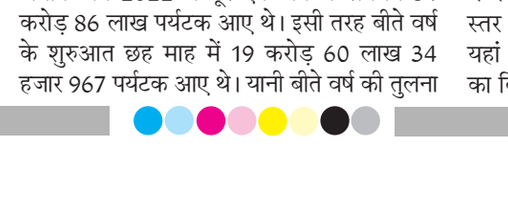

आगरा, 15 सितंबर (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश पर्यटन के क्षेत्र में फिर नया कीर्तिमान रचने के लिए तैयार है। मौजूदा वर्ष के बीते छह माह में लगभग 33 करोड़ पर्यटकों ने यहां का रुख किया। अयोध्या ने काशी को भी पीछे छोड़ दिया। यहां छह माह में लगभग 11 करोड़ लोग घूमने के लिए पहुंचे। साल 2022 में प्रदेश में जितने पर्यटक आए थे, उससे एक करोड़ से भी अधिक इस वर्ष के शुरुआती 6 महीने में यहां पहुंचे। इसी तरह, साल 2023 के शुरुआती 6 महीने में आए पर्यटकों की संख्या से 13 करोड़ से भी अधिक है।

यह जानकारी प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्री जयवीर सिंह ने दी। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में हाल के वर्षों में पर्यटन बहुत तेजी से बढ़ा है। इस वर्ष अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में रामलला के विराजमान होने के बाद पर्यटकों का आगमन तेजी से बढ़ा है। इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि छह माह में कुल 32 करोड़ 98 लाख 18 हजार 122 पर्यटक यूपी में भ्रमण के लिए आए, जबकि वर्ष 2022 में पूरे एक वर्ष में लगभग 31 करोड़ 86 लाख पर्यटक आए थे। इसी तरह बीते वर्ष के शुरुआत छह माह में 19 करोड़ 60 लाख 34 हजार 967 पर्यटक आए थे। यानी बीते वर्ष की तुलना में इस साल 13 करोड़ 37 लाख 83 हजार 155 पर्यटक अधिक आए थे। इस वर्ष उत्तर प्रदेश आने वाले कुल पर्यटकों में 32 करोड़ 87 लाख 81 हजार 348 घरेलू, जबकि 10 लाख 36 हजार 774 विदेश से आए पर्यटक हैं।

बनारस से ज्यादा लोग अयोध्या घूमने पहुंचे

जयवीर सिंह ने बताया कि प्रदेश में सबसे ज्यादा पर्यटक अयोध्या पहुंचे हैं। जहां छह माह में 10 करोड़ 99 लाख 69 हजार 702 घरेलू पर्यटक, 2851 विदेशी पर्यटक यानि कुल 10 करोड़ 99 लाख 72 हजार 553 पर्यटक आए थे। वाराणसी में 4 करोड़ 59 लाख 82 हजार 313 घरेलू और 1 लाख 33 हजार 999 विदेशी यानी कुल 4 करोड़ 61 लाख 16 हजार 312 पर्यटक घूमने आए। प्रयागराज में 4 करोड़ 53 लाख 94 हजार 772 घरेलू और 3668 विदेशी यानी कुल मिलाकर यहां 4 करोड़ 53 लाख 98 हजार 440 पर्यटक घूमने आए। मथुरा में 3 करोड़ 07 लाख 02 हजार 513 घरेलू, 49 हजार 619 विदेशी, कुल 3 करोड़ 07 लाख 52 हजार 132 पर्यटक आए।

लखनऊ में 3 करोड़ 50 लाख 6 हजार 981 घरेलू, 7108 विदेशी, कुल 3 करोड़ 51 लाख 4 हजार 089 पर्यटक आए। आगरा में 69 लाख 84 हजार 352 घरेलू और 7 लाख 03 हजार 860 विदेशी अर्थात कुल 76 लाख 88 हजार 212 पर्यटक आए। पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने कहा कि, उत्तर प्रदेश पर्यटन के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रहा है। यहां निरंतर पर्यटन स्थलों और पर्यटक सुविधाओं का विकास किया जा रहा है।

1 महीने पहले गांव से लापता, हैवान ने किया 'कैद', भूखा रखकर करता था दरिंदगी; कैसे चंगुल से छूटी लड़की?

गाजियाबाद, 15 सितंबर (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जिले के मोदीनगर थाना क्षेत्र के एक गांव से नाबालिग का अपहरण और रेप करने का मामला सामने आया है। आरोपी ने नाबालिग लड़की का अपहरण कर उसे बंधक बना कर रखा। पुलिस ने आरोपी युवक को गिरफ्तार कर लिया है। वहीं पुलिस ने 15 वर्षीय नाबालिग लड़की को आरोपी के चंगुल से छुड़ा लिया है। पीड़िता ने बताया कि आरोपी ने उसके साथ रेप की घटना को अंजाम दिया।

मना करने पर मारपीट करता था। आरोपी को गिरफ्तार करने के बाद पुलिस मामले की जांच कर रही है। मिली जानकारी के मुताबिक मोदीनगर के एक गांव में रहने वाली 15 वर्षीय नाबालिग लड़की 19 अगस्त को अचानक गांव से लापता हो गई। लड़की के घर वालों ने काफी ढूंढा लेकिन वह नहीं मिली। लड़की के परिजनों ने भोजपुर थाने में एक व्यक्ति पर नाबालिग का अपहरण करने का आरोप लगाते हुए रिपोर्ट दर्ज कराई। एसीपी ने जानकारी देते हुए कहा कि नाबालिग लड़की का अपहरण करने वाले फईमुद्दीन गांव नाहली का रहने वाला है जिसे पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है।

आरजेडी की मीटिंग में सीआईडी और स्पेशल ब्रांच को भेज रहे सीएम नीतीश कुमार

तेजस्वी यादव का बड़ा खुलासा

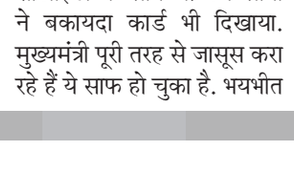

पटना, 15 सितंबर (एजेंसियां)। कार्यकर्ताओं का आभार जताने के लिए यात्रा पर निकले तेजस्वी यादव ने रविवार को मधुबनी में पत्रकारों से बातचीत में एक बड़ा खुलासा किया है. उन्होंने आरोप लगाया है कि पार्टी की इंटरनल मीटिंग में सीएम नीतीश कुमार सीआईडी और स्पेशल ब्रांच की टीम भेज रहे हैं. उनके कार्यक्रम की जासूसी की जा रही है. नजर रखी जा रही है. दरअसल, शनिवार को मधुबनी में हुई एक बैठक को लेकर तेजस्वी यादव ने कहा कि पार्टी की इंटरनल मीटिंग थी. इंटरनल मीटिंग होती है तो पत्रकार फोटो लेकर चले जाते हैं. लेकिन कुछ लोग हिलने का नाम नहीं ले रहे थे. बाद में पता चला कि वो स्पेशल ब्रांच और सीआईडी के लोग थे. उन लोगों ने बकायदा कार्ड भी दिखाया. मुख्यमंत्री पूरी तरह से जासूस करा रहे हैं ये साफ हो चुका है. भयभीत हैं, डरे हुए हैं कि किस प्रकार हम लोगों का कार्यक्रम चल रहा है. ये जितना हमारी निगरानी करवा रहे हैं अगर उतना ही नजर मुख्यमंत्री अपराधियों पर रखते तो बिहार का लॉ एंड ऑर्डर बहुत बेहतर होता. तेजस्वी ने मिथिलांचल डेवलपमेंट अथॉरिटी पर संजय झा के बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि वो क्या बोलेंगे? वो कब के नेता हैं? हमने कहा नहीं, दरभंगा में डीएमसीएच से अलग एक अस्पताल (एम्स) करके दिखाया है. वो जनता के पास जाएं और चुनाव जीत का दिखाए तब समझेंगे. बता दें कि मधुबनी के परिसदन में तेजस्वी यादव ने पत्रकारों से बातचीत में यह सारी बातें कही हैं. बीते शनिवार (14 सितंबर) को मधुबनी में तेजस्वी यादव ने पांच विधानसभा क्षेत्रों के बूथ, पंचायत, ब्लॉक और जिला स्तर के सभी कार्यकर्ताओं से मिले थे. बाकी पांच विधानसभा क्षेत्रों के कार्यकर्ताओं से आज (15 सितंबर) मिलेंगे. इसके बाद वो मुजफ्फरपुर के लिए निकल जाएंगे. तेजस्वी यादव बीते शुक्रवार की देर रात से मधुबनी में हैं. इस दौरान वे एनडीए सरकार पर जमकर हमला कर रहे हैं.

नितिन गडकरी के खुलासे पर संजय राउत बोले

उन्हें पीएम पद का ऑफर देना गलत नहीं

मुंबई, 15 सितंबर (एजेंसियां)। लोकसभा चुनाव 2024 के कई महीने बाद केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने चौंकाने वाला खुलासा किया है। उन्होंने कहा कि विपक्ष के एक नेता ने उन्हें पीएम पद का ऑफर दिया था। उनके इस बयान के बाद राजनीति गरमा गई है। इस पर अब शिवसेना (यूबीटी) नेता संजय राउत की प्रतिक्रिया आई है। उन्होंने कहा, नितिन गडकरी बीजेपी के सबसे सर्वमान्य नेता हैं और मुझे नहीं लगता कि किसी ने उनसे प्रधानमंत्री पद के लिए पैरवी करने को कहा होगा। जिस तरह से इस देश में तानाशाही चल रही है और जिस तरह से 10 साल पहले आपातकाल की शुरुआत हुई थी। उन्हें अगर यह सलाह किसी ने दी है, विपक्ष के किसी नेता ने दी है तो मुझे इसमें कुछ भी गलत नहीं लगता।

वे हमेशा अपने विचार व्यक्त किए हैं

संजय राउत ने कहा, मुझे लगता है कि अगर कोई मौजूदा सरकार में रहते हुए भी इस देश के मूल्यों, लोकतंत्र, न्यायपालिका और स्वतंत्रता से नहीं जुड़ता है, तो यह राष्ट्रीय अपराध है। नितिन गडकरी ने हमेशा इन सबके खिलाफ बोला है, आवाज उठाई है और अपने विचार व्यक्त किए हैं, इसलिए अगर विपक्ष के किसी बड़े नेता ने, जिनका वह बहुत सम्मान करते हैं, उन्हें कुछ सलाह दी है, तो इसमें दुखी होने की जरूरत नहीं है। जगजीवन राम ने इन्हीं मूल्यों के कारण 1977 में कांग्रेस पार्टी छोड़ दी थी और इंदिरा गांधी की हार हुई थी। अगर देश में आजादी, लोकतंत्र और न्यायपालिका को बनाए रखना है, तो सत्ता में बैठे कुछ लोगों की बलि देकर आजादी हासिल करनी होगी।

चुनाव के बाद केंद्रीय मंत्री का खुलासा

बता दें कि नितिन गडकरी ने यह खुलासा लोकसभा चुनाव संपन्न होने के करीब तीन महीने बाद किया है। उन्होंने यह खुलासा शनिवार को नागपुर में पत्रकारिता पुरस्कार समारोह के दौरान किया। हालांकि, 21 अगस्त 2023 को शिवसेना (यूबीटी) नेता विनायक राउत का एक बयान सामने आया था, जिसमें उन्होंने केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी को इंडी गठबंधन में शामिल होने का न्योता दिया था। विनायक राउत ने कहा था कि उनकी पार्टी गडकरी को अगला प्रधानमंत्री बनाने की कोशिश करेगी। उन्होंने यह भी दावा किया कि भाजपा का केंद्रीय नेतृत्व गडकरी को प्रधानमंत्री पद का दावेदार मानता है और उनके राजनीतिक करियर को खत्म करने की साजिश कर रहा है।

धड़ल्ले से छप रहे थे नकली वीजा, हुआ भंड़ाफोड़, 6 अरेस्ट

नई दिल्ली, 15 सितंबर (एजेंसियां)। इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पुलिस को बड़ी सफलता मिली है। एयरपोर्ट पुलिस ने दिल्ली में चल रही एक फर्जी वीजा फैक्टरी का भंडाफोड़ किया है। फर्जी पासपोर्ट की इस फैक्टरी में इतनी सफाई से फर्जी तैयार किए जा रहे थे, जिन्हें पहचानना एक सामान्य आदमी तो छोड़िए, पुलिस के लिए बहुत आसान नहीं था। यह गिरोह वीजा बनाने के लिए एक खास तरह के कागज का इस्तेमाल करता था। साथ ही, ये लोग वह सभी सिक्योरिटी फीचर अपने वीजा में डालते थे, जो किए असली वीजा में होती हैं। आईजीआई एयरपोर्ट पुलिस ने अब तक इस मामले में छह गिरफ्तारियां पूरी कर ली है। पुलिस को मौके से भारी तादाद में वीजा बनाने में इस्तेमाल होने वाला सामान भी मिला है। आईजीआई एयरपोर्ट पुलिस उपायुक्त उषा रंगनानी के अनुसार, नकली वीजा बनाने वाली यह फैक्टरी दिल्ली के तिलक नगर इलाके में चल रही थी। छापेमारी के दौरान, पुलिस ने मौके से छह एजेंट्स को भी गिरफ्तार किया है।

आतंकी हमले में पिता-चाचा को खो दिया

किश्तवाड़ से बीजेपी कैंडिडेट शगुन परिहार ने और क्या कहा?

जम्मू, 15 सितंबर (एजेंसियां)। कश्मीर विधानसभा चुनाव में बीजेपी ने किश्तवाड़ से शगुन परिहार कैंडिडेट बनाया है। उनके चाचा बीजेपी नेता थे। शगुन बीजेपी नेता अनिल परिहार की भतीजी हैं। हिजबुल मुजाहिद्दीन ने एक आतंकी हमले में अनिल परिहार की हत्या कर दी थी। इसी आतंकी हमले में शगुन के पिता की भी मौत हो गई थी। किश्तवाड़ में आतंकवादी हमले में अपने पिता अजीत परिहार और अपने चाचा अनिल परिहार को खोने वालीं शगुन ने कहा कि मैंने अपने पिता और चाचा को इस आतंकवाद में खो दिया है। जब मोदी जी ने मुझे बेटी कहा तो मुझे उनका ध्यान आया।

उनके एक्स होम मिनिस्टर पैसा बांट रहे

उन्होंने कहा कि पांच साल में जो मैंने झेला है इस आतंकवाद की वजह से उसी को खत्म करना है। महिलाओं का विकास, बच्चों की पढ़ाई और उनके कॉलेज तक का रास्ता मेरी प्राथमिकता है। उन्होंने कहा, नेशनल कॉन्फ्रेंस और उमर अब्दुल्ला बस जहर घोल रहे हैं। वो नहीं चाहते कि यहां का विकास कभी भी हो। उनके एक्स होम मिनिस्टर लोगों को पैसा बांट रहे हैं। महबूबा मुफ्ती मोहम्मद सईद और इल्तिजा मुफ्ती बस परिवारवाद की राजनीति करना जानते हैं। ये अलगावावादी और इन सब हरकतों को बढ़ावा देने वाले नेता हैं। आर्टिकल 370 के हटने के बाद उन्होंने कहा कि झंडा उठाने वाला कोई नहीं बचेगा। हम सभी झंडा उठाकर देशहित में यहां पर मार्च कर रहे हैं, ताकि देश आगे बढ़ सके।

किश्तवाड़ में पहले चरण में होगी वोटिंग

बता दें कि जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव तीन चरणों में 18 सितंबर, 25 सितंबर और 1 अक्टूबर को होंगे। वोटों की गिनती 8 अक्टूबर को होगी। पहले चरण के तहत दक्षिण कश्मीर की 8 सीटों पर मतदान होगा। जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ में पहले चरण में वोटिंग होनी है।

दिग्विजय सिंह का बीजेपी के सदस्यता अभियान पर बड़ा आरोप, कहा- 'छात्रों से कराया मिसकॉल

भोपाल, 15 सितंबर (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने आरोप लगाया है कि भारतीय जनता पार्टी मध्य प्रदेश में फर्जी सदस्य बना रही है। जबकि बीजेपी ने पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह के आरोपों पलटवार करते हुए उन्हें गलत बताया है। बीजेपी का कहना है कि विधानसभा और लोकसभा चुनाव में सदस्यों की संख्या का पूरा हिसाब किताब सामने आ जाता है। दिग्विजय सिंह ने राघोगढ़ का एक वीडियो वायरल हो रहा है जिसमें वो कह हे हैं कि भारतीय जनता पार्टी भ्रम फैलाकर फर्जी सदस्य बना रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि उनके गृह क्षेत्र राघोगढ़ के पॉलिटेक्निक कॉलेज में राज्य एड्स नियंत्रण समिति द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इस पर प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान एक नंबर पर धोखे से कॉल करवा कर विद्यार्थियों को बीजेपी का सदस्य बना लिया गया। इस मामले में छात्र संगठन की ओर से ज्ञापन भी दिया गया है। पॉलिटेक्निक कॉलेज के छात्र ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि उनके यहां एड्स नियंत्रण समिति द्वारा सेमिनार आयोजित किया जा रहा था। इस दौरान सुनील शर्मा नामक एक व्यक्ति ने स्टेज पर आकर स्टूडेंट्स से कहा कि उन्हें एक नंबर पर मिस्ड कॉल देना है। इसके बाद भारतीय जनता पार्टी का सदस्यता वाला नंबर स्टूडेंट्स से डायल करवाया गया। स्टूडेंट्स उस समय हैरान रह गए जब उनके मोबाइल पर भारतीय जनता पार्टी का सदस्य बनने का मैसेज आया। उज्जैन उत्तर के विधायक अनिल जैन कालूहेड़ा के मुताबिक, विधानसभा चुनाव के बाद लोकसभा चुनाव में मध्य प्रदेश में कांग्रेस की ऐतिहासिक हार हुई है। कांग्रेस के कार्यकर्ताओं से लेकर बड़े नेता तक बीजेपी ज्वाइन कर रहे हैं। इन सब मुद्दों पर मंथन करने की वजह कांग्रेस भारतीय जनता पार्टी के सदस्यता अभियान को लेकर खामियां निकालने और गलत आरोप का दावा कर रही है।

कलेक्टर पर जीतू पटवारी के बयान से मचा सिसासी भूचाल, सीएम मोहन यादव ने किया पलटवार

भोपाल, 15 सितंबर (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश में कांग्रेस इन दिनों 'किसान न्याय यात्रा' निकाल रही है। इस बीच, नर्मदापुरम में शुक्रवार को यात्रा के दौरान कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने कलेक्टर पर बड़ा बयान दिया, जिससे सियासी माहौल गरमा गया है। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष ने यात्रा के दौरान कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा था कि यहां होशंगाबाद के जो कलेक्टर हैं, अगर इमानदारी से स्टिंग हो तो बताएंगे कि पैसे देकर कलेक्ट्री खरीदी है।

रस्सी जल गई, लेकिन बट नहीं गया

उन्होंने आगे कहा कि यहां के जो एसपी, तहसीलदार, पटवारी, एसडीएम और थानेदार इनकी अंतरात्मा में जाओगे तो देखोगे एक भी अधिकारी और कर्मचारी बिना पैसे के थाना या जगह नहीं पाता है। जीतू पटवारी के इस बयान पर शनिवार सुबह मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव ने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा, रस्सी जल गई, लेकिन बट नहीं गया। कांग्रेस लगभग 20 साल से राज्य में सरकार से बाहर है।

बीच में कुछ समय मिला, तब भी सरकार चला नहीं पाई और अभी भी कांग्रेस के नेताओं ने जिस ढंग से अधिकारी व कर्मचारियों के लिए नर्मदापुरम में भाषा का इस्तेमाल किया, मैं मानकर चलता हूं कि यह सब ऊंचे अधिकारियों और कर्मचारियों का अपमान है, इसे लेकर उनको माफी मांगना चाहिए

सारी बातों के लिए वो क्षमा भी मांगेंगे

मुख्यमंत्री ने कहा नेता प्रतिपक्ष सहित जिस ढंग से अपनी बात रख रहे हैं मुझे लगता है उनको विचार करना चाहिए। मध्य प्रदेश के अधिकारी और कर्मचारी उनकी एक अलग साख है। वह अलग ढंग से काम करते हैं। ऐसे में राजनीति करने के लिए बहुत अलग तरीके से बात कर सकते हैं।

मैं उम्मीद करता हूं कि इन सारी बातों के लिए वो क्षमा भी मांगेंगे। अधिकारी और कर्मचारी हमारी सरकार में बहुत इज्जत से काम करते हैं, निष्ठा से काम करते हैं, शिद्दत से काम करते हैं। सरकार सभी वर्गों की बेहतरी के लिए सभी को साथ लेकर चलना चाहती है। मेरी अपनी ओर से अपने सभी अधिकारियों और कर्मचारी के साथ सरकार खड़ी है और उनकी व्यवस्था पर कोई प्रश्न नहीं उठा सकता है। आप बेखौफ होकर काम करें, बेखौफ होकर जनता का काम करें।

जूते उतारने को बोला तो डॉक्टर को जमकर पीटा अस्पताल में जमकर मचाया उत्पात, तीन गिरफ्तार

भावनगर, 15 सितंबर (एजेंसियां)। गुजरात के भावनगर में एक निजी अस्पताल में तीन युवकों द्वारा डॉक्टर को बुरी तरह पीटने का मामला सामने आया है। खबर के अनुसार, डॉक्टर ने युवकों को अस्पताल के आपातकालीन कमरे में जाने से पहले जूते उतारने को कहा था, इसी बात पर युवक इतना नाराज हुए कि उन्होंने डॉक्टर समेत वहां मौजूद नर्सिंग स्टाफ की बुरी तरह पिटाई कर दी। पुलिस ने तीनों युवकों के खिलाफ मामला दर्ज कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया है।

क्या है मामला

पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि घटना 12 सितंबर को भावनगर के सिहोर शहर के श्रेया अस्पताल में घटी। तीनों आरोपी युवक एक घायल महिला को अस्पताल में भर्ती कराने आए थे। जिसके सिर में चोट लगी थी। जब तीनों युवक अस्पताल के आपातकालीन कक्ष में दाखिल हो रहे थे तो वहां मौजूद डॉक्टर जयदीप सिंह गोहिल (33 वर्षीय) ने उनसे जूते उतारने को कहा। इस बात पर युवक नाराज हो गए और उन्होंने गाली-गलौज शुरू कर दी। मामला इतना बढ़ा कि आरोपियों ने डॉक्टर की बुरी तरह पिटाई कर दी, जिससे डॉक्टर घायल हो गए। पुलिस ने बताया कि आरोपियों ने वहां रखीं दवाएं और अन्य उपकरणों को भी नुकसान पहुंचाया और अस्पताल में जमकर उत्पाद मचाया। इस मामले में दर्ज एफआईआर में बताया गया है कि आरोपियों ने डॉक्टर को जान से मारने की धमकी भी दी। पुलिस ने शनिवार को तीनों आरोपियों हिरेन डांगर, भवदीप डांगर और कौशिक कुवाडिया को गिरफ्तार कर लिया। तीनों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धारा 115 (2) (किसी व्यक्ति को चोट पहुंचाने के इरादे से कार्य करना), 352 (शांति भंग करने के इरादे से जानबूझकर अपमान करना), 351 (3) (आपराधिक धमकी) के तहत मामला दर्ज किया है।

पति ने काटा पत्नी का गला, पेंट की दुकान में काम करने वाले युवक की भी गोली मारकर हत्या

नई दिल्ली, 15 सितंबर (एजेंसियां)। दिल्ली की गीता कॉलोनी से डबल मर्डर की खबर सामने आई है। यहां एक शख्स ने अवैध संबंध के शक के चलते अपनी पत्नी की हत्या कर दी। अपनी पत्नी की हत्या करने के बाद शख्स ने खुद को कमरे में बंद कर लिया। मिली जानकारी के अनुसार मौके पर पहुंची पुलिस ने दरवाजा तोड़ कर आरोपी पति को गिफ्तार किया। पुलिस के मुताबिक मृतक महिला(27 वर्षीय सुनीता) का अपने पति किशन लाल से विवाद चल रहा था, जिस वजह से दोनों अलग अलग रहते थे। सुनीता अपनी मां से मिलने के लिए गीता कालोनी आयी हुई थी, जिसकी खबर मिलने पर किशन लाल अपने तीनों बच्चों के साथ वहीं पहुंच गया। घर पहुंचने के बाद आरोपी ने बच्चों को घर के बाहर बैठा दिया और पत्नी के साथ खुद को कमरे में बंद कर लिया। कमरे में बंद करने के बाद दोनों के बीच कहासुनी शुरू हो गई, इसी बीच किशन लाल ने चाकू निकाल कर सुनीता का गला काट दिया। किशन लाल चाकू को पहले से ही लेकर आया हुआ था। बाहर से सुनीता की मां चीखती चिल्लाती रही लेकिन किशन लाल ने कमरा नहीं खोला। महिला के बच्चों ने जब पुलिस को फोन किया तो मौके पर पहुंची पुलिस ने दरवाजा तोड़ कर किशन लाल को गिरफ्तार कर किया और शव को कब्जे में लेकर हॉस्पिटल भेजा, जहां डॉक्टरों ने सुनीता को मृत घोषित कर दिया। वहीं, गीता कालोनी इलाके में ही एक युवक की गोली मार हत्या कर दी गई। घटना उस समय हुई जब 20 वर्षीय शाहिद उर्फ आशु अपनी दुकान में पेंट का काम कर रहा था। घायल युवक को लोकनायक जयप्रकाश नारायण हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मिली जानकारी के मुताबिक शाहिद टेलरिंग का काम करता था। पुलिस के मुताबिक शाहिद के मकान की पहली मंजिल पर मुन्ना किराए पर रहता है। मकान खाली करने को लेकर मुन्ना और मकान मालिक शाहिद के बीच विवाद चल रहा था। पुलिस को मुन्ना के दोनों बेटे चांद और इमरान पर शाहिद की हत्या करने का शक है।

ओडिशा में सड़क दुर्घटनाओं में छह की मौत

11 घायल; पुलिस ने मामला दर्ज कर शुरू की जांच

भुवनेश्वर, 15 सितंबर (एजेंसियां)। ओडिशा में तीन अलग-अलग सड़क दुर्घटनाओं में छह लोगों की मौत हो गई, जबकि 11 लोग घायल भी हुए हैं। बोलांगीर जिले के मढ़ियापाली के पास राष्ट्रीय राजमार्ग 26 पर एक मोटरसाइकिल और एक अन्य वाहन में टक्कर के बाद दो लोगों की मौत हो गई। स्थानीय लोगों ने दोनों को सड़क पर खून से लथपथ देखा। उन्होंने तुरंत पुलिस को इसकी जानकारी दी। दोनों को बोलांगीर भीमा भोई मेडिकल कॉलेज और अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। हालांकि, मृतकों की पहचान अभी तक नहीं हो पाई है। पुलिस ने फिलहाल मामला दर्ज कर जांच कर दी है। मयूरभंज जिले में शनिवार देर रात दो अलग-अलग सड़क दुर्घटना में तीन लोगों की मौत हो गई और 11 लोग घायल हुए। बारीपदा शहरके बाहरी इलाके में राष्ट्रीय राजमार्ग-18 पर मोटरसाइकिल और ट्रक के बीच टक्कर में दो लोगों की मौत हो गई। इस हादसे में दोनों की मौके पर ही मौत हो गई। मृतकों की पहचान 25 वर्षीय विकास मोहंता और 26 वर्षीय मीतू मोहंता के तौर पर की गई है। एक अन्य हादसे में 13 लोगों को ले जा रही एक तेज रफ्तार कार बारीपदा-लुलुंग रोड पर खासडीहा के पास सड़क किनारे पेड़ से टकरा गई। इस घटना में कार चालक और एक अन्य व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि 11 लोग घायल हो गए। मृतकों की पहचान भुबन सिंग और जयंत सिंग के तौर पर की गई है। घायलों को पीआरएम मेडिकल कॉलेज और अस्पताल ले जाया गया। जिला पुलिस ने दो मामले दर्ज किए।

जालंधर में हथियार के साथ अंकुश भाया गैंग के 7 अपराधी गिरफ्तार, गोल्डी बरार से संबंधों का भी खुलासा

जालंधर, 15 सितंबर (एजेंसियां)। पंजाब में अपराध को लगाम लगाने की दिशा में पुलिस को बड़ी सफलता मिली है। जालंधर पुलिस ने अंकुश भाया गैंग के 7 अपराधियों को गिरफ्तार किया है। इस मामले में एक पुलिस कांस्टेबल पर भी एक्शन लिया गया है। पुलिस कांस्टेबल पर संवेदनशील जानकारी लीक करने का आरोप है। पुलिस ने अपराधियों के पास से भारी संख्या में हथियार और कारतूस बरामद किए हैं। पंजाब पुलिस के डीजीपी ने कहा, "जालंधर ग्रामीण पुलिस ने अंकुश भाया गिरोह के 7 गुर्गों को गिरफ्तार किया है, जिसमें सरगना अंकुश सभरवाल भी शामिल है, जिससे अमेरिका में रह रहे अपराधी गोल्डी बराड़, विक्रम बराड़ और रवि बालाचोरिया के साथ संबंधों का खुलासा हुआ है।'

'पंजाब पुलिस के सीनियर अधिकारी ने जानकारी देते हुए आगे बताया कि इस मॉड्यूल ने होशियारपुर, मैहतपुर और नकोदर में अलग-अलग ठिकानों पर प्रतिद्वंद्वी अपराधियों पर हमले की साजिश रची थी।

पटरी पार करते हुए ट्रेन से कट कर 3 महिलाओं की मौत, शादी में शामिल होने आई थीं

कासरगोड, 15 सितंबर (एजेंसियां)। केरल के कासरगोड से एक दिल दहला देने वाली खबर सामने आई है। जिले में कांजनगाड रेलवे स्टेशन के पास शनिवार रात को पटरी पार करते समय ट्रेन की चपेट में आने से तीन महिलाओं की मौत हो गई। घटना की जानकारी पुलिस ने दी। मृतकों की पहचान दक्षिणी कोट्टायम जिले के चिंगवनम निवासी के रूप में हुई है। पुलिस ने बताया कि जानकारी मिली है कि महिलाएं एक समूह का हिस्सा थीं, जो पास में ही एक शादी समारोह में शामिल होने आई थीं। पुलिस ने बताया कि यह हादसा उस वक्त हुआ जब वे रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर पहुंचने के लिए पटरी पार कर रही थीं। पुलिस ने बताया कि तभी एक सुपरफास्ट ट्रेन ने उन्हें टक्कर मार दी और तीनों महिलाओं की मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि जांच जारी है और अन्य विवरण फिलहाल उपलब्ध नहीं है।

इससे पहले अरुणाचल प्रदेश में एक ऐसी ही घटना घटनी। लोअर सियांग जिले में पटरी पार करते समय ट्रेन की चपेट में एक कार आ गई, जिसमें एक 52 वर्षीय व्यक्ति की मौत हो गई और एक बच्चा घायल हो गया।

राजकीय रेलवे पुलिस (जीआरपी) के सहायक उपनिरीक्षक गणेश हजारिका ने बताया कि दिमोव के पास पाले में शुक्रवार दोपहर करीब 3.50 बजे यह दुर्घटना हुई। उन्होंने बताया कि मृतक की पहचान भारतीय रिजर्व बटालियन के उप-निरीक्षक रिगो रीबा के रूप में हुई है। अधिकारी ने बताया कि रीबा अपने सात वर्षीय पोते के साथ ईस्ट सियांग जिले के पासीघाट से अपने पैतृक गांव जा रहे थे, तभी यह हादसा हुआ। वह पासीघाट में तैनात थे। हजारिका ने बताया कि जब वह कार से पटरी पार कर रहे थे, तभी उनका वाहन मुरकंगसेलेक-तेजपुर विशेष ट्रेन की चपेट में आ गया और यह कम से कम एक किलोमीटर तक घसीटता चला गया। ट्रेन असम के तेजपुर में डेकारगांव की ओर जा रही थी। उन्होंने बताया कि दुर्घटना इतनी भीषण थी कि रीबा की मौके पर ही मौत हो गई।

क्या नीतीश कुमार फिर मारेंगे पलटी, एनडीए में बिना बंटवारे ही टिकट बांट रहे चिराग पासवान

पटना, 15 सितंबर (एजेंसियां)। बिहार में लोकसभा चुनाव के बाद से ही राजनीतिक पार्टियां विधानसभा चुनाव के लिए विभिन्न रणनीतियों पर काम कर रही हैं। पक्ष विपक्ष के नेताओं ने अपने-अपने हिसाब से टिकट की दावेदारी भी शुरू कर दी है। इसी क्रम में सियासी गलियारों में एनडीए के सहयोगी दलों में मतभेद की भी चर्चा तेज़ हो चुकी है। एनडीए के घटक दल सबकुछ ठीक का दावा तो कर रहे हैं, लेकिन तस्वीर कुछ और ही नज़र आ रही है। अब चर्चा यह तेज़ हो चुकी है कि नीतीश कुमार एक बार फिर पाला बदल सकते हैं, क्योंकि उनके साथ 2020 के विधानसभा चुनाव जैसा खेला हो सकता है। हालांकि नीतीश कुमार पाला बदलने को लेकर मीडिया में लगातार सफ़ाई दे रहे हैं। नीतीश कुमार के एनडीए में रहने पर बयान के बावजूद संभावनाओं की सियासत पर अटकलों का बाज़ार गर्म हो चुका है। यह चर्चा इस वजह से तेज़ हुई है, क्योंकि लोजपा (र) के अध्यक्ष चिराग पासवान ने एनडीए में बंटवारे से पहले ही पार्टी के विधानसभा उम्मीदवारों की दावेदारी ठोकनी शुरू कर दी है। लोकसभा चुनाव में लोजपा रामविलास पार्टी की सौ फीसदी स्ट्राइक रेट के बाद चिराग पासवान एनडीए में मज़बूत पकड़ बना चुके हैं। शायद यही वजह है कि वह गठबंधन से पड़े अपनी पार्टी की तरफ़ से उम्मीदवारों की घोषणा भी शुरू कर चुके हैं। चर्चा है कि 2020 की तरह चिराग पासवान जदयू के साथ खेला कर सकते हैं। बिहार की एकलौती मटिहानी विधानसभा सीट चिराग पासवान की पार्टी के खाते में गई थी, जिस पर राजकुमार सिंह ने जीत दर्ज की थी। हालांकि बाद में उन्होंने जदयू का दामन थाम लिया था, चूंकि वह पार्टी के इकलौते विधानयक थे। इसलिए उनपर दल बदल नियम लागू नहीं हुआ था। यही वजह है कि चिराग मटिहानी विधानसभा को अपनी पार्टी की सीट मान रहे हैं और उसपर लोजपा (र) की तरफ़ से उम्मीदवार उतारने की बात कह रहे हैं। वहीं सूत्रों की मानें तो चिराग पासवान ने शेखपुरा से इमाम ग़ज़ाली के उम्मीदवारी तय कर दी है। इसी के बाद से एनडीए में मतभेद शुरू हो चुके हैं। एनडीए की सहयोगी दलों नें भाजपा, जदयू, लोजपा (र), हम और रालम शामिल है। भाजपा आलाकमान ने यह साफ कर दिया है कि जदयू साथ ही आगामी चुनाव लड़ा जाएगा। इसके बावजूद बिना टिकट बंटवारे के चिराग पासवान ने लोजपा (र) की तरफ़ दावेदारी शुरू करी दी।

गिरिराज बोले- राहुल गांधी-ममता जैसे लोग भारत को बांग्लादेश और पाक की ओर ले जाने की कर रहे कोशिश

बेगूसराय, 15 सितंबर (एजेंसियां)। केंद्रीय मंत्री और बेगूसराय के सांसद गिरिराज सिंह ने हाल ही में वक्फ बोर्ड के समर्थन में किए जा रहे प्रचार और सोशल मीडिया के उपयोग को लेकर तीखा बयान दिया। उन्होंने आरोप लगाया कि वक्फ बोर्ड के समर्थक समाज में तनाव और अशांति फैलाने का प्रयास कर रहे हैं। भाजपा नेता गिरिराज सिंह ने कहा कि आजकल देखा जा रहा है कि दंगाई प्रवृत्ति के लोग वक्फ बोर्ड का सहारा लेकर समाज के सामाजिक सौहार्द को बिगाड़ने की कोशिश कर रहे हैं। वे सड़क पर घूम-घूम कर प्रचार-प्रसार कर रहे हैं और अब सोशल मीडिया का सहारा लेकर लोगों को भ्रमित करने का काम कर रहे हैं। लेकिन वे अपने मनसूबे में सफल नहीं होंगे। भले ही राहुल गांधी और तेजस्वी यादव जैसे लोग उनका समर्थन कर रहे हों, आम आदमी इस साजिश को समझ चुका है।

इसके साथ ही गिरिराज सिंह ने देश के विभिन्न हिस्सों में धार्मिक आयोजनों के दौरान पथराव और हमलों की घटनाओं की कड़ी निंदा की। उन्होंने कहा कि जब ताजिया का जुलूस या कोई मुसलमान धार्मिक आयोजन करते हैं, तब हिंदू समुदाय की ओर से कोई प्रतिरोध नहीं किया जाता। लेकिन जब हिंदू अपनी धार्मिक परंपराओं का पालन करते हैं तो उन पर हमला किया जाता है। उन्होंने राहुल गांधी, तेजस्वी यादव और अखिलेश यादव पर आरोप लगाया कि ये नेता इन घटनाओं को चुपचाप देखते हैं और इनका समर्थन करते हैं। गिरिराज सिंह ने विशेष रूप से राहुल गांधी और ममता बनर्जी पर हमला करते हुए कहा कि वे भारत को बांग्लादेश और पाकिस्तान की दिशा में ले जाने की कोशिश कर रहे हैं।

गजब बेइज्जती है यार! सड़क नहीं 'नाले' से होकर गुजरे मंत्री जी, सवाल सुन साध ली चुप्पी

मुंबई, 15 सितंबर (एजेंसियां)। महाराष्ट्र सरकार में मंत्री गिरीश महाजन का एक वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। गिरीश महाजन ग्रामीण विकास मंत्री हैं लेकिन जब वह एक गांव में आयोजित कार्यक्रम में हिस्सा लेने पहुंचे तो उन्हें असहज स्थिति का सामना करना पड़ा। एक तो उन्हें कीचड़ वाली सड़क पर बाइक से सफर करना पड़ा तो वहीं मंत्री जी को देखते ही बच्चों ने सवाल पूछना शुरू कर दिया लेकिन मंत्री जी ने सांस तक नहीं ली। गिरीश महाजन का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसमें वे कीचड़ और गड्ढों वाली सड़क पर दोपहिया वाहन पर पीछे बैठे हैं और पीछे से कुछ युवक चिल्ला रहे हैं। दावा किया जा रहा है कि यह वीडियो 13 सितंबर को तब रिकॉर्ड किया गया, जब मंत्री जी अपने निर्वाचन क्षेत्र के लेहा टांडा गांव गए थे। मंत्री के पहुंचने पर ग्रामीण खराब सड़क की शिकायत करना चाहते थे लेकिन मंत्री ना तो रुके और ना ही कोई जवाब दिया। वीडियो में दिखाई दे रहा है कि मंत्री जिस बाइक पर बैठे थे, वह भी कीचड़ में गिरते-गिरते बची। इसी बीच वहां कई बच्चे और ग्रामीण एकत्रित थे जो मंत्री से सड़क को लेकर सवाल पूछना चाहते थे लेकिन मंत्री जी उनकी कोई बात नहीं सुनी। सुनते भी कैसे, इतना कीचड़ था कि रुकते तो कपड़े और जूते गंदे हो जाते। अब यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है और इस पर तमाम लोगों के कमेंट्स आ रहे हैं। एक सोशल मीडिया यूजर ने लिखा कि ऐसे ही जनप्रतिनिधियों को जमीन पर लाना चाहिए, तभी वह लोगों की समस्या सुनेंगे। एक ने लिखा कि मंत्री जी के अंदर शर्म और जिम्मेदारी है तो आदेश जारी करें कि इस तरह की सड़कें अगर मिलीं तो अधिकारियों पर कार्रवाई होगी। एक अन्य ने लिखा कि ग्रामीण विकास मंत्री जी, जिम्मेदार इंसान हो तो अपनी विफलता देखकर इस्तीफा दे दो। वहीं वीडियो वायरल होने पर जलगांव में जामनेर के विधायक गिरीश महाजन ने कहा, मुझे एक शोक संतप्त परिवार से मिलना था और चूंकि मेरी कार नहीं जा सकती थी, इसलिए मैं बाइक से गया।

स्वतंत्र वार्ता

सोमवार, 16 सितंबर- 2024

सेब बना चुनावी मुद्दा

जम्मू कश्मीर के पुलवामा और आसपास के इलाके में 70 पर्सेंट से अधिक लोगों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार सेब से ही जुड़ा है। पूरे जम्मू कश्मीर में लगभग 40 लाख लोग सेब कारोबार से जुड़े हुए हैं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, कश्मीर से हर साल 20 लाख मीट्रिक टन सेब देश के बाहर भेजा जाता है। वहीं देश में सेब के कुल उत्पादन और बाजार में जम्मू कश्मीर की हिस्सेदारी लगभग 74 पर्सेंट है। पुलवामा से सटे गांवों में बागवान सेब की पैकिंग तो करा रहे हैं लेकिन उनके माथे पर चिंता की लकीरें बता रही हैं कि इस बार सेब का वाजिब दाम मिल पाएगा या नहीं। वजह यही है कि ऑर्डर कमजोर है। सेब कारोबारियों की चिंता इस बात की भी है कि ऑर्डर उतना भी नहीं मिल रहा, जिससे लागत निकल सके। बागवानों की पीड़ा है कि पिछले दो साल से यही सूरते हाल है। यहां के सेब देश के हर हिस्से में जाते थे। लेकिन अब इनकी जगह इटली और तुर्किए के सेब ने ले ली है। धंधा मंदा होने की समस्या से अधिकतर सेब कारोबारी और किसान जूझ रहे हैं। जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव के हो रहे चुनाव में सेब की कीमत ही एक बड़ा मुद्दा बन चुका है। सेब कारोबारियों और इससे जुड़े किसानों की मांग है कि जो उनकी बात सुनेगा वे वोट उसे ही देंगे। पुलवामा में सेब कारोबारी इसलिए दुखी हैं कि बीते दो-तीन सालों में उनके धंधे में लगभग तीस फीसद की गिरावट आई है। हालात को भांपते हुए अब सभी राजनीतिक दल सेब की खेती से जुड़े लोगों को लुभाने के लिए कई लुभावने वादे कर रहे हैं। कश्मीरी सेब के ऑर्डर कम होने के पीछे बड़ा कारण है कि विदेश से आने वाली सेब। उस सेब की क्वॉलिटी बेहतर है और उनके दाम भी कश्मीरी सेब के आसपास ही है। पुलवामा के सेब की क्वॉलिटी विदेश से आने वाले सेब के मुकाबले कमजोर है। कश्मीर के किसान इससे बेहतर क्वॉलिटी की सेब उगा सकते हैं, लेकिन इसके लिए पैसा नहीं है। वे सरकार से पैकेज और दूसरी सहायता की दरकार करते हैं। विदेशी सेब की क्वॉलिटी से मुकाबले के लिए हाई डेंसिटी प्लांटेशन किया जा रहा है। इसमें एक बार में लगभग तीन-चार लाख रुपये खर्च होते हैं। इसके लिए सरकार सब्सिडी और दूसरी सहायता दे रही है। लेकिन इस बदलाव में पूरी तरह शिफ्ट करने में चार-पांच साल लग जाएंगे। इससे तो सिर्फ पूंजी वाले बड़े किसान ही टिक सकते हैं। विदेश से जो सेब देश के अंदर आ रहा है उस पर सरकार टैक्स लगाए। वह मिसाल देते हैं कि जब वह अपनी सेब बांग्लादेश भेजते हैं तो वहां सरकार इस पर 100 पर्सेंट टैक्स लगाती है। समय के साथ कुछ किसानों ने बदलाव भी किया। दो साल पहले इटली से आए हाई डेंसिटी वाले सेब के पौधे लगाए। अगले ही साल से ये पौधे फल देने लगे। प्रतिकूल मौसम का असर भी इनपर कम होता है। इस नई तकनीक की मदद से कश्मीर के सेब उत्पादक कहीं अधिक कमा सकते हैं। जब राज्य की इकॉनमी सेब आधारित हो और लाखों लोग इससे जुड़े हो तो जाहिर है चुनाव में उनकी मांगों को अनसुना करना संभव नहीं है।

नेता जी की आंसू बहाने की नई कला

सुरेश मिश्रा

हरियाली, सुख-समृद्धि, और विकास का सपना देखने वाले नेताओं की सूची में नाम न देखकर विलाप करने वाले नेता जी पर जब हम नजर डालते हैं, तो यह सवाल स्वाभाविक रूप से उठता है कि क्या इनकी पूरी राजनीति का आधार केवल अवसर की तलाश है? न जाने कितने चश्मे हैं जिनसे नेता जी ने टिकट की लिस्ट देखी, लेकिन इन चश्मों की ताकत भी कभी इतनी कमजोर नहीं हुई कि इन्हें सही नाम न दिखा सके। आह! क्या यही है सच्ची राजनीति का मर्म? आइए, इस चिरपरिचित आंसू बहाने वाले नेताओं की हालत पर कुछ व्यंग्य की बौछार करते हैं। नेता जी, जिन्होंने कभी खुद को राजनीति का शेर समझा, अब उसी शेर की तरह बिना नाम की लिस्ट देखकर बिलख रहे हैं। यह देख कर लगता है जैसे राजनीति का प्याला, जिसमें हम सब समाने की उम्मीद लगाए बैठे हैं, अब उन्हीं नेताओं की आंखों से छलकने लगा है। लिस्ट न देखकर रोना, वास्तव में एक ऐसी हास्य-नाटकीय त्रासदी है, जिसे शब्दों में नहीं बांध सकते।

लिस्ट में नाम न देखकर आंसू बहाना, नेता जी की नयी उपलब्धि है। ये वही नेता हैं जो कभी दूसरों के आंसू पोंछने का दावा करते थे, आज खुद आंसू बहाते हुए दिख रहे हैं। शेर की तरह दहाड़ने वाले ये नेता अब बिलकुल गीदड़ की तरह रो रहे हैं। हाय! यह राजनीति की ऐसी रंगीन चादर है, जो एक तरफ दिखाती है परछाईं और दूसरी तरफ बुनती है विडंबना। जब इन नेताओं ने अग्निवीर स्कीम का समर्थन किया था, तब यह कोई अजीब बात नहीं थी। लेकिन अब जब अग्निवीर की राजनीति उन पर लागू हो गई है, तो आंसू की धारा बह रही है। इनकी स्थिति ऐसी हो गई है जैसे किसी बगीचे में पानी देने की बजाय हर पौधे को कलेवा देने लगे हों। जब तक यह फुल-टैंक थे, सब ठीक था। अब पंख लगे हैं और पानी की कमी का रोना शुरू हो गया है।

किसी समय इन नेताओं ने बेरोज़गारों की लिस्टों में नाम न देखकर अपनी शान बढ़ायी थी। अब खुद की लिस्ट में नाम न देखकर वही नेता जी फफक-फफक कर आसमान सिर पर उठा रहे हैं। अरे भाई! जब बेरोज़गारी की लिस्ट पर फेंकने की बारी थी, तब किसी ने नहीं सोचा कि ये आंसू भी कभी अपने दरवाजे पर दस्तक देंगे। नेता जी की राजनीतिक यात्रा एक ऐसे नाटक की तरह है, जिसमें हर दृश्य की कहानी अलग होती है और अंत में सब कुछ बेमेल निकलता है। अब ये नेता जी उस नाटक के बुरे अभिनेता की तरह हैं, जो जब मंच पर आता है तो सिर्फ अजीबो-गरीब हरकतें करता है। क्या नेता जी की वास्तविक राजनीति का यही मतलब है, कि जब तक लाभ है तब तक मुस्कान, और जब दिक्कत आए तो आंसू? नेता जी का हाल ऐसा, जिसमें डूबता हुआ आदमी तिनके का सहारा लेता है। इन नेताओं ने कभी संजीवनी बूटी की तरह अपने वादों से जनता को ढांढस बंधाया, लेकिन जब खुद को किल्लत का सामना करना पड़ा, तो यही नेता जी आंसुओं की झड़ी लगाने लगे। अरे भाई, तुम्हारी लिस्ट का नाम न देखकर रोने की बजाय अगर उन लोगों के बारे में सोचा होता जिनकी भर्ती कैंसिल हो गई, तो शायद दिल बड़ा होता! इस सबके बीच, नेता जी की राजनीति और उनकी आंसू बहाने की कला दोनों ही एक गहन अध्ययन का विषय बन गए हैं। यह व्यंग्य केवल एक टीका-टिप्पणी नहीं, बल्कि हमारी राजनीति की वास्तविकता पर एक कड़ा सवाल है। क्या राजनीति केवल अवसरों की खोज है, या फिर इसमें सचमुच लोगों की भलाई का कोई मतलब भी है? नेता जी का नाम लिस्ट में न देखकर रोना, राजनीति के रंगमंच पर एक नई परत जोड़ता है। यह समझना जरूरी है कि राजनीति में आंसू बहाना आसान है, लेकिन सच्चे कर्म करना और समाज की भलाई के लिए काम करना, यही असली चुनौती है। जब तक नेता जी इन आंसुओं से बाहर नहीं निकलते, तब तक उनकी राजनीति भी एक मजेदार नाटक की तरह ही बनी रहेगी।

समान नागरिक संहिता लागू करने का सही वक्त

गौतम चौधरी

विभिन्न बाहरी सांस्कृतिक आक्रमण और धार्मिक आवरणों की तकलीफ को झेलने के बावजूद भारत अपने हजार साला इतिहास, संस्कार, आचार व विचार, परंपरा और ज्ञान की अविरल धारा को विपरीत परिस्थितियों में भी संजो कर रखे हुए है। ऐसा इसलिए संभव हो पाया क्योंकि भारत की संस्कृति सार्वभौमिक, समावेशी, सार्वदेशिक व सार्वकालिक है। भारतीय विचारधारा की बुनियाद वसुधैव वुटुम्बकम् पर आधारित है। सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुख भागभवेत पर आरूढ़ है। यह केवल एक मंत्र मात्र नहीं अपितु हर हिन्दुस्तानी इस पर दृढ़ता से विश्वास करते हैं और वास्तव में इसका पालन भी करता है। शायद यही वजह रही जिसने इकबाल को यह लिखने के लिए मजबूर किया। ''यूनान-ओ- मिस्र रूमा, सब मिट गए जहां से, अब तक मगर है बाकी, नाम-ओ-निशां हमारा, वुछ बात है कि हस्ती, मिटती नहीं हमारी, सदियों रहा है दुश्मन, दौर-ए-जमां हमारा।'' इन्हीं खूबियों की वजह से आज हम सारे जहां में अतुलनीय और लाजवाब हैं। जहां सभी देश और धर्म अपने आप को श्रेष्ठ और अन्य को निम्नतर होने का दावा करते हैं, वहीं भारत ने ईंसा पूर्व 6वीं शताब्दी में बहुजन हिताय बहुजन सुखाय का उद्घोष किया और पहली बार इस विचार को जन्म दिया कि जिस तरह हम अच्छे हैं उसी तरह आप भी अच्छे हैं। दुनिया के मान्यता प्राप्त 195 देशों में भारत एक मात्र ऐसा देश है जहां लगभग केवल हर धर्म के अनुयायी ही नहीं अपितु उसके उप-धर्म व पंथों के अनुयायी भी पूरी धार्मिक और सामाजिक आजादी के साथ जिन्दगी गुजारते हैं। जिस धर्म को किसी भी देश ने जगह नहीं दिया, उस को भी भारत ने सम्मानपूर्वक फलने-पूलने का समान अवसर प्रदान किया है। हम इस कारण सेक्युलर नहीं हैं कि हमारा संविधान सेक्युलर है, बल्कि हमारा सनातनी विचार न केवल मनुष्यों का अत्यधिक सम्मान करना सिखाता है बल्कि इस पृथ्वी पर ईश्वर द्वारा रचित सभी प्राणियों से स्नेह भाव रखने की प्रेरणा देता है। सभी धर्मो और पंथों का आदर करना हमारे सांस्कृतिक डीएनए में सम्मिलित है और ये सभी गुण भारत के संविधान में भली भांति प्रतिबिबित हुए हैं। यह धारणा कि हम अनेक से एक हुए हैं न केवल आधारहीन बल्कि भ्रमित करने वाला भी है। हम एक से अनेक हुए हैं। जिस प्रकार एक दरख्त में उसकी शाखाएं होती हैं, उसके पत्ते होते हैं, उसके टहनियां होती हैं, उसके फल और पूल होते हैं, ठीक उसी प्रकार भारत में रहने वाले सभी सनातनी थे सभी सनातनी हैं और इनशाल्लाह, सनातनी ही रहेंगे। हां उनकी धार्मिक मान्यताएं भिन्न भिन्न हो सकती हैं पर संस्कृति और पारंपरिक चिंतन उसका एक है। इबादत और पूजा पद्धति अलग हो सकती है लेकिन उसके सोचने का ढंग एक ही होगा। कोईं सनातनी मुसलमान हो सकता है, कोईं सनातनी ईसाईं हो सकता है, कोईं सनातनी सिख हो सकता है और कोईं सनातनी यहूदी हो सकता है क्योंकि यह माटी हमें एक-दूसरे से बांटना सिखाती ही नहीं है। इसकी आजादी और जमानत हमारे देश का संविधान देता है मगर वोट की राजनीति करने वाले और कुछ बाहरी शक्तियों के बहकावे में आने वालों ने इस देश के मुस्लिम कौम को धर्म के जंजाल में इस तरह फंसा कर रख दिया है कि मुसलमान अपनी ही या अपने ही इतिहास, अपने ही परंपरा, अपने ही संस्कार और अपने ही रीति नियम से दूर होते जा रहे हैं। दुर्भाग्य से यह स्थिति केवल भारत में ही देखने को मिलती है। ईंरानी, इंडोनेशियाईं, मलेशियाईं और अरब इस्लाम के अनुयायी होने के बावजूद भी अपने पूर्व इस्लामी इतिहास, परंपरा और संस्कृति को नहीं भूले । यहां तक कि अब पाकिस्तान और बांग्लादेश के भी कुछ मुसलमान अपनी जड़ों की ओर लौटने की कोशिश करने लगे हैं। संभवतः भारत के मुसलमान नए-नए इस्लाम में परिवर्तित हुए थे और यह साबित करना चाहते थे कि वे अरब और ईंरानी से बेहतर मुसलमान हैं इसलिए भारतीय मुसलमानों ने अपने ही तहजीब और तमद्दुन से अलग होना प्रारंभ किया। यही कारण है कि आज भारतीय मुसलमान टोइजम के शिकार हैं। चूंकि भारतीय मुसलमान कम पढ़े-लिखे हैं इसलिए आसानी से गुमराह होते रहे हैं। भारतीय मुसलमानों कों मुस्लिम और मोमिन में फर्क करना होगा। शरीअत का इल्म नहीं। भारतीय मुसलमानों ने कुरान शरीफ पढ़ा ही नहीं; अगर पढ़ा है तो समझा नहीं और समझा है तो उस पर अमल किया नहीं किया। होवूक अल एबाद और होवूक अल्लाह का फलसफा पता नहीं। इसलिए आसानी से गुमराह होते रहे हैं। समान नागरिक संहिता के संदर्भ मे भी यही हो रहा है। मुसलमानों को यह कहकर भ्रमित किया जा रहा है कि आम नागरिक कानून उनकी धार्मिक गतिविधियों में भारी बदलाव लाएगा। इससे उनकी नमाज और रोजा जैसी धार्मिक प्रथाओं में वुछ बदलाव होंगे। यह इस्लाम के पांच स्तंभों में प्रवेश करके हिदू कानून लागू करेगा, जो निति रूप से निराधार और झूठा प्रचार है। सामान्य नागरिक कानून कभी भी किसी भी धार्मिक प्रथाओं की धार्मिक गतिविधियों में हस्तक्षेप नहीं करेगा। इसकी गारंटी संविधान की धारा 25 और 26 देता है। यह कानून केवल विवाह, तलाक, गोद लेने और विरासत से संबंधित है। नीचे कुछ ऐसी बात दी जा रही है जिसे जानकर कोई भी इस कानून के समर्थन में उतर सकता है। शरीयत बनता है, कुरान से, हदीस से, इज्मा और कियास से। जिन कानूनी प्रावधानों की चर्चा कुरान शरीफ में नहीं है, इसका वर्णन हदीस द्वारा किया गया है। यदि कोईं प्रावधान हदीसों में वर्णित नहीं है तो इसका निर्णय इस्लामी विद्वानों के बीच व्यापक परामर्श के बाद लिया जाता है। यदि इस्लामी विद्वान आम सहमति तक पहुंचने में विफल रहते हैं तो अनुमान लगाया जाता है कि कुरान और हदीस के अमुक शब्द या लेखन का यह तात्पर्य हो सकता है। यह इज्मा का ही परिणाम है कि आज इस्लामी न्यायशास्त्र में 5 विचारधाराएं, हन्फी, शाफेईं, मालेकी, हॅम्बली और जाफरी विकसित हुईं हैं और इनके बीच विवाह, तलाक, रखरखाव, विरासत और गोद लेने के संबंध में बहुत सारे मतभेद पाए जाते हैं। उदाहरण के तौर पर अगर कोईं मुसलमान नशे में होने के बावजूद अपनी पत्नी को तलाक दे देता है तो हन्फी मजहब के अनुसार तलाक हो जाएगा लेकिन इस्लाम का अन्य फिरका इसे तलाक नहीं मानता . एक पत्नी जो हन्फी मजहब की मानने वाली है अगर उसका पति अनियत काल से लापता है, तो उसको उस अवधि तक प्रतीक्षा करनी होगी जब उसकी उम्र के लोगों का निधन हो जाए अर्थात जब उसकी उम्र 90 वर्ष के आसपास हो। हालांकि शाफेईं, मालेकी, हंबली मजहब के अनुसार ऐसी पत्नी को 4 साल तक ही प्रतीक्षा करनी होगी। समान नागरिक कानून लागू हो जाने से हनफी-मालेकी, हम्बली-शाफेईं मजहब के बीच जो मतभेद हैं, समाप्त हो जाएंगे। यह कानून सभी शहरियों को कानून के एक धागा में पिरोने का काम करेगा। वोटबैंक की सियासत को खत्म करने में मददगार साबित होगा। इस से महिलाओं को समान अधिकार मिलेगा और उनकी स्थिति में भी सुधार आएगा, जिस प्रकार फौजदारी के सभी धराएं तमाम नागरिकों पर समान रूप से लागू है ठीक इसी तरह दीवानी की धराएं भी सभी पर समान रूप से लागू होंगी, जिस से भेद-भाव समाप्त होगा। इस्लामी शरीयत के मुताबिक इंसान के ऊपर दो प्रकार के हुवूक हैं। पहला हुवूक खुदा का होता है जैसे उसपर यकीन करना और उस के साथ किसी को शरीक न मानना, उसके द्वारा भेजे गए सभी दूतों पर विश्वास करना और उनकी आज्ञाओं का पालन करना।

आर्थिक तंत्र पर बोझ बनती प्राकृतिक विपदाएं

संजीव ठाकुर

आपदा सदैव अनअपेक्षित घटना होती है। जो मानवीय नियंत्रण से सदैव से बाहर होती है। प्राकृतिक आपदा अल्प समय में बिना किसी पूर्व सूचना के घटित होती है, जिससे मानव जीवन के सारे क्रियाकलाप अवरुद्ध हो कर,जान और माल की बड़ी हानि होती है । आर्थिक तंत्र,विकास नष्ट हो जाते हैं। आपदा की विद्रूपता, भयानक स्वरूप एवं निरंतरता मानव जीवन और समाज और देश को बड़ी हानि पहुंचाकर उस देश की आर्थिक स्थिति में गहरी चोट करते हैं राष्ट्र को आर्थिक रूप से बहुत पीछे खींच कर ले जातें हैं।

आपदा प्रबंधन में जापान से सीख ली जा सकती है। क्योंकि जापान आपदा प्रबंधन में विश्व में अग्रणी देश माना जाता है। जापान पृथ्वी के ऐसे क्षेत्र में अवस्थित है, जहां भूकंप, सुनामी, ज्वालामुखी जैसी प्राकृतिक आपदाएं सदैव आती रहती हैं। जापान में आपदा प्रबंधन की अत्याधुनिक तकनीक को याकोहामा रणनीति कहा जाता है। जापान में आपदा प्रबंधन की साल भर नियमित रूप से मॉनिटरिंग कर एक्सरसाइज की जाती रहती है, एवं आपदाओं पर निरंतर निगरानी तथा नजर रखी जाती है,एवं इसके निदान के लिए पूर्व से ही सुनियोजित योजना बनाकर नागरिकों को सुरक्षित कर लिया जाता है। भारत को भी इसी तरह आपदा प्रबंधन को अपनाकर अन्य आपदाओं के साथ सतर्क होकर कार्रवाई की जानी चाहिए। आपदाओं के प्रति मानवीय सभ्यता के संदर्भ में समाज के आर्थिक सामाजिक रूप से कमजोर वर्ग को ज्यादा प्रभावित करती है एवं समाज का सबसे संवेदनशील तबका यानी वृद्ध व्यक्ति, महिलाएं, बच्चों, दिव्यांग लोगों को प्राकृतिक आपदाओं से सबसे ज्यादा खतरा बना रहता है। आपदा के समय सबसे ज्यादा निम्न आय वर्ग के व्यक्ति तथा मजदूर तबके के व्यक्ति प्रभावित होतें हैं उनकी दिनचर्या सामूहिक रूप से छिन्न-भिन्न हो जाती है आर्थिक साधन भी नष्ट हो जाते हैं, जिससे उसे आजीविका की एक बडी विडंबना सताने लगती है। भारत के भू भाग का लगभग 58% क्षेत्र भूकंप की संभावना वाला क्षेत्र है, जिसमें हिमालयिन क्षेत्र,पूर्वोत्तर राज्य, गुजरात का कुछ क्षेत्र, अंडमान निकोबार द्वीप समूह भूकंप की दृष्टि से सबसे सक्रीय क्षेत्र रहें है। देश के 65 से 68% भूभाग पर कभी कम कभी ज्यादा भीषण रूप से सूखा पड़ता है, इसी तरह भारत के पश्चिमी और प्रायद्वीपीय राज्य में मुख्यतः शुष्क तथा अर्ध शुष्क न्यून नमी वाले क्षेत्र सूखे से सदैव प्रभावित रहते हैं। बाढ़ से प्रभावित भूमि का विस्तार क्षेत्र देश के 12% है, यानी 7 करोड़ हेक्टेयर जमीन में भूकंप आने की संभावना सदैव बनी रहती है। हिमालय क्षेत्र देश के पर्वतीय क्षेत्र में भूस्खलन की गंभीर समस्या की संभावना सदैव बनी रहती है। देश के विशाल तटवर्ती क्षेत्र में चक्रवात तथा सुनामी की भयावह स्थिति की संभावना रहती है।भारत नें विश्व के साथ-साथ करोना संक्रमण की भयानक महामारी से प्रभावित होकर हजारों लाखों नागरिकों की जान गवा कर इस आपदा से जंग लडी है, यह कोविड-19 की महामारी या आपदा प्राकृतिक है या मानव निर्मित यह तो भविष्य ही बताएगा, किंतु इस महामारी ने पूरे वैश्विक स्तर पर आकस्मिक रूप से मानव जीवन में मृत्यु का तांडव मचा के रख दिया था। ऐसी ही अनपेक्षित आपदाओं का पूर्वानुमान अथवा आकलन किया जाना पहले से संभव नहीं हो सकता है। ऐसे में राष्ट्रीय अन्य योजनाओं के साथ-साथ आपदा प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विषय पर अत्यधिक सावधानी पूर्वक योजना तथा विभाग बनाने चाहिए, देश में जापान जैसे देश की तरह आपदा प्रबंधन से निपटने के लिए अत्याधुनिक आपदा प्रबंधन सिस्टम को तैनात कर तैयार रखने की आवश्यकता होगी। भारत को आपदा प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विभाग को चुस्त-दुरुस्त तथा अत्याधुनिक तकनीक से युक्त रखने की आवश्यकता है। तूफानी चक्रवात, सुनामी, भूस्खलन, भूकंप, सूखा बाढ़ के अलावा अब कोविड-19 यानी करोना संक्रमण जैसी खतरनाक बीमारियां भारत देश को अपना निशाना बना कर रखा है ।ऐसे में भारत में मध्यम दर्जे का या निम्न दर्जे का आपदा प्रबंधन सिस्टम किसी भी काम का ना रहेगा, एवं इससे भारी जानमाल की हानि होने की संभावना सदैव बनी रहेगी। भारत में आपदा प्रबंधन के लिए 1990 में कृषि मंत्रालय के अंतर्गत डिजास्टर मैनेजमेंट सेल स्थापित किया गया था।

लेकिन 1993 में लातूर के भूकंप तथा 1998 में मालपा के भूस्खलन तथा 1999 में ओडिशा में सुपर साइक्लोन तथा 2001 में भुज के भूकंप के बाद देश में एक मजबूत आपदा प्रबंधन की व्यवस्था की जरूरत को महसूस करते हुए जे,सी, पंत जी की अध्यक्षता में हाई पावर कमेटी की रिपोर्ट में एक सुव्यवस्थित तथा व्यापक सिस्टम तथा विभाग की स्थापना की आवश्यकता प्रतिवेदित की गई थी। 2002 में आपदा को देश की आंतरिक सुरक्षा का मामला मानते हुए आपदा को गृह मंत्रालय के अंतर्गत समाविष्ट किया गया। आपदा प्रबंधन के इतिहास में 2005 में एक बड़ा परिवर्तन लाया गया भारत सरकार ने आपदा को अपनी कार्ययोजना के एक चक्रीय क्रम के रूप में प्रबंधित किया, जिसमें आपदा आ जाने के बाद इसके बचाव, नुकसान की भरपाई, निदान तथा आपदा आने के पूर्व की तैयारी तथा योजना को मूर्त रूप देने का एक सुनियोजित तरीका तैयार किया गया था। आपदा से खतरे का स्तर सभी इंसानों के लिए सदैव एक जैसा होता है। किंतु समाज के विभिन्न वर्गों में खतरे से निपटने तथा जूझने की क्षमता अलग-अलग होती है। निम्न वर्ग का तबका अन्य लोगों की अपेक्षा आपदा से ज्यादा प्रभावित होता है। अतः सरकार को गरीब तथा वंचित वर्ग के तबके के लिए आपदा प्रबंधन में विशेष प्रावधान दिया जाना चाहिए। आपदाओं के प्रबंधन एवं अनुसंधान व त्वरित कार्रवाई के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान तथा राष्ट्रीय आपदा कार्रवाई बल का गठन किया गया है। यह आपदा राशि कार्रवाई बल पर किसी खतरनाक आपदा की स्थिति में रासायनिक, जैविक, परमाणु विकिरण तथा अन्य प्राकृतिक एवं मानव निर्मित आपदा के संबंध में विशिष्ट कार्यवाही के निर्वहन का उत्तरदायित्व है। ईस संस्था ने बंगाल तथा उड़ीसा के तटीय क्षेत्र में आई सुनामी में काफी बड़ी संख्या में लोगों की जान भी बचाई है। चक्रवाती तूफान से निपटने में हमारे समुचित प्रयासों ने यह सिद्ध कर दिया है कि हाल के वर्षों में आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई है। परंतु पिछले 3 वर्षों से करोना संक्रमण से हुई बड़ी संख्या में मृत्यु ने देश को हिला कर रख दिया था।अगर आपदा प्रबंधन सिस्टम को लगातार मॉनिटर किया जाता एवं उस सिस्टम के अधिकारी जिम्मेदार व्यक्ति सचेत एवं सजग रहते, तो द्वितीय लहर में इस तरह हड़कंप संक्रमण एवं मृत्यु का सामना नहीं करना पड़ता। भारत को आपदा प्रबंधन के सिस्टम पर फिर से आंकलन कर एक नई व्यूह रचना बनाकर गरीब तबके निचले व्यक्ति तथा समग्र रूप से मानव जाति की सुरक्षा के लिए नए-नए उपाय करने चाहिए क्योंकि आपदा कभी बताकर नहीं आती है।

वैश्विक समर्थन के बिना 'ओजोन परत' का संरक्षण असंभव ?

डॉ. रमेश ठाकुर

प्राकृतिक परंपरा से लेकर मानव जीवन के जीने की जरूरतें तक, ओजोन परत पर निर्भर है जिसके संरक्षण और हानि पहुंचाने वाले पदार्थों से छुटकारा पाने के मकसद से ही प्रत्येक वर्ष 16 सितंबर को 'विश्व ओजोन दिवस' मनाया जाता है। वर्ष-1994 को संयुक्त राष्ट्र में आयोजित महासभा ने 16 सितंबर को ओजोन परत के संरक्षण के लिए ये अंतर्राष्ट्रीय दिवस घोषित किया हुआ था, जो साल-1987 में ओजोन परत को नष्ट करने वाले पदार्थों पर मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल पर करीब 49 देशों ने अपनी सहमति के लिए हस्ताक्षर किए। दिवस को मनाने का उद्देश्य ओजोन परत के संबंध में लोगों को जागरूक करना और बचाने के ओर प्रेरित करना। ओजोन परत, पृथ्वी की सतह से करीब 15 से 30 किलोमीटर ऊपर समताप मंडल में मौजूद है। ओजोन परत, जो यूवी किरणों को कम करके पृथ्वी पर मानव जीवन का संचालन करती है जिसके प्रभाव से ही जमीनों पर उगने वाली विभिन्न किस्म की फसलें पैदा होती है। ओजोन परत की जब थोड़ी सी कमी महसूस होने लगती है तो धरती पर ऑक्सीजन, खाद्य और पर्यावरण में बदलाव दिखने शुरू हो जाते हैं। ओजोन परत को नुकसान पहुंचाने वाले पदार्थ इस समय संपूर्ण संसार में बहुतेरे हैं। जैसे, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन ऑक्साइड जैसी प्रतिक्रियाशील गैसों के अलावा क्लोरीन और ब्रोमीन युक्त गैसें भी जनजीवन के क्रियाकलापों में कोहराम मचा रही हैं। वहीं, क्लोरोफ़्लोरोकार्बन, जैसे सीएफ़सी-11, सीएफ़सी-12, और सीएफ़सी-113, कार्बन टेट्राक्लोराइड, मिथाइल क्लोरोफ़ॉर्म रेफ़्रिजरेंट गैसें जो हाइड्रोक्लोरोफ़्लोरोकार्बन भी मौजूदा वक्त में ओजोन परत को क्षति पहुंचा रही हैं। सभी मुल्कों की कोशिशें हैं कि इन गैसों और पदार्थों की निर्भरता को किसी सूरत में कम किया जाए, जिसके संबंध में 16 सितंबर 2009 को वियना में हुई आम सभा में सम्मिलित सभी देशों के मध्य एक कार्यसमिति भी बनाई गई थी। भारत इस दिशा में बेहतरीन कार्य कर रहा है। केंद्र सरकार में नवगठित 'पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय' इस पर रात दिन काम में जुटा है। ओजोन परत को लेकर विश्व कितना गंभीर है इसका अंदाजा इसी बात से लगा सकते हैं कि उन्होंने 'वैश्विक ओजोन अनुसंधान केंद्र' का गठन कर लगातार पर्यावरण हरकतों पर निगरानी करके वहां से प्राप्त परियोजना रिपोर्ट को सभी देशों से निरंतर साक्षा कर रहे हैं। मानव शरीर में चलती सांसों के लिए ऑक्सीजन के अलावा ओजोन की भी अति आवश्यकता होती है। बिना ओजोन परत के जीवन असंभव हैं? मौजूदा वक्त में ओजोन परत को नुकसान बड़े-बड़े कर कारखानों से निकलने वाली विषेली गैसें जिसे धुंआ बनाकर आकाश में छोड़ा जाता है, ईट भट्टों से निकलता प्रदूर्षण, फैक्टियों का धुंआ भी उपर छोड़ा जाता है। इन्हीं सभी कारणों के चलते जलवायु परिवर्तन हमारे लिए सबसे बड़ा मुद्दा बना हुआ है। मौसम के बदलते पैटर्न से लेकर खाद्य उत्पादन को खतरा पैदा करने वाले समुद्री जलस्तर में वृद्धि तक, जिससे विनाशकारी बाढ़ का खतरा हमेशा मंडरात रहता है। जलवायु परिवर्तन का कुप्रभाव मात्र किसी एक देश पर नहीं है, वैश्विक स्तर पर है और वह भी अभूतपूर्व पैमाने पर? जहरीले पदार्थों पर प्रतिबंध के लिए मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल को कठोर होना होगा और जरूरत पड़ने पर सख्त कार्रवाई भी करनी होगी। वरना, भविष्य में इन प्रभावों का अनुकूल होना अधिक कठिन और महंगा होगा। ओजोन परत के पूर्ण संरक्षण को लेकर विकसित देशों में 2030 तक और विकासशील देशों में 2040 तक अंतिम चरणबद्ध समाप्ति की योजना बनाई गई है। सन् 2007 में, मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के पक्षकार देशों ने कार्यक्रम में तेजी लाने के कुछ कठोर निर्णय लिए थे, लेकिन बाद में कुछ देश इस लक्ष्य से पीछे हट गए। उसके बाद 2009 में फिर से संधी बनाई, तब कहीं जाकर सदस्य देशों में 2030 और 2040 तक का लक्ष्य निर्धारित हुआ। इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए सभी देश अपने यहां ओजोन संरक्षण की दिशा में काम में जुटे हैं। भारत में केंद्र सरकार ने बकायदा इसको लेकर एक अलग मंत्रालय भी बनाया है जिसे 'पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय' का नाम दिया है, जिसमें सैकड़ों की संख्या में वैज्ञानिक इसी काम में जुटे हैं कि कैसे ओजोन परत को सहजा जाए। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय का काम है, पृथ्वी से जुड़ी घटनाओं जैसे ओजोन परत पर निगरानी, बदलते मौसम की हरकतों पर निगाह, जलवायु, भूकंप, सुनामी, आर्कटिक, अंटार्टिक, और दक्षिणी सागरों की स्थिति, समुद्री संपत्तियों के अन्वेषण जैसे तमाम विज्ञान-प्रौद्योगिकी से जुड़े अनुसंधानों पर पैनी नजर रखना होता है। दरअसल, ये ऐसा वैज्ञानिक पर्यावरणीय विषय है जिसमें आमजन की भागीदारी कम, हुकूमतों की ज्यादा रहती है। ओजोन परत की रखवाली कोई एक मुल्क नहीं कर सकता. इसमें संपूर्ण विश्व को सामूहिक समर्थन देना होगा।

हे पार्थ विवाद से मत डरो

रेखा शाह आरबी

इस धरती पर जन्म लेने की सार्थकता इतनी ही है कि आपको चार लोग जानते हो। चार लोगों का जानना बहुत जरूरी है। यह जो चार लोग आपको जानते हैं। यही आपकी इस दुनिया में कमाई जमा पूंजी है। वरना लाखों करोड़ों लोग कीड़े-मकोड़े के तरह पैदा होते हैं और मर जाते है।कौन कब जिया मरा किसको फर्क पड़ता है । आप इस दुनिया के बारे में और क्या और कितना जानते हैं। इसका महत्व सिर्फ आपके लिए होगा। जिसका कुछ भी खास फायदा आपको नहीं होने वाला है । पर चार लोगों के जानने का फायदा निश्चित रूप से आपको होगा। आर्थिक रूप से भी होगा और सामाजिक रूप से भी होगा। अब यह समस्या सामने आ सकती है कि चार लोग आखिर जाने तो कैसे जाने । ख्याति बढ़े तो कैसे बढ़े । तो ख्याति बढ़ाने का सबसे प्रसिद्ध और पुराना फॉर्मूला है। ऊपर वाले का नाम लीजिए और कूद जाइए किसी विवाद में या स्वयं ही कोई विवाद खड़ा कर दीजिए। और ऐसा विवाद खड़ा कीजिए कि हर किसी को आपका चेहरा बॉलीवुड के फेमस स्टार की तरह याद हो जाए।आजकल यह ट्रेड बहुत जोरो पर है। वैसे आपको बता दिया जाए बॉलीवुड के बहुत अच्छे-अच्छे ईस्टार भी फेमस होने के लिए विवादों का ही सहारा लेते हैं। निर्विवाद कोई नहीं है और निर्विवाद रहना उचित भी नहीं है। कहीं पर इज्जत ही नहीं मिलती है । विवादित रहिए सुखी रहिए ।इस दौर में तो बड़े- बड़े सेलिब्रिटी, लेखक, राजनीतिक,समाजसेवी सब कुछ ना कुछ विवाद किये ही रहते हैं । और जिनका कोई विवाद नहीं है उनका कोई भविष्य नहीं है। जब कुछ नहीं रहता है तब सारे विवादों के सहारे ही अपना बेड़ा पार करवाते हैं। तो भला आप अपने को तोप क्यों समझ रहे हैं। आप भी विवादों के सहारे अपना बेड़ा पार कीजिए । क्या आप उनसे ज्यादा पैसे वाले धन वाले हैं। अगर नहीं है तो उनके पद चिन्ह पर चलिए। हां एक बात ध्यान रखने की है जब भी विवाद के लिए किसी व्यक्ति का चुनाव करें । तो एकदम लीचड़ और मुंहफट टाइप के व्यक्ति का ही चुनाव करें। जो आपके बारे में बुरा से बुरा बोलने की क्षमता रखता हो। जिसकी कथनी और करनी में भयंकर अंतर हो । और जनता इस बात को जानती हो । इस तरह यह होगा कि जनता की सहानुभूति शुरुआत से ही आपके पक्ष में रहेगी । और उनकी संवेदना भी आपके पक्ष में रहेगी। विवाद निर्विवाद रूप से आजकल के जमाने में सफलता का पैमाना है ।और इसकी सफलता का प्रतिशत बहुत ज्यादा है आप चाहे मानिए या मत मानिए।

अगर घर में करना चाहते हैं गणपति विसर्जन

पहले जान लें सही विधि और नियम

गणेश विसर्जन 2024 मुहूर्त

गणेश विसर्जन के लिए अनंत चतुर्दशी तिथि सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है। इसी दिन गणपति उत्सव का समापन होता है। इस साल अनंत चतुर्दशी तिथि 17 सितंबर को पड़ रही है। तो आइए जानते हैं कि गणेश विसर्जन के लिए 17 सितंबर को कौनसा मुहूर्त शुभ रहेगा।

चतुर्दशी तिथि आरंभ- 16 सितंबर को दोपहर 3 बजकर 10 मिनट पर

चतुर्दशी तिथि समाप्त- 17 सितंबर को सुबह 11 बजकर 44 मिनट पर

अपराह्न मुहूर्त (शुभ) - 15:19 से 16:51

सायाह्न मुहूर्त (लाभ) - 19:51 से 21:19

रात्रि मुहूर्त (शुभ, अमृत, चर)- 22:47 से 03:12 (18 सितंबर)

हर साल भाद्रपद माह में शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि को गणेश चतुर्थी का पर्व मनाया जाता है। मान्यता है कि इसी दिन भगवान गणेश का जन्म हुआ था। गणेश चतुर्थी को गणपति उत्सव के रूप में भी जाना जाता है। गणपति उत्सव गणेश चुतर्थी से लेकर अनंत चतुर्दशी तक चलता है। इस दौरान जगह-जगह पर गणेश जी का भव्य पंडाल सजाया जाता है और बप्पा के मंदिरों में खास पूजा-अर्चना की जाती है। इस साल गणपति उत्सव 7 सितंबर से शुरू हो चुका है, जिसका समापन 17 सितंबर 2024 को होगा।

गणेश चतुर्थी में लोग अपने घरों में भी बप्पा की प्रतिमा लाते हैं और उसे विधिपूर्वक स्थापित करते हैं। गणेश को घर में पूरे 10 दिनों तक रखने का विधान लेकिन 1, 3, 5 या 7 दिनों तक भी बप्पा को रखकर उनकी विदाई कर सकते हैं। गणपति जी का विसर्जन धूम के साथ तालाब, नदी या झील में किया जाता है। अगर आप घर में ही गणेश जी की मूर्ति का विसर्जन करना चाहते हैं तो इन बातों का जरूर ध्यान रखें। आइए जानते हैं गणपति विसर्जन की विधि के बारे में।

गणेश विसर्जन की विधि और नियम

गणेश विसर्जन से पहले पूरे परिवार के साथ बप्पा की विधिपूर्वक पूजा करें।

इसके बाद उन्हें लड्डू, फल और मोदक का भोग लगाएं।

अब गणेश जी की आरती करें और मंत्रों का जाप करें।

फिर किसी खुले स्थान पर बड़े और साफ बर्तन में शुद्ध पानी भरें। पानी की मात्रा गणेश जी की मूर्ति के अनुसार रखें।

पानी में गंगाजल मिलाएं और मंत्रों का जप करें।

जयकारों के साथ बप्पा की मूर्ति को उठाएं और पानी में धीरे-धीरे विसर्जित करें।

गणपति जी की प्रतिमा विसर्जित हो जाने के बाद उस पानी को पीपल पेड़ के नीचे या गमले में डाल सकते हैं।

पूजा में उपयोग हुई सामग्रियों को गणेश जी की प्रतिमा के साथ ही विसर्जित कर दें।

गणेश जी के मंत्र

1.वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

2. ॐ ग्लौम गौरी पुत्र,वक्रतुंड,गणपति गुरु गणेश
ग्लौम गणपति,ऋद्धि पति। मेरे दूर करो क्लेश।।

3. ॐ एकदन्ताय विद्धमहे, वक्रतुण्डाय धीमहि, तन्नो दन्ति प्रचोदयात॥

4. ॐ श्रीम गम सौभाग्य गणपतये वर्वर्द सर्वजन्म में वषमान्य नमः॥

मंगलवार को गणेश उत्सव का अंतिम दिन

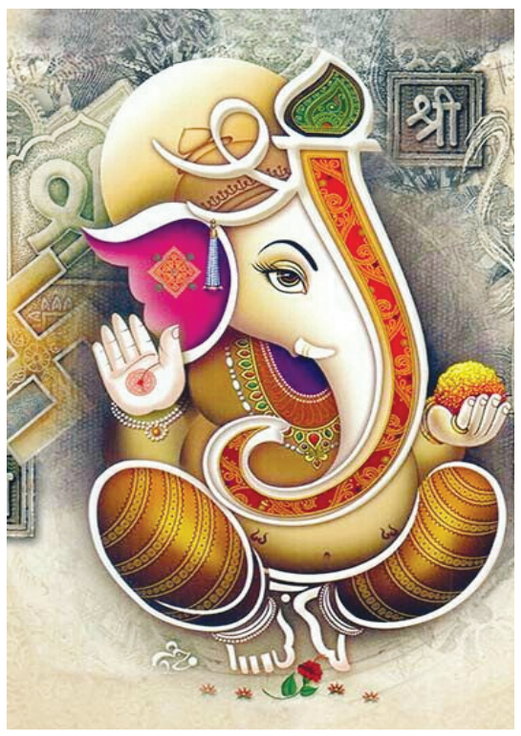

17 सितंबर को गणेश उत्सव का अंतिम दिन है। इस दिन गणेश पूजा के बाद भगवान की प्रतिमा का विसर्जन करना चाहिए। गणेश जी के मंत्र श्री गणेशाय नमः, ऊँ गं गणपतयै नमः का जप करना चाहिए। आप चाहें तो गणपति अथर्वशीर्ष का पाठ भी कर सकते हैं।

गणेश पूजा के साथ ही भगवान शिव, देवी पार्वती, कार्तिकेय स्वामी की भी पूजा जरूर करनी चाहिए। शिवलिंग पर जल चढ़ाएं, चंदन का लेप करें। बिल्व पत्र, धतूरा, आंकड़े के फूल, गुलाब आदि से शिवलिंग का श्रृंगार करें। धूप-दीप जलाएं। मिठाई का भोग लगाएं। ऊँ नमः शिवाय मंत्र का जप करें।

गणेश जी को गजानन भी कहते हैं, क्योंकि गणेश जी का मुख गज यानी हाथी का है। इसलिए अनंत चतुर्दशी पर किसी हाथी को गन्ना जरूर खिलाएं। अगर हाथी न मिले तो गन्ना किसी मंदिर में चढ़ा सकते हैं।

पितृ पक्ष में पितरों के लिए ऐसे करें धूप-ध्यान

18 सितंबर से पितरों के लिए धूप-ध्यान, पिंडदान और श्राद्ध कर्म करने का पर्व शुरू हो रहा है। पितृ पक्ष 2 अक्टूबर तक रहेगा। इन दिनों में घर-परिवार के मृत सदस्यों की मृत्यु तिथि पर धूप-ध्यान जरूर करें।

धूप-ध्यान करने के लिए दोपहर का समय सबसे अच्छा रहता है। दोपहर करीब 12 बजे गाय के गोबर से बने कंडे जलाएं, जब कंडों से धुआं निकलना बंद हो जाए, तब अंगारों पर गुड़-घी डालें।

पितरों का ध्यान करें और हथेली में जल लेकर अंगूठे की ओर से पितरों को अर्पित करें।

पितृ पक्ष में घर के बाहर कौओं, गायों, कुत्तों के लिए खाना जरूर रखें। चींटियों के लिए आटा डालें। किसी तालाब में मछलियों के लिए आटे की गोलियां बनाकर डालें।

जरूरतमंद लोगों को धन, अनाज, कपड़े, जूते-चप्पल का दान करें।

तीज-त्यौहार के नजरिए से आने वाले दिन बहुत खास हैं। आज (14 सितंबर) जलझूलनी एकादशी है, 17 को अनंत चतुर्दशी है और 18 से पितरों की आराधना का पर्व पितृ पक्ष शुरू हो रहा है। पितृ पक्ष में पूर्णिमा से अमावस्या तक घर-परिवार के मृत सदस्यों को याद किया जाता है, उनके लिए श्राद्ध कर्म और दान-पुण्य किया जाता है। पितृ पक्ष 18 सितंबर से 2 अक्टूबर तक रहेगा। इसके बाद 3 अक्टूबर से नवरात्रि शुरू हो जाएगी।

जलझूलनी एकादशी पर भगवान विष्णु के व्रत-उपवास और विशेष पूजा की जाती है। व्रत करने वाले भक्तों को दिनभर निराहार रहना चाहिए और विष्णु जी की कथाएं पढ़नी-सुननी चाहिए। इस दिन विष्णु जी के मंत्र ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय का जप करना चाहिए। जरूरतमंद लोगों को फल और दूध का दान करें।

अनंत चतुर्दशी पर कर सकते हैं ये शुभ काम

सप्ताह के किस दिन लगाना चाहिए किस रंग का टीका?

यदि कोई व्यक्ति सातों दिन तिलक लगाता है और हर दिन के लिए सही रंग और पदार्थ का चयन करता है, तो उसे जीवन में समस्त ग्रहों का आशीर्वाद प्राप्त होता है। सातों दिन तिलक लगाने से शरीर, मन और आत्मा के संतुलन में वृद्धि होती है। साथ ही, जीवन में शांति, धन और स्वास्थ्य में सुधार होता है।

सोमवार : भगवान शिव का दिन माना जाता है। इस दिन सफेद चंदन या भस्म का टीका लगाना शुभ होता है। इससे मन शांत रहता है और सकारात्मक ऊर्जा मिलती है।

मंगलवार : हनुमान जी और मंगल ग्रह का दिन होने से लाल चंदन या कुमकुम का टीका लगाना चाहिए। इससे साहस और शक्ति मिलती है और जीवन में उन्नति के मार्ग खुलते हैं।

बुधवार: भगवान गणेश और बुध ग्रह से जुड़े इस दिन हरा चंदन या अशोक के पत्ते का तिलक लगाना शुभ माना जाता है। इससे बुद्धि में तीक्ष्णता आती है और व्यापारिक सफलता मिलती है।

गुरुवार : बृहस्पति देव और भगवान विष्णु को समर्पित इस दिन पीला चंदन या हल्दी का तिलक लगाया जाता है। इससे धन, विद्या और सुख-समृद्धि का वास होता है।

शुक्रवार : माता लक्ष्मी और शुक्र ग्रह का दिन होने से सिंदूर या केसर का तिलक लगाना फलदायी होता है। इससे धन और वैभव की प्राप्ति होती है।

शनिवार : शनि देव का दिन होने के कारण इस दिन काला तिलक या शमी के पत्तों का तिलक लगाया जाता है। इससे शनि दोष का निवारण होता है और नकारात्मक ऊर्जा से सुरक्षा मिलती है।

रविवार : सूर्य देव का दिन होने के कारण इस दिन लाल चंदन या सिंदूर का तिलक लगाना चाहिए। यह स्वास्थ्य और सम्मान को बढ़ाता है और जीवन में सफलता दिलाता है।

आज्ञा चक्र हो जाएगा सक्रिय

पंडित संजय उपाध्याय ने बताया कि माथे पर टीका लगाने से धार्मिक कर्मों में प्रगति होती है और व्यक्ति को आध्यात्मिक शांति प्राप्त होती है। इससे मनुष्य को सातों दिन देवताओं का आशीर्वाद मिलता है। माथे पर तिलक लगाने से मस्तिष्क के बीच का भाग (आज्ञा चक्र) सक्रिय होता है, जिससे मानसिक तनाव में कमी आती है और एकाग्रता बढ़ती है।

जीवन की बाधाओं से मिलेगी मुक्ति

ज्योतिष के अनुसार, सातों दिन तिलक लगाने से व्यक्ति को जीवन में सभी प्रकार की बाधाओं से मुक्ति मिलती है और ग्रहों की अनुकूलता से सभी काम सफल होते हैं। इसे नियमित रूप से करने पर विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है और दैवीय कृपा बनी रहती है।

शुभ नहीं है इस साल का पितृ पक्ष 15 दिनों में 2 बार ग्रहण का साया!

गौरतलब है कि इस साल पितृ पक्ष की शुरूआत 17 सितंबर को भाद्रपद पूर्णिमा तिथि से हो रहा है। उस दिन श्राद्ध की पूर्णिमा तिथि होगी। पितृ पक्ष का समापन 2 अक्टूबर को सर्व पितृ अमावस्या यानी आश्विन अमावस्या के दिन होगा । लेकिन क्या आप जानते हैं इस साल पितृ पक्ष में दो बड़ी घटनाएं घटने वाली है। तो चलिए आज हम आपको इस रिपोर्ट में बताते हैं कि इस वर्ष के पितृ पक्ष में वह कौन सी दो बड़ी घटनाएं हैं जो घटने वाली है जिसे अशुभ भी माना जा रहा है।

15 दिनों में 2 बार लगेगा ग्रहण

दरअसल हिंदू पंचांग के अनुसार प्रत्येक वर्ष भाद्रपद माह में पितृ पक्ष की शुरुआत होती है इस वर्ष पितृ पक्ष की शुरुआत 17 सितंबर से हो रही है और 18 सितंबर को पितृपक्ष का पहला श्राद्ध है 2 अक्टूबर को पितृपक्ष का समापन होगा तो वहीं पितृ पक्ष के 15 दिनों के दौरान 2 ग्रहण भी लग रहा है। जिसमें एक सूर्य ग्रहण तो दूसरा चंद्र ग्रहण यह दो बड़ी घटनाएं पितृ पक्ष में घटने वाली है ।

पिंडदान के दौरान इन बातों का रखें ध्यान

अयोध्या के ज्योतिष पंडित कल्कि राम बताते हैं कि पितृ पक्ष के दूसरे दिन 18 सितंबर को भाद्रपद की पूर्णिमा पर साल का दूसरा चंद्र ग्रहण लगेगा। हालांकि यह ग्रहण भारत में नहीं दिखाई देगा इसके बाद पितृपक्ष के अंतिम दिन 2 अक्टूबर को अश्विन अमावस्या पर साल का अंतिम सूर्य ग्रहण भी लगेगा। हालांकि भारत में सूर्यग्रहण भी नहीं दिखाई देगा। दोनों ग्रहण भारत में अदृश्य होंगे। जिसके कारण सूतक भी नहीं लगेगा। हालांकि इन सब के बीच ग्रहण लगने की घटना को सनातन धर्म में अशुभ माना जाता है। ऐसी स्थिति में ग्रहण के दौरान पितरों का श्राद्ध पिंडदान करते समय आपको विशेष सावधानी भी बरतनी पड़ेगी।

पैर हाथ में नहीं इस अंग में काला धागा बांधना है शुभ

क्या पैरों में बांधना चाहिए काला धागा?

ज्योतिषाचार्य, न्यूमेरोलॉजिस्ट और एस्ट्रो वास्तु विशेषज्ञ डॉ. गौरव कुमार दीक्षित जी कहते हैं कि आजकल अधिकतर लोग पैरों में काला बांधे दिख जाते हैं। ऐसा करना सही नहीं है। पैरों में काफी लोग काला धागा बांधते हैं, इससे बचना चाहिए। सनातन धर्म के अनुसार, काले धागे को रक्षा सूत्र कहा गया है। ऐसे में रक्षा सूत्र को पैरों में बांधना अशुभ है। इससे नेगेटिव एनर्जी कम होने की बजाय बढ़ने लगती है। पैर में काला धागा बांधने से शनि की स्थिति खराब हो जाती है। गले में जब भी आप काला धागा बांधे तो इसे खाली ना पहनें। ऐसा करने से भी बचें। उसमें किसी भी तरीके का चांदी या रत्न का लॉकेट डालकर ही पहनें।

शरीर के किस अंग पर बांधें काला धागा?

नजर दोष से बचाने के लिए अक्सर हम सभी अपने छोटे बच्चों, नई दुल्हन को गर्दन में काला पहनाते हैं। ज्योतिषाचार्य डॉ. गौरव कुमार दीक्षित कहते हैं कि इस धागे को कमर में पहनना सबसे उत्तम माना जाता है। भगवान कृष्ण भी कमर पर ही काला धागा पहनते थे। कमर पर काला धागा बांधने से सेहत अच्छी बनी रहती है। बीमारियों के होने का खतरा कम हो जाता है। खासकर, हड्डियों की बीमारी होने का रिस्क कम हो सकता है। रीढ़ की हड्डी भी मजबूत होती है। जिनकी कुंडली में शनि ग्रह कमजोर हैं, उन्हें कमर में काला बांधना चाहिए। यदि शनि कुंडली में मजबूत हो जाए तो ऐसे जातक अपनी जीवन में बहुत तरक्की करते हैं। कमर, बाएं हाथ या गर्दन में काला धागा पहनना चाहते हैं तो इस धागे को किसी शनि मंदिर में ले जाकर शनि देव की मूर्ति से स्पर्श करा कर ही पहनें। आप भैरव बाबा या हुनमान जी की प्रतिमा से भी इस धागे को स्पर्श करा सकते हैं। इस दौरान उनके मंत्रों का उच्चारण करते हुए काला धागा बांध लें। ऐसा धागा बहुत चमत्कारिक लाभ कर सकता है। आप पर शनि देव की कृपा हमेशा बनी रहती है। इतना ही नहीं, यदि हाथों में लाल धागा या मौली पहने हुए हैं तो उसके साथ कभी भी काला धागा ना बांधें।

काला धागा बांधने के फायदे

– महिलाओं को बाएं और पुरुषों को दाएं हाथ में काला धागा बांधना चाहिए।

– जब आप काला धागा बांधते हैं तो यह आपको बुरी नजर लगने से बचाता है।

– नकारात्मक शक्तियों से बचाव के लिए इसे पहना जाता है।

– शरीर में जो नेगेटिव एनर्जी प्रवेश कर जाती है, उसे भी काला धागा अपने अंदर एब्जॉर्ब कर लेता है।

– काला धागा पहनने से मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

– कमर में बांधने से रीढ़ की हड्डी में कोई समस्या नहीं होती।

कब उतारें काला धागा

जब तक वह खुद ही खराब होकर टूट ना जाए, आप उसे पहने रह सकते हैं। खुद से इसे खलने की कोशिश न करें। टूट या खुल जाए तो उसे पीपल के वृक्ष के पास रख आएं। दोबारा से आप नया धागा बांध सकते हैं। ब्लैक धागा को कोई भी जातक पहन सकता है।

कैसे हुई भगवान विश्वकर्मा की उत्पत्ति

कहा जाता है कि प्राचीन काल में जितनी राजधानियां थी, प्रायः सभी विश्वकर्मा की ही बनाई कही जाती हैं। यहां तक कि सतयुग का 'स्वर्ग लोक', त्रेता युग की 'लंका', द्वापर की 'द्वारिका' और कलयुग का 'हस्तिनापुर' आदि विश्वकर्मा द्वारा ही रचित हैं। 'सुदामापुरी' की तत्क्षण रचना के बारे में भी यह कहा जाता है कि उसके निर्माता विश्वकर्मा ही थे। इससे यह आशय लगाया जाता है कि धन-धान्य और सुख-समृद्धि की अभिलाषा रखने वाले पुरुषों को बाबा विश्वकर्मा की पूजा करना आवश्यक और मंगलदायी है।

एक कथा के अनुसार सृष्टि के प्रारंभ में सर्वप्रथम 'नारायण' अर्थात साक्षात विष्णु भगवान सागर में शेषशय्या पर प्रकट हुए। उनके नाभि-कमल से चर्तुमुख ब्रह्मा दृष्टिगोचर हो रहे थे। ब्रह्मा के पुत्र 'धर्म' तथा धर्म के पुत्र 'वास्तुदेव' हुए। कहा जाता है कि धर्म की 'वस्तु' नामक स्त्री से उत्पन्न 'वास्तु' सातवें पुत्र थे, जो शिल्पशास्त्र के आदि प्रवर्तक थे। उन्हीं वास्तुदेव की 'अंगिरसी' नामक पत्नी से विश्वकर्मा उत्पन्न हुए। पिता की भांति विश्वकर्मा भी वास्तुकला के अद्वितीय आचार्य बने।

अनेक रूप हैं भगवान विश्वकर्मा के

भगवान विश्वकर्मा के अनेक रूप बताए जाते हैं- दो बाहु वाले, चार बाहु एवं दस बाहु वाले तथा एक मुख, चार मुख एवं पंचमुख वाले। उनके मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी एवं दैवज्ञ नामक पांच पुत्र हैं। यह भी मान्यता है कि ये पांचों वास्तु शिल्प की अलग-अलग विधाओं में पारंगत थे और उन्होंने कई वस्तुओं का आविष्कार किया। इस प्रसंग में मनु को लोहे से, तो मय को लकड़ी, त्वष्टा को कांसे एवं तांबे, शिल्पी ईंट और दैवज्ञ को सोने-चांदी से जोड़ा जाता है। विश्वकर्मा पर प्रचलित कथा भगवान विश्वकर्मा की महत्ता स्थापित करने वाली एक कथा है।

'देवरा' में सैफ को तेलुगु में संवाद बोलने को लेकर थी संशय

सैफ अली खान बॉलीवुड के मशहूर अभिनेता हैं। उन्होंने बीते कई वर्षों से लगातार दर्शकों का मनोरंजन किया है। हिंदी फिल्मों में अपनी एक अलग पहचान हासिल करने के बाद अब वह अन्य भाषा की फिल्मों को भी वरीयता दे रहे हैं। इस क्रम में उन्होंने हाल में ही तेलुगु भाषा की आगामी फिल्म देवरा से तेलुगु फिल्मों में डेब्यू किया है। इस फिल्म में वह साउथ के मशहूर अभिनेता जूनियर एनटीआर के साथ नजर आने वाले हैं। हाल में ही अभिनेता ने इस फिल्म से जुड़ने और इसमें काम करने का अपना अनुभव साझा किया है।

सैफ ने कहा कि वह फिल्म की शूटिंग के पहले दिन काफी नर्वस थे। इस फिल्म में वह एनटीआर के किरदार देवरा के सामने भैरव बन कर चुनौती पेश करने वाले हैं। निर्देशक संदीप रेड्डी वांगा के साथ बातचीत के दौरान, जूनियर एनटीआर और कोराताला शिवा ने खुलासा किया कि उन्हें इस फिल्म के लिए ओमकारा की वजह से चुना गया। इस बीच सैफ ने बताया कि वो इस फिल्म के लिए शिवा द्वारा कहानी सुनाने की वजह से राजी हुए, लेकिन वह तेलुगु में अपने संवाद बोलने को लेकर संशय में थे।

शूटिंग के पहले दिन घबराए हुए थे सैफ

अभिनेता ने कहा कि शूटिंग के पहले दिन वह काफी घबरा गए थे। उन्होंने कहा, ₹पहले दिन, मुझे एक महिला से ये संवाद बोलने थे, जो अपना किरदार निभा रही थीं। मुझे कुछ संवाद सुनाए गए और मैंने कहा कि मैं कोशिश करूंगा और इसे बोलूंगा। मेरी पीठ से पसीना बहने लगा और मुझे काफी रोमांच महसूस हुआ, जो मैंने लंबे समय से महसूस नहीं किया था। यह मेरे लिए एक नई चीज की तरह थी और मैं घबरा गया था। मुझे लगा था कि मैं इसे ठीक से नहीं कर पाऊंगा।

अभिनेता ने आगे कहा कि जैसे-जैसे समय बीतता गया वह लय में आ गए और उन्हें दो-दो पेज लंबे संवाद भी बोले। अभिनेता ने कहा, मैंने एक या दो लाइन से शुरुवात की, जो कि सही रही। उन्होंने कहा कि आपको ज्यादा बोलना नहीं पड़ेगा, लेकिन कुछ दिनों के बाद, वह मेरे काम से प्रभावित हो गए और मुझे भाषा की आदत हो गई। यह इतना मुश्किल भी नहीं है। उसके बाद अचानक डायलॉग लंबे होने लगे,मैंने कहा कि आपने मुझसे वादा किया था कि यह एक या दो लाइन का होगा। इसके बाद फिर सहायक आता और कहता, 'सर डायलॉग' और वह लगातार बोलता रहता। मैंने कहा कि यह दो पेज का डायलॉग है, तो शिवा सर ने कहा कि आप इसे अब कर सकते हैं और यह सच है, हमने इसे किया। बताते चलें कि देवरा 27 सितंबर को रिलीज हो रही है।

आलिया भट्ट ने दी रिद्धिमा कपूर को जन्मदिन की शुभकामनाएं, ननद-भाभी के बीच है बेहद लगाव

रणबीर कपूर और आलिया भट्ट बॉलीवुड के लोकप्रिय पति-पत्नी की जोड़ियों में से एक हैं। आलिया की रणबीर के परिवारवालों के साथ काफी अच्छी बॉन्डिंग हैं, खासकर रणबीर की बहन रिद्धिमा का साथ वह अक्सर सोशल मीडिया पर मस्ती करती या प्यार जताती नजर आती हैं। एक बार फिर आलिया ने रिद्धिमा कपूर साहनी के जन्मदिन पर उन्हें प्यारे अंदाज में जन्मदिन की शुभकानाएं दी हैं। गौरतलब है कि आज, 15 सितंबर, 2024 को रणबीर की बहन और आलिया भट्ट की भाभी रिद्धिमा कपूर साहनी अपना जन्मदिन मना रही हैं।

रिद्धिमा ने अपने सोशल मीडिया पर जन्मदिन के मौके पर एक तस्वीर साझा की है। इस तस्वीर में वह केक के साथ पोज देती नजर आ रही हैं। उनके इस तस्वीर पर कई मशहूर हस्तियों ने प्रतिक्रिया दे कर उन्हें जन्मदिन की शुभकामनाएं दी हैं। इस क्रम में आलिया भट्ट ने भी उनके इस तस्वीर पर कमेंट करते हुए जन्मदिन की शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने इस तस्वीर पर प्रतिक्रिया देते हुए लिखा, ₹जन्मदिन मुबारक हो, खूबसूरत महिला।₹ इस कमेंट में उन्होंने किस करने वाली इमोजी का भी उपयोग किया है। उन्हें आलिया भट्ट के अलावा, मनीष मल्होत्रा, नीलम कोठारी, आयशा श्रॉफ आदि कई अन्य इंडस्ट्री के दोस्तों ने भी जन्मदिन की शुभकामनाएं दी हैं।

हाल में ही गैलाटा इंडिया के साथ एक इंटरव्यू में, रिद्धिमा ने अपनी भाभी आलिया भट्ट की तारीफ की थी। उन्होंने बताया था कि कैसे आलिया ने ऋषि कपूर के निधन के दौरान कपूर परिवार को महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की थी। इसके साथ ही वह रणबीर कपूर के लिए भी सांत्वना का एक महत्वपूर्ण स्रोत बनी थीं। रिद्धिमा ने कहा था कि मुश्किल समय में आलिया ने उनका भी बहुत साथ दिया था और उनके जीवन में सक्रिय रूप से शामिल रही थीं।

इससे पहले भी उन्होंने आलिया की तारीफ करते हुए उन्हें एक बेहतरीन इंसान बताया था और उनकी दयालुता और उदारता का भी जिक्र किया था। उन्होंने कहा कि उनके भाई आलिया को हमसफर के रूप में पा कर सौभाग्यशाली महसूस करते हैं और आलिया भी उन्हें पाकर ऐसा ही महसूस करती हैं। रिद्धिमा के पति भरत साहनी ने भी आलिया की तारीफ करते हुए उनके शांत स्वाभाव की तारीफ की है।

बात करें आलिया के वर्क फ्रंट की, तो आलिया जल्द ही वसन बाली की 'जिगरा' में वेदांग रैना के साथ नजर आएंगी। भावनात्मक रूप से बेहद गहन फिल्म अगले महीने 11 अक्तूबर को रिलीज होगी।

इसके अलावा वह यशराज बैनर की स्पाई यूनिवर्स की अगली कड़ी 'अल्फा' में भी काम कर रही हैं। इस फिल्म में वह शरवरी वाघ के साथ नजर आने वाली हैं। इसके अलावा आलिया भट्ट के पास रणबीर कपूर और विक्की कौशल के साथ संजय लीला भंसाली की फिल्म 'लव एंड वॉर' भी है।

शबाना आजमी ने बॉलीवुड इंडस्ट्री में पूरे किए 50 साल, मिलेगा ये खास सम्मान

बॉलीवुड की दिग्गज अभिनेत्री शबाना आजमी अपनी बेबाकी के लिए जानी जाती हैं। फिर एक बार शबाना आजमी चर्चा में आ गई हैं। शबाना आजमी बॉलीवुड इंडस्ट्री में 50 साल पूरे कर चुकी हैं। उनकी अब तक की बॉलीवुड यात्रा और काम को देखकर टोरंटो फिल्म फेस्टिवल 2024 में शबाना को सम्मानित किया जाएगा।

इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल ऑफ साउथ एशिया में मिलेगा सम्मान

इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल ऑफ साउथ एशिया टोरंटो 2024 के 13वें संस्करण में सम्मानित किया जाएगा। इतने बड़े मंच पर सम्मान मिलना शबाना आजमी के लिए महत्वपूर्ण होगा। यह फिल्म फेस्टिवल दक्षिण एशियाई फिल्म समारोहों में से एक है। बॉलीवुड में शबाना आजमी की स्थायी विरासत का सम्मान करने के लिए मंच ने उन्हें चुना है।

जया बच्चन से प्रेरित होकर सिनेमा में रखा था कदम

शबाना आजमी का जन्म 18 सितंबर 1950 को हैदराबाद में हुआ था। मुंबई के क्वीन मैरी स्कूल में पढ़ने के बाद शबाना आजमी ने सेंट जेवियर्स कॉलेज से मनोविज्ञान में स्नातक किया। शबाना आजमी ने फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (FTII) पुणे से 1973 में अभिनय का कोर्स किया। उन्होंने जया बच्चन से प्रेरित होकर अभिनय की दुनिया में कदम रखा। शबाना आजमी ने मशहूर फिल्मकार श्याम बेनेगल की फिल्म 'अंकुर' में फिल्मी सफर की शुरुआत की और इस क्लासिक फिल्म में नौकरानी की भूमिका निभाई।

पहले भी मिल चुके हैं ये सम्मान

इस फिल्म में अपने अभिनय के बल पर शबाना आजमी ने सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का राष्ट्रीय पुरस्कार जीता। यह फिल्म 1974 में आई थी। शबाना आजमी को अपने काम के लिए कई अवॉर्ड मिल चुके हैं।

शबाना को पांच बार राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिल चुका है। उन्हें कई अंतरराष्ट्रीय सम्मान भी मिल चुके हैं। वह पांच बार फिल्म फेयर अवार्ड भी अपने नाम कर चुकी हैं। 1988 में उन्हें भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया है।

गोरा बच्चा पैदा करने के लिए मसाबा गुप्ता को मिलते हैं अजीबोगरीब टिप्स

अभिनेत्री नीना गुप्ता की बेटी मसाबा गुप्ता अपने पहले बच्चे को जन्म देने वाली हैं। आमतौर पर जब एक औरत बच्चे को जन्म देने वाली होती है, तो उसे ढेर सारी सलाह मिलती है। ऐसा ही कुछ मसाबा के साथ भी हो रहा है।

रिपोर्ट्स के मुताबिक हाल ही में, फेय डिसूजा से बात करते हुए मसाबा ने लोगों के द्वारा उनको दी जा रही अजीबोगरीब और अनुचित सलाहों के बारे में बात की, जिसमें गोरा बच्चा पाने के लिए टिप्स और ट्रिक्स शामिल हैं।

मसाबा ने बातचीत के दौरान बताया कि हाल ही में कोई उनके पास आया और कहा, 'आपको हर दिन एक रसगुल्ला खाना चाहिए क्योंकि आपके बच्चे का रंग आपसे हल्का होना चाहिए।' इसके बाद उन्होंने 15 दिन पहले की एक और घटना को साझा किया गुप्ता की मालिश करने वाली ने उनसे कहा, 'आप ना दूध लिया करो, आपका बच्चा सांवला नहीं होना चाहिए।'

मसाबा ने इन बातों को लेकर कहा कि यह बयान इतनी मासूमियत से दिया गया था कि वह समझ नहीं पाईं की इसका सा म ना कै से करना है।

उन्होंने कहा कि वह केवल यह कर सकती हैं कि अपने बच्चों को इस तरह की चीजों से निपटने के योग्य बना सकें। उन्होंने आगे कहा, 'इस बारे में दबी आवाज में बात की जाएगी, क्योंकि कुछ चीजे अब राजनीतिक रूप से सही नहीं हैं। लेकिन इस बारे में बात की जाएगी। कई बार लोग सोचते हैं कि किसी को 'काली' कहना उन्हें नीचा दिखाने का एक तरीका है, मुझे यह बहुत बेतुका लगता है।'

मसाबा ने कहा कि हम एक बार मालिश करने वाली को छोड़ देते हैं, लेकिन कई शिक्षित, अमीर और पढ़े-लिखे लोग भी ऐसा ही महसूस करते हैं। साबा ने कहा, 'मैं आज तक इसकी गवाह हूँ। यह 2024 है, और यह नहीं बदला है।' मसाबा दिग्गज अभिनेत्री नीना गुप्ता और वेस्टइंडीज के महान क्रिकेटर विवियन रिचर्ड्स की बेटी हैं। उन्होंने जनवरी 2023 में अभिनेता सत्यदीप मिश्रा के साथ शादी की और इस साल अप्रैल में अपनी गर्भावस्था के बारे में घोषणा की।

राजकुमार राव ने की 'द बकिंघम मर्डर्स' की प्रशंसा

बॉलीवुड अभिनेत्री करीना कपूर खान की मर्डर मिस्ट्री थ्रिलर फिल्म 'द बकिंघम मर्डर्स' में नजर आ रही हैं। यह फिल्म 13 सितंबर को रिलीज हुई थी और इसे दर्शकों से जबर्दस्त प्रतिक्रिया मिल रही है। राजकुमार राव ने भी फिल्म की तारीफ की और इसे एक मनोरंजक थ्रिलर बताया। उन्होंने अपने सोशल मीडिया इंस्टाग्राम की स्टोरी पर करीना की इस फिल्म को लेकर एक पोस्ट साझा किया है और अपनी प्रतीक्रिया दी है।

राजकुमार ने की करीना की फिल्म की तारीफ

राजकुमार राव ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर फिल्म से करीना का एक लुक साझा किया और लिखा, ₹सिनेमाघरों में चल रही इस मनोरंजक थ्रिलर को जरूर देखें।₹ बता दें बकिंघम मर्डर्स करीना कपूर और हंसल मेहता की एक साथ पहली फिल्म है। 13 सितंबर, 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज हुई 'द बकिंघम मर्डर्स' में करीना कपूर खान के अलावा ऐश टंडन, रणवीर बरार और कीथ एलन जैसे बेहतरीन कलाकारों ने अहम भूमिका निभाई हैं। हंसल मेहता द्वारा डायरेक्टेड और असीम अरोड़ा, कश्यप कपूर और राघव राज कक्कड़ द्वारा लिखी गई यह कहानी, महाना फिल्म्स और टीबीएम फिल्म्स का प्रोडक्शन है, जिसे बालाजी टेलीफिल्म्स द्वारा प्रेजेंट किया गया है और शोभा कपूर, एकता कपूर और पहली बार प्रोड्यूसर बनीं करीना कपूर खान द्वारा साथ प्रोड्यूस किया गया है।

राजकुमार राव फिलहाल स्त्री 2 की सफलता का आनंद ले रहे हैं। इस फिल्म में राजकुमार के अलावा श्रद्धा कपूर, अभिषेक बनर्जी, अपारशक्ति खुराना और पंकज त्रिपाठी ने अहम भूमिका निभाई है। इस बीच राजकुमार राव की आगामी फिल्म मालिक का पोस्टर जारी हुआ है। इस पोस्टर के साथ राजकुमार राव ने लिखा, 'मालिक की दुनिया में आपका स्वागत है। शूट शुरू हो चुका है जल्द ही मुलाकात होगी'। इस फिल्म के अलावा राजकुमार राव की हॉरर-कॉमेडी स्त्री 3 की भी घोषणा हो चुकी है।

फिल्म 'द बकिंघम मर्डर्स' में अपना जलवा बिखेर चुकीं करीना कपूर खान की कई फिल्में पाइपलाइन में हैं। निर्देशक रोहित शेट्टी की कॉप यूनिवर्स की आगामी फिल्म ''सिंघम अगेन' में करीना नजर आएंगी। यह फिल्म सिंघम फ्रैंचाइजी की तीसरी किस्त है। इस फिल्म में करीना एक

'वो अकेले ही मरेंगे', कॉल मी बे' के सह-कलाकार के लिए अनन्या पांडे ने क्यों कही ऐसी बात?

'कॉल मी बे' स्टार अनन्या पांडे और गुरफतेह पीरजादा इन दिनों अपनी सीरीज और बयानों के कारण चर्चा में हैं। इस सीरीज में दोनों के बीच लवस्टोरी को दिखाया गया है। बातचीत के दौरान गुरफतेह पीरजादा ने एक बात का खुलासा किया है। उन्होंने बताया कि अनन्या सीरीज में अपने सह-कलाकार को लेकर अजीब सी राय रखती हैं। उनका मानना है कि वह अकेले ही मेरेंगे।

अनन्या ने किया था डेटिंग को लेकर गुरफतेह से सवाल

गुरफतेह पीरजादा ने हाउटरफ्लाई ने अपने रिलेशनशिप और डेटिंग लाइफ के बारे में खुलकर बात की। चैट के दौरान, गुरफतेह पीरजादा ने अपनी कॉल मी बे को-स्टार अनन्या पांडे के बारे में भी बात की। उन्होंने बताया कि अनन्या के साथ काम करना 'बहुत मजेदार और बहुत अच्छा' था लेकिन कई अन्य लोगों की तरह, उन्हें भी समझ नहीं आता कि वह किसी को डेट क्यों नहीं कर रहे हैं। इसलिए, शो की शूटिंग के दौरान एक बार अनन्या ने उनसे पूछा 'तो अब आप किसे डेट कर रहे हैं'। इस सवाल पर, अभिनेता न में उत्तर दिया।

'आप अकेले ही मर जाएंगे'

इस पर गुरफतेह के अन्य प्रशंसकों की तरह ही अनन्या ने भी पूछा, 'आप सिंगल कैसे हो सकते हैं?' और उन्होंने कहा, 'आप हो सकते हैं।' इस बारे में विस्तार से बताते हुए, गुरफतेह ने कहा, 'मुझे सिंगल रहना अच्छा लगता है, मैं खुश हूं लेकिन जाहिर तौर पर वह सोचती है कि मैं अकेले ही मर जाऊंगा'।

ओटीटी पर रिलीज हुई है सीरीज

बताता चलें कि 'कॉल मी बे' 6 सितंबर को अमेजन प्राइम वीडियो पर रिलीज हुई है। इस सीरीज से अनन्या पांडे ने अपना ओटीटी डेब्यू किया है। इसका निर्देशन कॉलिन डी'कुन्हा ने किया है और इस सीरीज में कुल आठ एपिसोड हैं। इसका निर्माण धर्माटिक एंटरटेनमेंट द्वारा किया गया है, जिसमें करण जौहर, अपूर्व मेहता और सोमेन मिश्रा कार्यकारी निर्माता हैं।

जूनियर एनटीआर ने अभिनेत्री जान्हवी को बुलाया था - टेप रिकॉर्डर

जूनियर एनटीआर इन दिनों अपनी आगामी फिल्म देवरा को लेकर लगातार चर्चा में बने हुए हैं। इस फिल्म में पहली बार जूनियर एनटीआर और जान्हवी कपूर की रोमांटिक जोड़ी को देखने के लिए प्रशंसक बेकरार हैं। इस फिल्म के सेट पर जान्हवी को पहली बार देखकर जूनियर एनटीआर हैरान हो गए थे। जानें क्यों।

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, जूनियर एनटीआर ने एक इंटरव्यू के दौरान कहा कि जब जान्हवी कपूर देवरा में शामिल हुईं तो उन्होंने उन्हें कम आंका था। तेलुगु सुपरस्टार ने संदीप रेड्डी वांगा के साथ बातचीत में स्वीकार किया कि उन्हें लगा कि जब जान्हवी देवरा में शामिल हुईं तो उन्हें तेलुगु सिनेमा की तरकीबों के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं होगी क्योंकि वह मुंबई फिल्म इंडस्ट्री से हैं। हालांकि, अभिनेता ने कबूल किया कि जब उन्होंने जान्हवी को परफॉर्म करते देखा तो वे चौंक गए थे। जूनियर एनटीआर ने जान्हवी के अभिनय की तारीफ की।

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, जूनियर एनटीआर ने वांगा से बातचीत में कहा, जब मैंने जान्हवी को देखा तो मैं चौंक गया। ये लड़की मुंबई से आई है, क्या पता होगा। (हालांकि उसकी जड़ें दक्षिण भारत में हैं), तेलुगु में बोलना कभी-कभी (कठिन) होता है। लेकिन वह थी (अपनी उंगली से इशारा करते हुए कि वह उससे प्रभावित था।) देवरा का एक सीन था, जिसमें जान्हवी ने अपनी शानदार परफॉर्मेंस से उन्हें चौंका दिया था। जान्हवी ने भी देवरा के सेट की कुछ बातें एक इंटरव्यू के दौरान बताई। जान्हवी ने कहा कि फिल्म के सेट पर उनकी तुलना टेप रिकॉर्डर से की जाती थी क्योंकि वह अपनी लाइनें बहुत अच्छी तरह याद कर लेती थीं। उन्होंने बताया, मुझे सेट पर टेप रिकॉर्डर कहकर बुलाते थे। एक्शन के बाद निर्देशक कहते थे, 'ओके टेप रिकॉर्डर ऑन'।

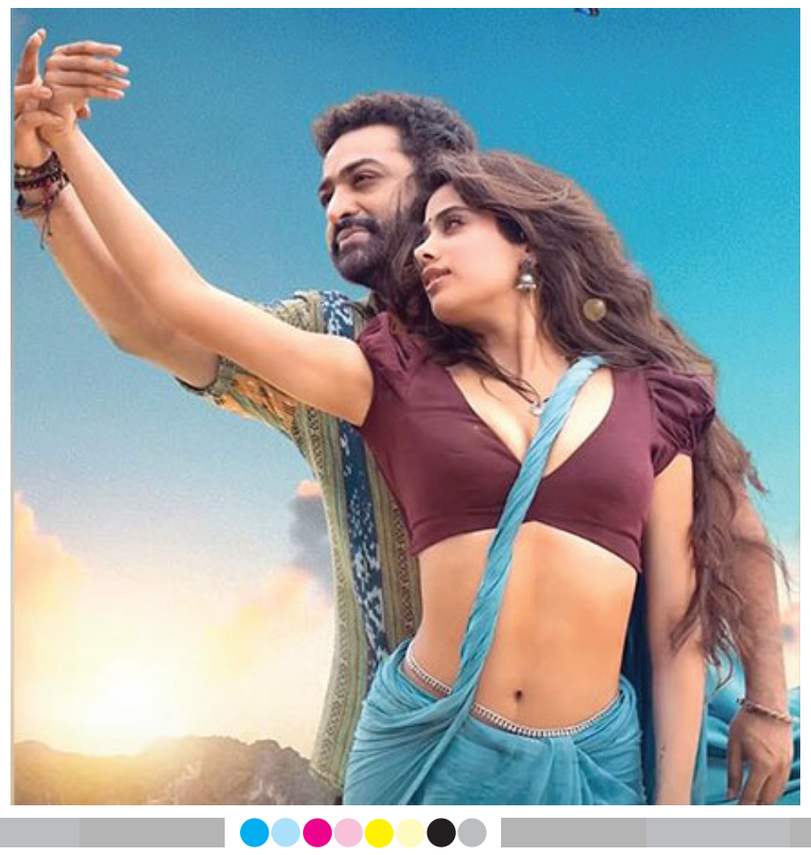

देवरा जान्हवी की पहली तेलुगु फिल्म है। पिछले दिनों जान्हवी ने खुलासा किया था कि उन्होंने इस प्रोजेक्ट को पूरा कर लिया है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, इस साल की शुरुआत में एक इंटरव्यू में जान्हवी ने कहा था, मैंने जूनियर एनटीआर के साथ काम करके वाकई बहुत कुछ हासिल किया है। मुझे लगता है कि एक साल तक मैं यही सोचती रही कि मुझे मौका मिले, मुझे मौका मिले और आखिरकार यह हो रहा है।

बच्चों की याददाश्त बढाने के लिए टिप्स

बच्चों के विकास के लिए स्वस्थ याददाश्त बेहद जरूरी है। कमजोर याददाश्त पढ़ाई से लेकर सभी क्षेत्र में बच्चों के सीखने और विकास करने की क्षमता को प्रभावित करते हैं। कई बच्चों की याददाश्त काफी कमजोर होती है। वे बचपन से ही चीजों को रख कर भूल जाते हैं। शुरुआत में माता-पिता इस समस्याओं को आम समझकर इग्नोर कर देते हैं, लेकिन बाद में यह चिंता का विषय बन जाती है। अगर शुरुआत में ही इनके उपाय करें तो यह गंभीर रूप नहीं लेती। आज का हमारा लेख भी उन्हीं उपायों पर है। आज हम आपको 10 ऐसे ही टिप्स देने जा रहे हैं, जिनकी मदद से आप अपने बच्चों की याददाश्त को बढ़ा सकते हैं।

लर्निंग को बनाएं मजेदार

बच्चों की लर्निंग क्षमता को बढ़ाने के लिए उसे मजेदार बनाना जरूरी है। बुक से नॉर्मल पढ़ाई से बच्चे बोर होने लगते हैं, जिससे उनका मन पढ़ाई में नहीं लगता। आप बच्चों को लाइब्रेरी ले जाएं और वहां उन्हें विभिन्न बुक के माध्यम से पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। साथ ही किसी विषय को समझाने के लिए उन्हें साइंस म्यूजियम और आर्ट गैलरी जैसी जगह भी घुमाएं। यह बच्चों की याददाश्त बढ़ाने में मदद करेगी। क्योंकि किसी विषय के विजुअलाइजेशन से बच्चों को वह तेजी से याद होता है। बच्चों के टीवी देखने का टाइम कम करें। इसके बजाय, उन्हें पढ़ने और अन्य बाहरी गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करें।

व्यायाम कराएं

व्यायाम करना एक ऐसी आदत है जो हर किसी को करना चाहिए। बच्चे जितनी जल्दी प्रतिदिन व्यायाम करने की आदत विकसित करें, उनके लिए उतना ही अच्छा है। शारीरिक रूप से सक्रिय रहने से दिमाग को तेज रहने में मदद मिलती है और दिमाग अच्छे से कार्य करता है।

जोर-जोर से पढ़ने की आदत डालें

किसी भी विषय को अगर बच्चे मन में पढ़ेंगे तो उन्हें जल्दी से याद नहीं होगा, वे उस विषय को जल्दी भूल जाएंगे। ऐसे में आप अपने बच्चों से कहें कि वह जो भी कुछ पढ़ रहे हैं उसे जोर जोर से पढ़ें। इससे उन्हें खुद अपनी आवाज सुनाई देगी और याद करने में आसानी होगी। जोर-जोर से पढ़कर याद करने से बच्चों को वह बातें याद रहती हैं।

अच्छा श्रोता बनाएं

कभी-कभी दूसरों की बातों को सुनना भी जरूरी होता है। अगर हम बिना किसी की बात सुने अपनी बात रखेंगे तो हो सकता है कि लोग उसका गलत मतलब निकालें। ऐसे में माता पिता का फर्ज है कि वह अपने बच्चे को एक अच्छा श्रोता बनाएं। इसके लिए वह सबसे पहले अपने बच्चे को अपनी बात को सुनने के लिए प्रेरित करें। ऐसा करने से उनके अंदर न केवल धैर्य का विकास होगा बल्कि वे दूसरों की बातों को सुनेंगे और समझेंगे।

पैटर्न का प्रयोग कर पढ़ाए

बच्चों को पैटर्न का प्रयोग कर पढ़ाना उनकी याददाश्त में सुधार करने का एक अच्छा तरीका है। पैटर्न के माध्यम से आप उन्हें वर्णमाला सीखने से लेकर वस्तुओं को वर्गीकृत करने तक की जानकारी दे सकती हैं। पैटर्न में कोडिंग और उसे श्रेणीबद्ध कर अभ्यास करने से यह लंबे समय तक याद रहता है।

पढ़ाई के दौरान छोटे-छोटे ब्रेक जरूर लें

लंबे समय तक पढ़ाई के दौरान ध्यान केंद्रित करने के लिए मानसिक विराम लेना जरूरी है। क्योंकि दिमाग को जानकारियां स्टोर करने के लिए थोड़ा समय चाहिए होता है। ब्रेक के दौरान बच्चे पानी पीने, खड़े होने, घूमने, या हल्का व्यायाम जैसे कार्य कर सकते हैं।

ब्राइट कलर का उपयोग करें

अपने बच्चों को पढ़ाते समय ब्राइट कलर्स का उपयोग करना भी याददाश्त बढ़ाने में मदद करता है। ब्राइट कलर्स एक ऐसी चीज है जो हमारे दिमाग में आसानी से आ जाती है और इसलिए इसे आप बच्चों को कुछ समझाने में जरूर इस्तेमाल करें। विभिन्न ब्राइट कलर्स के साथ प्रमुख घटनाक्रमों को हाइलाइट करना और सिलेबस में स्टिकी नोट्स का उपयोग करना फायदेमंद हो सकता है।

पोषक तत्वों की पूर्ति

जब बच्चे एंटीऑक्सिडेंट और ओमेगा -3 फैटी एसिड से भरपूर संतुलित आहार का सेवन करते हैं तो याददाश्त काफी हद तक बढ़ जाती है। चीनी और उच्च कैलोरी वाले भोजन से बचें। इससे बच्चे की याददाश्त के विकास में और मदद मिलेगी। कुछ रिसर्च यह बताती हैं कि अगर डाइट में विटामिन डी विटामिन b1, b12, b6, आयरन, आयोडीन आदि को जोड़ा जाए साथ ही इन सब के साथ एंटीऑक्सीडेंट तत्व को बच्चों की डाइट में जोड़ा जाए तो इससे उनके सोचने समझने की शक्ति पर प्रभाव पड़ता है।

नींद है जरूरी

अगर आपका बच्चा भरपूर नींद लें तो इससे उसकी स्मरण शक्ति बढ़ सकती है। नींद में बच्चों की सोचने, समझने और याद करने की

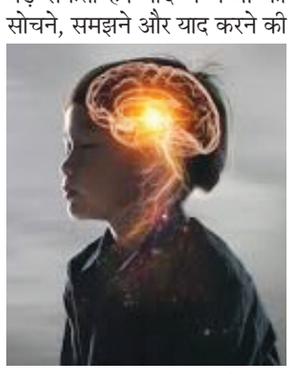

शक्ति को बढ़ावा मिलता है। ऐसे में अगर बच्चे भरपूर नींद नहीं लेते तो इससे उनकी सोचने, समझने की शक्ति पर प्रभाव पड़ता है।

बच्चों को लेकर जाएं बाहर घुमाने

आपके बच्चे जब बाहर घूमने जाएंगे तो इससे वे नई नई चीजों के बारे में जानेंगे, समझेंगे और उन्हें अपने मन ही मन में बार-बार दोहराएंगे। इससे न केवल उनकी नॉलेज बढ़ेगी बल्कि उनका मानसिक विकास भी होगा। यह प्रैक्टिस बच्चों की स्मरण शक्ति को बढ़ाने में भी मददगार है। ऐसे में बच्चों के दायरे को केवल घर तक सीमित ना रखें। उन्हें बाहर घुमाने भी लेकर जाएं।

बोर्ड परीक्षा में बढिया अंक पाने के लिए अपनाएं ये टिप्स

सीबीएसई, सीआईएससीई समेत स्टेट बोर्ड परीक्षाएं मार्च-अप्रैल 2022 में आयोजित की जाएंगी। परीक्षा शुरू होने में अब कुछ ही समय बचा है। ऐसे में स्टूडेंट्स के लिए लास्ट मिनट की तैयारी बेहद जरूरी होती है। बोर्ड परीक्षा से पहले कुछ असरदार सुझाव आपको आत्मविश्वास से भर सकते हैं, आप बिना टेंशन के अपने एग्जाम की तैयारी और बेहतर तरीके से कर सकते हैं। आज हम भी आपके लिए ऐसे ही कुछ जरूरी सुझाव लेकर आए हैं। तनाव को दूर रखते हुए छात्र नीचे दी गई आसान टिप्स की मदद से अपनी बोर्ड परीक्षा की तैयारी कर सकते हैं।

सिलेबस का रिवीजन

अगर आपको यह पता है कि आपको असल में पढ़ना क्या है तो आपकी आधी टेंशन अपने आप ही खत्म हो जाएगी। इसलिए सिलेबल का रिवीजन भी बेहद जरूरी है। परीक्षा की तैयारी के दौरान सिलेबस को बार-बार देखते रहें और उतना ही स्टडी मेटेरियल पढ़ें जितना जरूरी हो। ऐसा करने से ना सिर्फ बेहतर तैयारी होगी बल्कि सारे कॉन्सेप्ट अच्छे से याद हो जाएंगे।

अच्छा स्टडी प्लान

एक अच्छा स्टडी प्लान बनाने से पहले, छात्रों को अपने टाइम और टारगेट को ध्यान में रखना बेहद जरूरी है, खासकर लास्ट मिनट स्टडी के समय। एक स्टडी प्लान न केवल प्रभावी तैयारी सुनिश्चित करता है बल्कि छात्रों को उनके टारगेट स्कोर तक पहुंचने के लिए भी प्रोत्साहित करता है। जब आप छोटो-छोटे टारगेट के साथ पढ़ाई करते हैं तो आपको प्वॉइंट्स अच्छे से क्लीयर हो जाते हैं और तनाव भी नहीं होता।

मॉडल पेपर की सहायता लें

आखिरी समयय में परीक्षा की बेहतर तैयारी के लिए मॉडल पेपर की सहायता ले सकते हैं। इससे कम समय में परीक्षा की अच्छी तैयारी की जा सकती है। आमतौर पर बोर्ड छात्रों की मदद के लिए अपनी ऑफिशियल वेबसाइट पर मॉडल पेपर्स करते हैं। आप वेबसाइट पर जाकर सब्जेक्ट वाइज मॉडल पेपर डाउनलोड कर सकते हैं।

कमजोर विषय पर ध्यान दें

परीक्षा से पहले आमतौर पर छात्र उन विषयों से घबरा जाते हैं, जिनमें उनकी पढ़ाई कम हुई है या उस विषय में कमजोर हैं। ऐसे में छात्रों को उन विषयों पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। क्योंकि बाकी विषयों में कम पढ़ाई करने पर भी वे अच्छे मार्क्स ला सकते हैं लेकिन एक विषय पूरे रिजल्ट का गणित बिगाड़ सकता है।

सक्सेसफुल बिजनेस मैन बनने के लिए जरूरी स्किल्स

क्या आप जानना चाहते हैं वो कौन सी स्किल्स हैं जिनके बल पर आप भी एक सफल उद्यमी, बिजनेसपर्सन या आंत्रप्रेन्योर बन सकते हैं?

*** लोगों से प्रॉपर डील करना**

सभी व्यापार अंततः लोगों से संबंधित होते हैं, और लोगों द्वारा लोगों के लिए किए जाते हैं। किसी आंत्रप्रेन्योर की लाइफ में लोग उसके कस्टमर और कर्मचारियों/सहयोगियों के रूप में आते हैं। मेरे अनुसार किसी भी बिजनेस के जबरदस्त सफल होने के लिए मेन स्किल है लोगों से प्रॉपर तरीके से डील करना। एक आंत्रप्रेन्योर को सभी को खुश रखना होता है। बड़े स्तर पर इसमें ह्यूमन रिसोर्सेज मैनेजमेंट, मीडिया मैनेजमेंट को शामिल किया जा सकता है। एक आंत्रप्रेन्योर को अपने जीवन में कई ऐसे डिसीजन लेने पड़ सकते हैं, जो कुछ को अच्छे न लगें, और इसी प्रकार की स्थितियों को मैनेज करने की स्किल बिजनेस के लिए जरूरी है। विश्व के लगभग सभी सफल उद्यमियों में यह स्किल पाई जाती है। इसके मूल में होती है लोगो की भलाई के लिए सोच, अच्छी कम्युनिकेशन और इंटर-पर्सनल स्किल्स और पॉजिटिव बॉडी लैंग्वेज। यदि आपके पास यह स्किल्स हैं तो निश्चित ही आप के पास एक तगड़ा नेटवर्क बनने लगेगा और अपने व्यापार को तेजी से फैला पाएंगे।

*** लोगों की लाइफ को बेहतर बनाने का उत्साह**

लम्बे समय में, वही व्यापारी बहुत अधिक सफल हो सकता है, जो यह सोचता है कि मेरे प्रोडक्ट्स लोगों के

जीवन को किस तरह बेहतर बनाएंगे। लोगों की बेहतरी को सोच कर डिजाइन किए गए प्रोडक्ट्स हमेशा मार्केट में सफल होते हैं। हालांकि, यह इतना आसान काम नहीं है। इसके लिए सतत फीडबैक के आधार पर प्रोडक्ट्स में डेवलपमेंट/बदलाव करते रहना पड़ते हैं, कई बार तो यह प्रक्रिया कई सालों या हमेशा चलती रहने वाली भी होती है।

*** लॉजिकल, क्रिएटिव थिंकिंग और क्विक लर्निंग**

किसी भी उभरते मुद्दे पर लॉजिकली सोच कर निर्णय लेना एक आंत्रप्रेन्योर के लिए सांस लेने के समान है अर्थात उसे यह हर पल करना होता है। इससे व्यवसाय की समस्याओं को हल करने और व्यवसाय के विकास के लिए रणनीति बनाने में मदद मिलती है। इसमें सूचनाओं को एकत्र करना, तर्कों का मूल्यांकन, काम में विसंगतियों को खोजना सभी शामिल है। अक्सर उद्यमियों को चुनौतीपूर्ण और अप्रत्याशित परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, इसमें किसी वेंचर कैपिटलिस्ट का आगे की फंडिंग से इंकार से लेकर टीम के किसी सदस्य का प्रोजेक्ट के दिशानिर्देशों के अनुसार काम करने से इनकार तक, कुछ भी हो सकता है।

*** फाइनेंशियल मैनेजमेंट**

किसी भी व्यवसाय का अंतिम लक्ष्य धन कमाना होता है। इसके लिए फायनेंशियल स्किल्स जरूरी हैं। इसमें बजट बनाना, फायनेंस का ट्रैक रखना, निवेश किए धन की वापसी कि समय पर निगरानी रखना, जरूरत पड़ने पर फंडिंग की व्यवस्था करना, कैलकुलेटेड रिस्क लेना इत्यादि शामिल है। वेंचर केपिटल, मर्जर्स और एक्विजिशन पर लिखने वाले रिचर्ड हेरोक के अनुसार लगभग हमेशा ही पूंजी जुटाना जितना आपने सोचा हो उससे कठिन होता है, और हमेशा इसमें समय लगता है। इसलिए इस बारे में योजना बनाएं।

कैजुअल लुक्स हो सकते हैं फैशन ट्रेंड

फैशन ट्रेंड को फॉलो करने वालों के लिए यह जानना जरूरी होता है कि नए साल में किन चीजों का बोलबाला रहेगा। खासतौर पर लड़कियां आउटफिट्स के बारे में जानना बेहद पसंद करती हैं। भला फैशन के मामले में अपडेट रहना किसी नहीं पसंद। क्या आपका फेवरेट कैजुअल लुक है? यह लुक कंफर्टेबल के साथ-साथ स्टाइलिश भी लगता है।

कट आउट ड्रेसिस

कट आउट ड्रेसिस देखने में बेहद प्यारी लगती हैं। ऑनलाइन साइट्स पर इस तरह की ड्रेसिस की भरमार है। इस तरह की ड्रेस में कट लगा होता है। इसलिए इसका नाम कट आउट ड्रेस रखा गया है। आपको 400 रूपये में यह ड्रेस मिल जाएगी। यह ड्रेस

लॉन्ग और शॉर्ट दोनों लेंथ में मिलती है। इसलिए आप अपने हिसाब से यह चुन सकती हैं।

लॉन्ग कट आउट ड्रेस के साथ नॉर्मल फुटवियर खूब जंचते हैं। अगर आप शॉर्ट बॉडीकॉन ड्रेस वियर कर रही हैं तो इसके साथ हील्स पहनें। आपको कम से कम एक कट आउट ड्रेस जरूर खरीदनी चाहिए। कैजुअल लुक के लिए यह ड्रेस एकदम बेस्ट ऑप्शन है।

रफल आउटफिट

कैजुअल लुक में रफल आउटफिट्स का कलेक्शन जरूर रखें। इसमें आपको टॉप से लेकर ड्रेस तक सब कुछ मिल जाएगा। टॉप में रफल स्लीव्स बेहद पसंद की जाती है। आप इस तरह के टॉप को आसानी से वियर कर सकती हैं। रफल में व्हाइट टॉप खरीदें। व्हाइट टॉप को आप जींस से लेकर स्कर्ट के साथ पहन सकती हैं। रफल साड़ी का क्रेज भी बेहद बढ़ चुका है। बॉलीवुड एक्ट्रेसेस भी कई इवेंट में इस डिजाइन की साड़ी पहने नजर आ चुकी हैं।

डेनिम आउटफिट्स

डेनिम की जैकेट हो शर्ट, इन्हें पहन एकदम क्लासिक लुक मिलता है। आपको अपने वॉर्डरोब में डेनिम का कलेक्शन रखना चाहिए। अगर आप कैजुअल लुक कैरी कपना पसंद करती हैं तो डेनिम ड्रेस के साथ शूज पहनें। साइड स्लिंग बैग और हुप्स इयररिंग्स से अपने लुक को कंप्लीट करें। इसलिए कम से कम एक डेनिम जैकेट आपके पास जरूर होनी चाहिए। डेनिम जैकेट को आप साड़ी से लेकर शर्ट के साथ पहन सकती हैं। इसे

पहन न केवल आप स्टाइलिश लगेंगी बल्कि ठंड से भी बच जाएंगी। डेनिम जैकेट में भी आपको कई डिजाइन के साथ-

साथ कलर्स मिल जाएंगे।

एनिमल प्रिंट आउटफिट

एनिमल प्रिंट में खासतौर पर जेबरा और चीता से बने आउटफिट का क्रेज है। यह प्रिंट आपको पैंट, शर्ट और ड्रेस में मिल जाएंगे। कैजुअल लुक के लिए आप एनिमल प्रिंट से बनी शर्ट की शॉपिंग करें। इस प्रिंट की जींस बेहद कूल लगती हैं।

सरकारी नौकरी

स्टेनोग्राफर के पद के लिए शुरू हुई आवेदन प्रक्रिया

असम लोक सेवा आयोग ने स्टेनोग्राफर ग्रेड- II पदों पर भर्ती की आधिकारिक अधिसूचना जारी की थी। इसके लिए आवेदन प्रक्रिया शुरू कर दी है। योग्य उम्मीदवार 3 अक्टूबर तक आधिकारिक वेबसाइट apscrecruitment.in के माध्यम से पदों के लिए आवेदन कर सकते हैं। इसके भर्ती अभियान का उद्देश्य दो पदों के लिए 36 रिक्तियों को भरना है। जिसमें स्टेनोग्राफर ग्रेड- II (अंग्रेजी) के लिए 26 रिक्तियां और स्टेनोग्राफर ग्रेड- II (भाषा) के लिए 10 रिक्तियां भरी जानी है। इन भर्तियों के लिए आवेदन प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। आवेदन कर आवेदन शुल्क का भुगतान करने की अंतिम तिथि 5 अक्तूबर है। बता दें कि स्टेनोग्राफर ग्रेड II पद के लिए वेतनमान 22,000 से 97,000 रुपये है।

स्टेनोग्राफर स्टेनोग्राफर ग्रेड II के लिए पात्रता मापदंड

असम लोक सेवा आयोग के स्टेनोग्राफर ग्रेड II के उम्मीदवारों की न्यूनतम शैक्षिक योग्यता किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से डिग्री परीक्षा या समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए। साथ ही आशुलिपि में दक्षता होना आवश्यक है। वहीं उम्मीदवारों की आयु 21 वर्ष से 38 वर्ष के बीच होनी चाहिए। आरक्षित श्रेणियों के उम्मीदवारों को आयु सीमा में छूट मिलेगी।

स्टेनोग्राफर ग्रेड II के लिए ऐसे करें आवेदन

आधिकारिक वेबसाइट apscrecruitment.in पर जाएं।

नवीनतम भर्ती विज्ञापन टैब पर जाएं।

स्टेनोग्राफर ग्रेड II अधिसूचना लिंक के अंतर्गत यहां आवेदन करें पर क्लिक करें।

अपना विवरण भरें और आवेदन शुल्क का भुगतान करें

आवेदन को सुरक्षित रखें और भविष्य के संदर्भ के लिए उसका प्रिंट आउट लें।

एनटीपीसी में डिप्टी मैनेजर बनने का शानदार मौका, 28 तक करें आवेदन

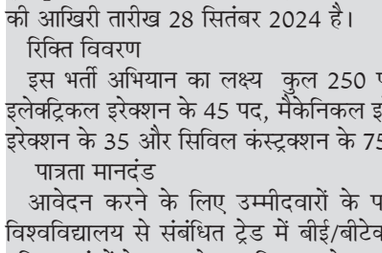

नेशनल थर्मल पावर कॉर्पोरेशन में सरकारी नौकरी की तालाश कर रहे युवाओं के लिए शानदार मौका है। हाल ही में एनटीपीसी ने विभिन्न विभागों में डिप्टी मैनेजर के पदों पर भर्ती निकाली है। इन पदों पर आवेदन प्रक्रिया आज से चालू हो गई है। इच्छुक और योग्य उम्मीदवार आधिकारिक वेबसाइट (ntpc.co.in) पर जाकर आवेदन कर सकते हैं। वहीं आवेदन करने की आखिरी तारीख 28 सितंबर 2024 है।

रिक्ति विवरण

इस भर्ती अभियान का लक्ष्य कुल 250 पदों को भरना है, जिसमें इलेक्ट्रिकल इरेक्शन के 45 पद, मैकेनिकल इरेक्शन के 95 पद, C&I इरेक्शन के 35 और सिविल कंस्ट्रक्शन के 75 पद शामिल है।

पात्रता मानदंड

आवेदन करने के लिए उम्मीदवारों के पास किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से संबंधित ट्रेड में बीई/बीटेक की डिग्री न्यूनतम 60 प्रतिशत अंकों के साथ होना चाहिए। इसके अलावा 10 वर्ष संबंधित क्षेत्र में काम का अनुभव होना भी जरूरी है।

एनटीपीसी की इस भर्ती में शामिल होने के लिए उम्मीदवारों की उम्र अधिकतम 40 वर्ष होनी चाहिए। इससे ऊपर की आयु वाले लोग इन पदों पर योग्य नहीं है।

सैलरी

एनटीपीसी डिप्टी मैनेजर का वेतन ई-4 ग्रेड में होगा और 70,000-2,00,000 रुपये के बीच होगा । वेतन के अलावा, चयनित उम्मीदवारों को कंपनी की नीतियों के अनुसार महंगाई भत्ता, अन्य भत्ते और लाभ आदि भी मिलते हैं।

आवेदन शुल्क

आवेदन के दौरान केवल सामान्य/ओबीसी/ईडब्यलूएस उम्मीदवारों को 300 रुपये का आवेदन शुल्क देना होगा। वहीं अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/महिला/ एक्सएसएम वर्ग के उम्मीदवारों के लिए कोई शुल्क नहीं है।

पहले 100 दिन में एमएसपी और टैक्स से जुड़े अहम फैसले

किसानों और मध्यम वर्ग को फायदे का दावा

नई दिल्ली, 15 सितंबर (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जब लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बने तो उनके मंत्रिमंडल में सहयोगी दलों के मंत्री अधिक शामिल किए गए। पिछले दो कार्यकालों की तुलना में यह सरकार काफी अलग है। सरकार का दावा है कि तीसरे कार्यकाल के पहले 100 दिनों में किसानों और मध्यम वर्ग की आजीविका में सुधार के उद्देश्य से कई महत्वपूर्ण फैसले लिए गए हैं। पीएम मोदी ने प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम-किसान) योजना की 17वीं किस्त जारी करके अपने तीसरे कार्यकाल की शुरुआत की। मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल में कितने किसानों को आर्थिक लाभ मिला, इस पर सरकारी सूत्रों ने बताया कि 9.3 करोड़ किसानों के बीच 20,000 करोड़ रुपये बांटे जा चुके हैं। अब तक कुल 12 करोड़ 33 लाख किसानों के बीच 3 लाख करोड़ रुपये बांटे जा चुके हैं। इसके अलावा सरकार ने वर्ष 2024-25 के लिए खरीफ फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य भी बढ़ाया है। सरकार का दावा है कि एमएसपी बढ़ाने से किसानों को लगभग 2 लाख करोड़ रुपये का लाभ हुआ है। तीसरे कार्यकाल के लिए नौ जून को शपथ ग्रहण के बाद पीएम मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने आंध्र प्रदेश में पोलावरम सिंचाई परियोजना के लिए 12,100 करोड़ रुपये के आवंटन को भी मंजूरी दी। कृषि क्षेत्र में दक्षता और उत्पादकता बढ़ाने के लिए सरकार ने डिजिटल कृषि मिशन सहित 14,200 करोड़ रुपये की सात प्रमुख योजनाओं को भी मंजूरी दी। प्याज और बासमती चावल पर न्यूनतम निर्यात मूल्य (एमईपी) हटाने का फैसला। प्याज पर निर्यात शुल्क 40 फीसदी से घटाकर 20 प्रतिशत करने के फैसले से किसानों को बड़े लाभ की संभावना। जम्मू-कश्मीर में 3,300 करोड़ रुपये की लागत वाली कई कृषि और विकास परियोजनाओं की शुरुआत।मौसम और जलवायु से जुड़े काम के लिए 2000 करोड़ रुपये की लागत वाले मिशन मौसम को मंजूरी। कृषि क्षेत्र में क्रांति, स्टार्ट-अप और ग्रामीण उद्यमों को बढ़ावा देने के लिए 'एग्रीश्योर फंड' की शुरुआत। टैक्स के मोर्चे पर भी अहम फैसला। 7 लाख रुपये तक की आमदनी पर कर नहीं देना होगा। वेतनभोगी 17,500 रुपये तक की बचत कर सकते हैं। आयकर नियमों की व्यापक समीक्षा छह महीने के भीतर होगी। उत्तराखंड के किसानों के लिए उचित दरों पर जैविक उत्पाद खरीदने के लिए समझौता ज्ञापन। लाभ सीधे किसानों के बैंक खातों में जाएगा। सूत्रों के मुताबिक नई राष्ट्रीय सहकारी नीति का मसौदा तैयार होने की प्रक्रिया अंतिम चरण में है।सहकारी चीनी मिलों की इथेनॉल उत्पादन इकाइयों को मल्टी-फीड सुविधा में बदला जाएगा।

300 यूनिट तक बिजली... 78000 रुपये तक सब्सिडी, अब सिर्फ सात दिनों में मिलेगी

नई दिल्ली, 15 सितंबर (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फरवरी में सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना को लॉन्च किया था. इस योजना के तहत कहा जा रहा था कि इसमें 300 यूनिट तक फ्री बिजली मिल सकती है साथ ही सरकार सोलर रूफटॉप लगवाने के लिए सब्सिडी भी देगी. यह सब्सिडी की रकम 78000 रुपये तक होगी. अब इस स्कीम के तहत नया अपडेट सामने आया है. सरकार पीएम सूर्य घर योजना के तहत जल्द से जल्द सब्सिडी देने के लिए काम कर रही है. इसके लिए लंबा इंतजार नहीं करना पड़ेगा.

सिर्फ 7 दिन में जारी हो सकती है सब्सिडी

पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के तहत आवेदन करने वाले लोगों को सब्सिडी सिर्फ 7 दिनों के भीतर मिल सकती है. जबकि अभी इस योजना के तहत सब्सिडी जारी करने में एक महीने तक का वक्त लग जाता है. सरकार सब्सिडी को सात दिन के भीतर जारी करने की योजना पर काम कर रही है और जल्द ही इसे लागू करने की योजना है.

1.30 करोड़ लोगों ने कराया रजिस्ट्रेशन

फरवरी से लेकर अभी तक इस योजना में 18 लाख आवेदन मिल चुके हैं और 1.30 करोड़ लोगों ने रजिस्ट्रेशन कराया है. इस योजना का मुख्य उद्देश्य 300 यूनिट तक बिजली मुफ्त प्रदान की जाए. इस योजना के तहत घर की छत पर सोलर पैनल लगवाए जाते हैं, जिन पर सरकार सब्सिडी देती है. इससे बिजली बिल में कमी आती है. साथ ही आप ज्यादा बिजली उत्पादित करके सरकार को भी बेच सकते हैं।

पश्चिम बंगाल में करोड़ों की जीएसटी डिमांड को चुनौती देगी जोमैटो

पहले करने वाली थी भुगतान

नई दिल्ली, 15 सितंबर (एजेंसियां)। फूड डिलीवरी कंपनी जोमैटो ने हाल ही में मिली एक जीएसटी डिमांड को अब चुनौती देने का मन बना लिया है। पहले कंपनी ने कहा था कि मुकदमा लड़ने की बड़ी लागत को देखते हुए उसका इरादा डिमांड की रकम का भुगतान करने का है। हालांकि अब कंपनी अपने पुराने फैसले से पलटने जा रही है और टैक्स डिमांड को चैलेंज करने वाली है।

जीएसटी डिपार्टमेंट ने भेजा 5. 6 करोड का नोटिस

जोमैटो को यह टैक्स डिमांड पश्चिम बंगाल जीएसटी की ओर से मिली थी। स्टेट जीएसटी डिपार्टमेंट की ओर से भेजे गए जीएसटी नोटिस में फूड डिलीवरी कंपनी से 5.6 करोड़ रुपये की डिमांड की गई है। डिमांड की रकम में बकाया टैक्स, ब्याज और पेनल्टी शामिल है। पश्चिम बंगाल जीएसटी डिपार्टमेंट ने यह नोटिस अप्रैल 2020 से मार्च 2021 की अवधि के लिए भेजा है।

कंपनी ने बनाया अपील का इरादा

फूड डिलीवरी कंपनी ने शनिवार को बताया कि वह इस डिमांड के खिलाफ अपील करने वाली है। हालांकि एक दिन पहले ही यानी 13 सितंबर शुक्रवार को जोमैटो ने कहा था कि वह लिटिगेशन कॉस्ट को देखते हुए डिमांड की गई रकम का भुगतान करेगी। एक दिन बाद कंपनी ने अपना मन बदल लिया है और उसने साफ किया है कि अब उसका इरादा आदेश के खिलाफ अपील करने की है।

मामले पर जोमैटो के बयान

कंपनी ने पहले कहा था- कंपनी को लगता है कि उसका केस मजबूत है। हालांकि लिटिगेशन में होने वाले मोटे खर्च को देखते हुए कंपनी जीएसटी अथॉरिटी के द्वारा की गई डिमांड का भुगतान करेगी। अब कंपनी का कहना है- कंपनी का मानना है कि वह सही है और उसका पक्ष मजबूत है। ऐसे में कंपनी ने उचित प्राधिकरण के समक्ष ऑर्डर के खिलाफ अपील करने का निर्णय लिया है।

इस साल दे चुका मल्टीबैगर रिटर्न

शुक्रवार को जोमैटो का शेयर 3.66 फीसदी गिरकर 273.50 रुपये के भाव पर बंद हुआ था। बीते 6 महीने में जोमैटो का शेयर 70 फीसदी से ज्यादा मजबूत हुआ है। इस साल की शुरुआत से अब तक जोमैटो का शेयर करीब 120 फीसदी रिटर्न दे चुका है। यानी जोमैटो का नाम 2024 के मल्टीबैगर शेयरों में दर्ज हो चुका है।

इंस्टाग्राम पर अरबपतियों का जलवा

टॉप पर डोनाल्ड ट्रंप, गौतम अडानी भी टॉप-10 में

नई दिल्ली, 15 सितंबर (एजेंसियां)।अरबों डॉलर की नेटवर्थ रखने वाले दुनिया के धनकुबेर विभिन्न कारणों से चर्चा में बने रहते हैं. कभी उनकी सादगी चर्चा बटोरती है तो कभी वे लग्जरी लाइफस्टाइल से सुर्खियां बटोरते हैं. अभी दुनिया के अरबपतियों की गिनती सोशल मीडिया पर उनके प्रभाव को लेकर हो रही है.

इस ऑनलाइन प्लेटफॉर्म ने बनाई लिस्ट

टीवाएन मैग्जीन ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर सबसे ज्यादा प्रभाव रखने वाले धनकुबेरों की सूची जारी की है. इस लिस्ट में डोनाल्ड ट्रंप से लेकर इंस्टाग्राम के मालिक मार्क जुकरबर्ग, बिल गेट्स, चांगपेंग झाओ, माइकल ब्लूमबर्ग और गौतम अडानी जैसे अरपबतियों के नाम हैं.

इंस्टाग्राम पर सबसे ज्यादा ट्रंप का प्रभाव

पोर्टल ने पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को इंस्टाग्राम का सबसे प्रभावशाली अरबपति माना है. पोर्टल के अनुसार, उनकी करेंट नेटवर्थ 5.2 बिलियन डॉलर है. इंस्टाग्राम पर अपने प्रभाव का इस्तेमाल कर वह हर पोस्ट से कम से कम 2,24,975 डॉलर की कमाई कर सकते हैं. वहीं एक पोस्ट से उनकी अधिकतम कमाई 3,04,378 डॉलर तक पहुंच सकती है.

जुकरबर्ग और बिल गेट्स भी शामिल

इंस्टाग्राम पर सबसे प्रभावशाली अरबपतियों में डोनाल्ड ट्रंप के बाद दूसरे स्थान पर ओपरा विनफ्रे को रखा गया है. वहीं मेटा के सीईओ मार्क जुकरबर्ग तीसरे स्थान पर हैं. इंस्टाग्राम मेटा की ही एक कंपनी है.

माइक्रोसॉफ्ट के को-फाउंडर बिल गेट्स इस लिस्ट में चौथे स्थान पर हैं. पांचवें स्थान पर वर्जिन गैलेक्टिक के रिचर्ड ब्रैनसन हैं. छठे और सातवें स्थान पर क्रमशः मार्क क्यूबन और शेरिल सैंडबर्ग को रखा गया है.

आठवें नंबर पर गौतम अडानी का नाम

इंस्टाग्राम पर दुनिया के 10 सबसे प्रभावशाली अरबपतियों में भारत से अकेला नाम गौतम अडानी का है. उन्हें लिस्ट में 8वें स्थान पर रखा गया है.

अडानी के बारे में कहा गया है कि वे इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट से कम से कम 7,943 डॉलर और ज्यादा से ज्यादा 10,747 डॉलर की कमाई कर सकते हैं.

9वें स्थान पर माइकल ब्लूमबर्ग हैं, जबकि 10वें पायदान पर चांगपेंग झाओ हैं. इस तरह देखें तो टॉप-10 की लिस्ट में एशिया से सिर्फ दो नाम हैं, जबकि दो ही महिलाएं लिस्ट में शामिल हैं. ये भी पढ़ें: अडानी का बजा डंका, समय की सबसे अच्छी कंपनियों की लिस्ट में अडानी समूह की 8 कंपनी है।

पिछले हफ्ते दिग्गजों ने की खूब कमाई

नई दिल्ली, 15 सितंबर (एजेंसियां)। पिछले हफ्ता शेयर बाजार के लिए जबरदस्त रहा. इस दौरान निवेशकों ने भी खूब कमाई की. वहीं दूसरी ओर देश की दिग्गज कंपनियों पर भी खूब पैसा बरसा. आंकड़ों पर बात करें तो देश की बड़ी टेलीकॉम कंपनियों में शुमार एयरटेल को सबसे ज्यादा फायदा हुआ. वहीं रिलायंस इंडस्ट्रीज सबसे कम फायदे वाली कंपनियों में से एक रही. देश की टॉप कंपनियों में सिर्फ एक ही कंपनी ऐसी रही जिसके मार्केट कैप को नुकसान उठाना पड़ा और वो है देश की सबसे बड़ी इंश्योरेंस कंपनी एलआईसी. जिसके मार्केट कैप से 3 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा कम हो गए. इसके अलावा किसी कंपनी को कोई नुकसान नहीं हुआ. वैसे पिछले हफ्ते देश की टॉप 10 कंपनियों में से 9 कंपनियों के मार्केट कैप में 2,01,552.69 करोड़ रुपए का इजाफा देखने को मिला. एयरटेल के अलावा आईसीआईसीआई बैंक और टीसीएस भी टॉप गेनर में रहे. वैसे पिछले हफ्ते बीएसई बेंचमार्क 1,707.01 अंक या 2.10 फीसदी उछला. 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स गुरुवार को अपने जीवनकाल के उच्चतम स्तर 83,116.19 पर पहुंच गया था. आइए आपको भी बताते हें कि आखिर किस कंपनी को कितना फायदा हुआ है. भारती एयरटेल का मूल्यांकन 54,282.62 करोड़ रुपए बढ़कर 9,30,490.20 करोड़ रुपए हो गया, जो शीर्ष 10 कंपनियों में सबसे अधिक लाभ पाने वाली कंपनी बन गई.देश की दूसरी सबसे बड़ी प्राइवेट लेंडर आईसीआईसीआई बैंक का बाजार पूंजीकरण (एमकैप) 29,662.44 करोड़ रुपए बढ़कर 8,80,867.09 करोड़ रुपए हो गया.देश की सबसे बड़ी आईटी कंपनी में से एक टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज ने 23,427.12 करोड़ रुपए जोड़े, जिससे इसका मूल्यांकन 16,36,189.63 करोड़ रुपए हो गया. देश की सबसे बड़ी एफएमसीजी कंपनी हिंदुस्तान यूनिलीवर का एमकैप 22,438.6 करोड़ रुपए बढ़कर 6,89,358.33 करोड़ रुपए हो गया है. देश के सबसे बड़े प्राइवेट लेंडर एचडीएफसी बैंक का एमकैप 22,093.99 करोड़ रुपए बढ़कर 12,70,035.77 करोड़ रुपए हो गया.देश की बड़ी आईटी कंपनियों में शुमार इंफोसिस का बाजार मूल्यांकन 17,480.49 करोड़ रुपए बढ़कर 8,07,299.55 करोड़ रुपए हो गया है। देश की बड़ी एफएमसीजी कंपनियों में शुमार आईटीसी का 15,194.17 करोड़ रुपए बढ़कर 6,42,531.82 करोड़ रुपए हो गया।

100 करोड़ थी सैलरी

एलोन मस्क ने इस भारतीय को नौकरी से निकाला, अब किया ये

नई दिल्ली, 15 सितंबर (एजेंसियां)। भारत के लोग अमेरिका से लेकर लंदन तक कमाल कर रहे हैं। दुनिया की बड़ी-बड़ी टेक कंपनियों की कमान भारतीयों के हाथों में ही है। कुछ साल पहले ऐसी ही एक बड़ी कंपनी की कमान एक भारतीय के हाथ में थी। उस समय उनका सैलरी पैकेज 100 करोड़ रुपये था, लेकिन एलन मस्क ने अपनी कंपनी से निकाल दिया। जॉब जाने के बाद भी उसने हिम्मत नहीं हारी और आज वह अपनी खुद की कंपनी चला रहे हैं। अक्टूबर 2022 में दुनिया के दिग्गज उद्योगपति एलोन मस्क ने ट्विवटर को 44 अरब डॉलर में खरीदा था। एलन मस्क के द्वारा इसे खरीदने के बाद कई बड़े बदलाव किए गए। एलन मस्क ने ट्विटर का नाम बदलकर एक्स कर दिया था। साथ ही कई कर्मचारियों को भी निकाल दिया था। इसके अलावा, उस समय के सीईओ पराग अग्रवाल को भी निकाल दिया था।

पराग अग्रवाल को एलन मस्क ने क्यों निकाला ?

पराग अग्रवाल आईआईटी ग्रेजुएट हैं, जो एक भारतीय मूल के हैं। ट्विटर के सीईओ के तौर पर पराग अग्रवाल काफी पॉपुलर हुए थे। ट्विटर में सीईओ के पद पर कार्य करते हुए पराग अग्रवाल की सैलरी का पैकेज 100 करोड़ रुपये था। ब्लूमबर्ग के कुर्ट वैगनर की एक किताब के मुताबिक पराग ने एलन मस्क के प्राइवेट जेट की लोकेशन को ट्रैक करने वाले अकाउंट को ब्लॉक करने की रिक्वेस्ट को अस्वीकार कर दिया था। ट्विटर के अधिग्रहण से पहले ये घटना हुई थी, अधिग्रहण के बाद पराग अग्रवाल को एलन मस्क ने निकाल दिया।

पराग अग्रवाल को नहीं मिला था मुआवजा

दावा किया जाता है कि निकाले जाने के बाद पराग अग्रवाल करीब 400 करोड़ रुपये पाने के हकदार थे, लेकिन उन्हें कोई अमाउंट नहीं दिया गया। पराग और अन्य पूर्व ट्विटर अधिकारियों ने मस्क के खिलाफ मुकदमा दायर किया। कुल मिलाकर 1000 करोड़ के मुआवजे के लिए मुकदमा दायर किया गया था। पराग अग्रवाल अब एआई सेक्टर में उतर चुके हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक, उन्हें अपने नए वेंचर के लिए 249 करोड़ की फंडिंग मिली है।

भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में इजाफा

2024 में 66 अरब डॉलर की वृद्धि; आरबीआई ने जारी किए आंकड़े

नई दिल्ली, 15 सितंबर (एजेंसियां)। भारत का विदेशी मुद्रा भंडार पिछले कुछ महीनों से लगातार बढ़ रहा है। इस साल अब तक भारतीय विदेशी मुद्रा भंडार में 66 अरब डॉलर की बढ़ोतरी हुई है और अभी यह 689.235 अरब डॉलर के स्तर पर पहुंच गया है। यह विदेशी मुद्रा भंडार देश की अर्थव्यवस्था को वैश्विक आर्थिक संकटों से बचाने में अहम भूमिका निभाता है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की ओर से जारी हालिया आंकड़ों के मुताबिक, भारत की विदेशी मुद्रा संपत्ति (एफसीए) अब 604.144 अरब डॉलर के स्तर पर है। यह विदेशी मुद्रा भंडार का सबसे बड़ा हिस्सा है। इसके साथ ही, सोने के भंडार की कीमत वर्तमान में 61.988 अरब डॉलर है।

दो साल पहले आई थी 71 अरब डॉलर की कमी

अनुमानों के मुताबिक, भारत का विदेशी मुद्रा भंडार अब करीब एक वर्ष की अनुमानित आयात लागत को कवर करने के लिए पर्याप्त है। कैलेंडर वर्ष 2023 में भारत ने अपने विदेशी मुद्रा भंडार में करीब 58 अरब डॉलर की वृद्धि की थी। इसके विपरीत 2022 में भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में कुल 71 अरब डॉलर की कमी आई थी।

बाजार की अस्थिरता को नियंत्रित करता है आरबीआई

विदेशी मुद्रा भंडार को फॉरेक्स रिजर्व भी कहा जाता है। यह हर देश के केंद्रीय बैंक या मौद्रिक प्रधिकरण द्वारा रखी गईं संपत्तियां होती हैं। ये आमतौर रिजर्व मुद्राओं में रखी जाती हैं, जैसे अमेरिकी डॉलर, यूरो, जापानी येन, पाउंड आदि। आरबीआई विदेशी मुद्रा बाजारों की निगरानी करता है और बाजार की स्थिति व्यवस्थित रखने के लिए दखल देता है। यह बाजार में अस्थिरता को नियंत्रित करने की भी कोशिश करता है। आरबीआई आमतौर पर डॉलर की बिक्री के जरिए लिक्विडिटी प्रबंधन में भी हस्तक्षेप करता है, ताकि रुपये की भारी गिरावट को रोका जा सके।

एशिया के स्थिर मुद्राओं में से एक भारतीय रुपया

एक दशक पहले भारतीय रुपया एशिया की अस्थिर मुद्राओं में से था। लेकिन अब, यह सबसे स्थिर मुद्राओं में से एक बन चुका है।

सरपट दौड़ रही सोने की कीमत, 73 हजार रुपये का आंकड़ा हुआ पार

नई दिल्ली,15 सितंबर (एजेंसियां)। सोने की कीमत पिछले कुछ दिनों से सरपट दौड़ रही है। इसके भाव आसमान पर चढ़ने लगे हैं। एमसीएक्स पर 24 कैरेट सोने का भाव 73 हजार रुपये प्रति 10 ग्राम पार कर गया है। यह अपने उच्चतम शिखर से करीब एक हजार रुपये दूर है। सोना अब 73510 रुपये प्रति 10 ग्राम पहुंच गया है। पिछले हफ्ते से सोने की कीमत में लगातार तेजी देखी जा रही है। जानकारों के मुताबिक अभी त्योहारी सीजन और फिर शादियों का सीजन शुरू होने वाला है। ऐसे में सोने की कीमत में और तेजी देखी जा सकती है। जुलाई में पेश हुए बजट में सोने से कस्टम ड्यूटी कम कर दी गई थी। उस समय सोने की कीमत करीब 74 हजार रुपये प्रति 10 ग्राम थी। कस्टम ड्यूटी कम करने के बाद सोने की कीमत में तेजी से गिरावट आई थी। उसी दिन सोने की कीमत करीब 5 हजार रुपये तक गिर गई थी। काफी समय तक यह कीमत लगभग स्थिर बनी रही। पिछले महीने सोने की कीमत ने 70 हजार रुपये प्रति 10 ग्राम का आंकड़ा पार किया था। इसके बाद इसकी कीमत लगातार बढ़ती जा रही है। सोने की कीमत पिछले एक महीने में काफी बढ़ गई है। इस एक महीने में इसमें 4.56 फीसदी का उछाल आया है। 16 अगस्त को 24 कैरेट सोने की कीमत 70303 रुपये प्रति 10 ग्राम थी। वहीं एक महीने बाद यानी 15 सितंबर को इसकी कीमत 73510 रुपये प्रति 10 ग्राम थी। ऐसे में इसमें एक महीने में 3207 रुपये की बढ़ोतरी हुई है।

दैनिक पंचांग

ग्रह स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य-	सिंह मे	सिंह-	04-06 बजे
चंद्र-	कुंभ मे	कन्या-	06-13 बजे
मंगल	मिथुन मे	तुला-	08-19 बजे
बुध-	सिंह मे	वृश्चिक-	10-29 बजे
गुरु-	वृष मे	धनु-	12-42 बजे
शुक्र-	कन्या मे	मकर...	14-49 बजे
शनि-	कुंभ. मे	कुंभ-	16-40 बजे
राहु-	मीन मे	मीन-	18-17 बजे
केतु-	कन्या मे	मेष--	18-53 बजे
		वृष..	21-38 बजे
		मिथुन..	23-38 बजे
		कर्क..	01-52 बजे

श्री कालयुक्त संवत्सर-विक्रम संवत-2081
शक संवत- 1946 सूर्य -दक्षिणायन- ऋतु -शरद
महावीर निर्वाण संवत -2550,हिजरी सन् -1444
कलियुग अवधि-432000 सूर्योदय - 06-06 सूर्यास्त. -18-17
भोग्य कलि वर्ष-426875
कलियुग संवत -5125 वर्ष,
कल्पारंभ संवत् -1972949125
सृष्टि ग्रहारंभ संवत्-1955885125
दिशाशूल -- पूर्व - कांच मे मुंह देखकर घर से निकले
तिथि- त्रयोदशी 15-10 तक उपरान्त चतुर्दशी
मास - भाद्रपद शुक्ल , सोमवार 16 September
नक्षत्र - धनिष्ठा 16-33 तक उपरान्त शतभिषा
योग - सुकर्मा 11-41 तक उप धृति
करण- तैतिल 15-10 तक उप गर
विशेष:-
व्रत -त्योहार - कन्या मे सूर्य - १९-४३ से

विशेष:- राशिफल ग्रहों के गोचर के आधार पर लिखा गया है।सूक्ष्म फलादेश क लिए जन्म पत्रिका की सूक्ष्म स्थिति जानने के लिए जन्म कुण्डली दिखाना चाहिए।

राहुकाल 07:37 से 09:08 तक

पं महेशचन्द्र शर्मा मो.9247132654,8309517693

दिन का चौघड़िया		रात का चौघड़िया	
अमृत	06:06 - 07:37 शुभ	चंचल	18:17 - 19:45 शुभ
काल	07:37 - 09:08 अशुभ	रोग	19:45 - 21:13 अशुभ
शुभ	09:08 - 10:39 शुभ	काल.	21:13 - 22:42 अशुभ
रोग	10:39 - 12:11 अशुभ	लाभ	22:42 - 00:11 शुभ
उत्पात	12:11 - 13:42 अशुभ	उत्पात	00:11 - 01:39 अशुभ
चंचल.	13:42 - 15:13 शुभ	शुभ.	01:39 - 03:08 शुभ
लाभ	15:13 - 16:45 शुभ	अमृत	03:08 - 04:37 शुभ
अमृत	16:45 - 18:17 शुभ	चंचल	04:37 - 06:06 शुभ

आपका राशिफल

मेष चू,चे, चो, ला, ली, लू , ले, लो, अ,

आज आपको यह अनुभव करने की जरुरत है कि अतीत से चिपके रहने से आपको कोई लाभ होने वाला नहीं है । आपको अपने अतीत से सीखना जरुर है ,परन्तु उसे पकड़े रहने से बात नही बनेगी । अगर आप आज यह समझ पाने में कामयाब हो जाते हैं तो पिछले कुछ समय से आपके जीवन में चली आ रही बड़ी समस्याओं को सुलझाने की दिशा में यह एक बड़ा कदम होगा । आज का दिन आपके कार्य क्षेत्र एवं परिवार के बीच संतुलन रहेगा । पिछले कुछ दिनों से आपको दोनों तरफ काफी ध्यान देना पड़ा है।

वृष ई, उ, ए, जो, वा, वी, वू, वे, वो,

आप सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहे हैं, लेकिन आपकी प्रगति रुक सकती है। अगर आपने किसी भी गैजेट या कुछ रचनात्मक वस्तु का उत्पादन किया है, तो उसे जल्द से जल्द उस पर क़ानूनी एकाधिकार करवा ले । लोग ये साबित करने की कोशिश कर सकते हैं की ये वस्तु उन्ही की है , हालांकि वास्तविकता में वे शायद ही कोई भी उत्पाद की एक प्रतिकृति के निर्माण में आपके करीब आ सकते हैं।

मिथुन का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, ह,

कुछ समय से आपके व्यय बढ रहे थे पर आज से आप इन सब में एक खुशनुमा बदलाव देखेंगे । आखिरकार आपका भाग्य आपका साथ देगा और आपके खर्चे काफी हद तक नियंत्रण में आयेंगे और माहौल बदलता हुआ सा नजर आएगा जिससे आपकी आमदनी बढेगी पर आपको अत्यधिक सावधानी से आगे बढ़ना है ।

कर्क ही, हू ,हे , हो, डा , डी, डू, डे, डो,

आज आपको लक्ष्यों को पूरा करने के लिए मुश्किलो का सामना करना पड़ सकता हैं । उन क्षेत्रों को देखे जहा पहले आपने कार्य नहीं किया है । अन्वेषण आप के लिए आज महत्वपूर्ण रहेगा ।आपको कुछ सार्थक मिल सकता है। अगर आप अपनी नौकरी स्थानांतरण की योजना बना रहे हैं, तो आज का दिन काफी शुभ हो सकता है ।

सिंह मा, मी ,मू ,मे, मो, टा, टी ,टू ,टे,

आपके कार्यस्थल पर तनाव का माहौल है। यह तनाव का माहौल आपकी वजह से नहीं बल्कि , व्यापार में कुछ भारी नुकसान की वजह से हो सकता है। अपने आप में नकारात्मक ऊर्जा न भरे बल्कि इसके बजाय नकारात्मक विचारों की इस लहर के घेरे में आ रहे हैं, उन सभी लोगो को प्रेरित करने का प्रयास करें। आपके खर्चों का प्रबंधन करने के लिए विभिन्न स्रोतों से आवश्यक धन की प्राप्ति होगी ।

कन्या टो पा पी पू ष ण ठ पे पो

आज का दिन आपके लिए व्यस्त रहने की संभावना है क्यों की आपकी उपस्थिति अलग अलग दिशाओं में वांछनीय होगी , हालांकि अपने व्यक्तिगत विकास के लिए आप अधिक से अधिक समय समर्पित करने की कोशिश करे । ऑनलाइन परीक्षाओं या प्रमाणपत्र के लिए ऑनलाइन कुछ मार्गदर्शन की तलाश करें।

तुला रा, री, रू ,रे ,रो , ता, ती, तू ,ते,

जो लोग विलासिता के सामान के व्यवसायों में शामिल हैं , वे लोग आज बहुत लाभ में रहेंगे और साथ ही साथ जो लोग स्वरोजगार में हैं , वे भी अपनी दरों में बढ़ोतरी कर सकते हैं और साथ ही साथ मन वांछित राशि की प्राप्ति कर सकते हैं। उन लोगों पर ध्यान न दें जो लोग आपकी सराहना करने में विफल रहते हैं।

वृश्चिक तो,ना,नी, ने,नू, नो, या, यी ,यू,

एक दोस्त या एक गाइड के माध्यम से छात्रों को एक नया करियर विकल्प मिल सकता है और आप अपने करियर के रूप में इसे चुन सकते हैं पर आपको एक गहन अनुसंधान की सलाह दी जाती है। आज पेशेवरो में नयी उर्जा का संचार हो सकता है । यह किसी भी परियोजना को शुरू करने के लिए एक अच्छा दिन है।

धनु ये, यो,भा, भी, भू धा ,फा, ढा, भे

आपको आगे जाने से पहले अपने वित्तीय और कैरियर से संबंधित योजनाओं के अल्पकालिक और दीर्घकालिक दोनों नतीजों पर विचार करना होगा । आपको कोई भी निर्णय लेने से पहले अपने कैरियर से संबंधित योजना का एक खाका तैयार करना होगा जिससे आप लाभ और हानि का विश्लेषण कर सके दोबारा अपने निर्णय का पुनर्मूल्यांकन करे ।

मकर भो, जा, जी, खो, खू, खे, खो, गा, गी

जो लोग सेवा क्षेत्र में हैं , वे अपनी आय में बढ़ोतरी की उम्मीद कर सकते हैं हालाँकि अगर ऐसा नहीं होता है , तो आप खुलकर अपने विचारो को आवाज दे और ये सुनिश्चित रखे की इसे सुना जायेगा । काम का बोझ जो दिन के मध्य में ऊँचा रहेगा परन्तु उम्मीद है कि दिन के अंत तक वह कम होगा ।

कुंभ गू, गे ,गो, सा, सी, सू, से, सो, दा,

आज आपको अत्यधिक खर्चों का सामना करना पड़ सकता है इसलिए नहीं की वो खर्चे दूर नहीं किये जा सकते थे बल्कि इसलिए की आप खुद उन खर्चों को करना चाहते थे । यह ठीक है की आप अपने मुश्किल समय के लिए पैसे बचाते है जो की बुद्धिमता वाला काम है लेकिन आज आप अपने या अपने किसी ख़ास व्यक्ति जो आपके बहुत निकट है के लिए किसी छोटी सी पार्टी का अयोजन कर सकते है।

मीन दी, दू,थ, झ, ञ, दे, दो, चा,ची

आपका भाग्य आपके वित्तीय उपक्रम को पूरा समर्थन दे रहा है एवं आपकी नौकरी भी काफी अच्छी है परन्तु आपको अपने धन पर ध्यान रखने की जरुरत है जैसे की हम सब जानते है की पैसे पेड पर नहीं उगते है। आपके अपव्यय करने की आदत से आपको अपने निकट के व्यक्तियों से आलोचना सुननी पड़ती है ।

श्री पंचागुली ज्योतिष केन्द्र

हरियाणा के चुनावी दंगल में पहलवान, किसान, जवान तय करेंगे हार-जीत

चंडीगढ़, 15 सितंबर (एक्सक्लूसिव डेस्क)। हरियाणा में होने वाले विधानसभा चुनाव में बीजेपी के लिए मुश्किलें खड़ी हो सकती हैं। पिछले 10 साल से बीजेपी का दबदबा रहा है, लेकिन इस बार पहलवानों, किसानों और अग्निवीर योजना से जुड़े युवाओं में नाराजगी देखने को मिल रही है। इस वजह से बीजेपी को आने वाले चुनाव में नुकसान हो सकता है। पार्टी छोड़कर जाने वाले नेताओं और टिकट न मिलने से नाराज लोगों की वजह से भी बीजेपी की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। हरियाणा में कई क्षेत्रीय पार्टियां भी चुनाव मैदान में हैं, लेकिन माना जा रहा है कि 90 विधानसभा सीटों में से ज्यादातर पर मुकाबला कांग्रेस और बीजेपी के बीच ही होगा। 2024 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी को वोट शेयर और सीटों के मामले में नुकसान उठाना पड़ा था। वहीं, कांग्रेस को फायदा हुआ था।

यह भी ध्यान रखना जरूरी है कि 2019 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी को वोट देने वाले हरियाणा के मतदाताओं ने कुछ ही समय बाद हुए विधानसभा चुनाव में अलग पार्टी को वोट दिया था। ऐसा तब हुआ था जब 2019 के विधानसभा चुनाव में पहलवान, किसान और जवान जैसे मुद्दे नहीं थे। उस समय सिर्फ मनोहर लाल खट्टर की सरकार के कामकाज को लेकर नाराजगी थी। अगर 2019 में हुए लोकसभा चुनाव में शानदार प्रदर्शन के बावजूद बीजेपी विधानसभा चुनाव में अच्छी जीत हासिल नहीं कर पाई, तो इस बार उसके लिए 2019 के प्रदर्शन से बेहतर प्रदर्शन करना मुश्किल होगा।

2019 में भी घटा था बीजेपी का वोट शेयर

दरअसल, 2019 के विधानसभा चुनाव में कुछ महीने पहले हुए लोकसभा चुनाव की तुलना में बीजेपी का वोट शेयर तेजी से घटा था। ऐसे में, 2024 के लोकसभा चुनावों की तुलना में बीजेपी का वोट शेयर और घटने की संभावना है, खासकर जब वह 10 साल पुरानी सरकार के साथ चुनाव लड़ रही है और 2019 की तुलना में सत्ता विरोधी लहर काफी ज्यादा दिख रही है। 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर की जगह नायब सिंह सैनी को मुख्यमंत्री बनाना एक तरह से बीजेपी द्वारा हरियाणा में अपनी सरकार से लोगों की नाराजगी को स्वीकार करना था। कुछ हद तक बीजेपी को 2024 के लोकसभा चुनाव में इसकी सजा मिली थी और तब से लेकर अब तक माहौल में कोई खास बदलाव नहीं आया है।

लोकनीति-सीएसडीएस के सर्वे बताते हैं कि पीएम मोदी की अपने व्यक्तिगत करिश्मे से बीजेपी के लिए वोट जुटाने की क्षमता विधानसभा चुनावों की तुलना में लोकसभा चुनावों में कहीं अधिक मजबूत है। लेकिन राहुल गांधी की लोकप्रियता बढ़ने से बीजेपी के सामने इस मामले में भी चुनौती है। लोकनीति-सीएसडीएस द्वारा किए गए चुनाव बाद सर्वे से संकेत मिलता है कि हरियाणा में, 30% मतदाताओं (2019 के लोकसभा चुनावों में 15%) के बीच राहुल प्रधानमंत्री पद के लिए पसंदीदा पसंद थे, जबकि मोदी 32% हरियाणवियों (2019 के लोकसभा चुनावों में 57%) के बीच प्रधानमंत्री पद के लिए पसंदीदा पसंद थे।

मुख्यमंत्री पद की बात करें तो कांग्रेस ने भले ही अपने मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार की घोषणा नहीं की है, लेकिन अलग-अलग समूहों में बंटे होने के बावजूद उसका राज्य नेतृत्व (भूपेंद्र सिंह हुड्डा, कुमारी सैलजा) खट्टर और सैनी के नेतृत्व वाले बीजेपी के राज्य नेतृत्व की तुलना में ज्यादा दुर्जेय दिखता है। अपने कुछ लोकप्रिय राज्य नेताओं को दरकिनार करने से उसकी संभावनाओं पर और असर पड़ेगा, खासकर जब राज्य नेतृत्व से नाराजगी के स्पष्ट संकेत मिल रहे हों। इसमें कोई शक नहीं कि कांग्रेस का पलड़ा भारी है, लेकिन कुछ चुनावी क्षेत्रों में उसे वो नाराज नेता नुकसान पहुंचा सकते हैं, जिनको टिकट नहीं मिल पाई। इसके अलावा पार्टी के भीतर विभिन्न गुटों के बीच लड़ाई और बड़ी संख्या में छोटे क्षेत्रीय दल भी कांग्रेस को नुकसान पहुंचा सकते हैं। आम आदमी पार्टी ने दिल्ली और पंजाब में कांग्रेस के जनाधार को कमजोर कर दिया है और गुजरात और गोवा जैसे कुछ अन्य राज्यों में भी उसे नुकसान पहुंचाया है।

हालांकि 2024 के लोकसभा चुनाव में आप के प्रदर्शन को देखते हुए हरियाणा में यह मजबूत नहीं दिख रही है। कुरुक्षेत्र लोकसभा सीट के केवल चार विधानसभा क्षेत्रों में ही यह आगे रही, जहां इसने कांग्रेस के साथ गठबंधन में चुनाव लड़ा था। जहां कांग्रेस संख्यात्मक रूप से बड़े जाट समुदाय और दलित समुदायों के मतदाताओं को लामबंद करने की उम्मीद कर रही है, वहीं सवाल यह है कि जननायक जनता पार्टी (हाल ही में हरियाणा में भाजपा सरकार में गठबंधन सहयोगी और अब चंद्रशेखर आजाद की आजाद पार्टी के साथ गठबंधन में) और बीएसपी का गठबंधन भारतीय राष्ट्रीय लोक दल (इनेलो) के साथ इस जनाधार में कितनी सेंध लगा सकता है।

'जो जनता को सुरक्षा न दे सके, वह सरकार किस काम की'
पूर्व सीएम भूपेश बघेल ने भाजपा को घेरा

कबीरधाम, 15 सितंबर (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल कबीरधाम पहुंचे। यहां वे देर रात तक कई कार्यक्रम में शामिल हुए। सबसे पहले राजीव भवन, छिरहा (कवर्धा) में आयोजित तीज मिलन समारोह में शामिल हुए। जिला महिला कांग्रेस के नव नियुक्त पदाधिकारियों से मिले। इस मौके पर उन्होंने कार्यकर्ताओं को संबोधित कर राज्य सरकार को आड़े हाथों लिया।

राज्य में बढ़ते अपराध के ग्राफ को लेकर उन्होंने कहा कि इस भाजपा सरकार में सबसे ज्यादा प्रताड़ना महिलाओं को ही झेलनी पड़ रही है। इस डबल इंजन सरकार में चार साल की बच्ची से लेकर बुजुर्ग महिला भी सुरक्षित नहीं है। कानून व्यवस्था जैसी चीज अब छत्तीसगढ़ में बाकी नहीं है। जो सरकार जनता को सुरक्षा नहीं रख सकती, वह सरकार किस काम की।

जशपुर, रायगढ़, दुर्ग समेत कई जिलों में अपराध बढ़े हैं। इसके अलावा कवर्धा विधायक व राज्य के डिप्टी सीएम गृह मंत्री विजय शर्मा के ऊपर बघेल ने तंज कसा। उन्होंने कहा कि खुद डिप्टी सीएम विजय शर्मा के गृह जिले कबीरधाम में अपराध बढ़ा है। यहां इस साल 20 से अधिक हत्या की वारदात हो चुकी हैं। कई दुष्कर्म के मामले भी सामने आए हैं।

इस कार्यक्रम के बाद पूर्व सीएम भूपेश बघेल कवर्धा में आयोजित चन्द्रनाहु कुर्मी क्षत्रिय समाज के राष्ट्रीय अधिवेशन में शामिल हुए।

इस मौके पर पूरे प्रदेश भर से राजनीतिक व सामाजिक प्रतिनिधियों का समाज की ओर से स्वागत हुआ।

साइबर क्राइम के गढ़ में छिपा है राजनीति का रोमांच
35 सालों से अंसारी परिवार का नाम तो शिबू सोरेन को भी मिली थी जीत

जामताड़ा, 15 सितंबर (एजेंसियां)। जामताड़ा ईश्वर चंद्र विद्यासागर की कर्मभूमि के साथ-साथ साइबर क्राइम के गढ़ के रूप में भी पूरे देश में विख्यात है। यही नहीं राजनीतिक दृष्टिकोण से जामताड़ा विधानसभा सीट भी कई मायने में महत्वपूर्ण है। वैसे तो जामताड़ा विधान सभा सीट कांग्रेस की गढ़ रही हैं, लेकिन झारखंड मुक्ति मोर्चा सुप्रीमो और पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन भी यहां से एक बार चुनाव जीत चुके है।

जामताड़ा विधानसभा सीट की बात की जाए तो साल 2009 से 2014 के कार्यकाल को छोड़ दे तो 1982 से अब तक कांग्रेस के एक ही परिवार के नेताओं का यहां लगातार कब्जा रहा है। बिहार सरकार में मंत्री रहे फुरकान अंसारी जामताड़ा विधानसभा सीट से लगातार पांच बार प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। जबकि वर्तमान समय में उनके पुत्र इरफान अंसारी लगातार 10 वर्षों से जामताड़ा का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। जिस कारण यह माना जा सकता है कि जामताड़ा जिला कांग्रेसियों का अभेद किला है। जिसे एक ही परिवार के सदस्य बचाए हुए हैं। यही नहीं इसे ध्वस्त करने के लिए विरोधियों को कड़ी मशक्कत करनी पड़ेगी।

वर्ष 1980 के चुनाव में जामताड़ा विधानसभा सीट पर फुरकान अंसारी चुनाव लड़े थे और उनके प्रतिद्वंदी कम्युनिस्ट पार्टी से वीरू बोस थे। मतगणना के दौरान वीरू बोस को विजय घोषित कर दिया गया। लेकिन इसके विरोध में फुरकान अंसारी न्यायालय के शरण में गए और 1982 में कोर्ट ने उनके पक्ष में फैसला सुनाते हुए बीरू बोस की दावेदारी रद्द कर दी। उसके बाद फुरकान अंसारी लगातार कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ते रहे और 2004 तक जामताड़ा विधानसभा सीट का प्रतिनिधित्व किया।

हालांकि 2004 के लोकसभा चुनाव में फुरकान अंसारी ने कांग्रेस की टिकट पर गोड्डा से चुनाव लड़ा और वहां से वो विजय घोषित हुए। लेकिन 2009 में फुरकान अंसारी एक बार फिर जामताड़ा विधानसभा सीट से कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़े, लेकिन उन्हें जेएमएम प्रत्याशी विष्णु भैया से हार का सामना करना पड़ा। वही उसके बाद 2014 में फुरकान अंसारी के पुत्र इरफान अंसारी ने कांग्रेस के टिकट पर जामताड़ा से चुनाव लड़े और वह विजय घोषित हुए। 2019 के चुनाव में भी इरफान अंसारी ने जीत दर्ज की। जिस कारण यह कहा जा सकता है कि 35 साल से जामताड़ा विधानसभा सीट पर एक ही परिवार के लोगों का कब्जा है।

'आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार' कार्यक्रम में लापरवाही
आवेदन पत्र बिखरे मिले; दोषियों पर होगी कार्रवाई

रांची, 15 सितंबर (एजेंसियां)। झारखंड के सिसई प्रखंड के पंडरानी गांव में श्आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वारश कार्यक्रम के दौरान अबुआ आवास योजना के आवेदन पत्र बिखरे पाए गए। उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी ने लापरवाही पर कार्रवाई के आदेश दिए हैं। डीडीसी और एसडीओ ने डोर-टू-डोर अभियान शुरू किया है ताकि सभी ग्रामीणों को योजनाओं का लाभ मिल सके।

गुमलाः झारखंड के सिसई में 'आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार' कार्यक्रम के दौरान बड़ी लापरवाही सामने आई है। अबुआ आवास योजना के आवेदन पत्र बिखरे हुए मिले, जिससे ग्रामीण नाराज हो गए। उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी ने कार्रवाई करते हुए अधिकारियों का वेतन रोक दिया है और दोषियों पर निलंबन की बात कही है।

यह घटना सिसई के पंडरानी गांव में हुई। यहां 'आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार' कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम में ग्रामीणों ने अबुआ आवास योजना के तहत आवेदन जमा किए थे। अगले दिन ये आवेदन पत्र शिविर स्थल पर बिखरे हुए मिले।

बीडीओ-सीओ का वेतन रुका, कई मानदेय कर्मियों की सेवा होगी समाप्त

इस लापरवाही से ग्रामीणों में आक्रोश फैल गया। उन्होंने अधिकारियों के खिलाफ धरना-प्रदर्शन किया और जवाबदेही की मांग की। ग्रामीणों का कहना था कि जब सरकार योजनाओं का लाभ देने के लिए शिविर लगा रही है तो अधिकारियों की लापरवाही से उनका भरोसा टूट जाता है। मामले की गंभीरता को देखते हुए उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी ने तुरंत एक्शन लिया। उन्होंने सिसई के बीडीओ और सीओ का वेतन रोक दिया है। साथ ही, प्रखंड समन्वयक और कंप्यूटर ऑपरेटर की संविदा समाप्त करने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी गई है।

जांच में दोषी पाए जाने पर निलंबन की होगी कार्रवाई

उपायुक्त ने कहा कि जांच पूरी होने तक संबंधित अधिकारियों का वेतन रोका गया है। जांच में दोषी पाए जाने पर उनके खिलाफ निलंबन की कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि मामले को राज्य सरकार के ध्यान में लाया जाएगा ताकि भविष्य में ऐसी घटना न हो।

एसडीओ ने मामले की छानबीन शुरू की

इस घटना के बाद, उपायुक्त के निर्देश पर डीडीसी दिलेश्वर महतो और एसडीओ राजीव नीरज खुद गांव गए और ग्रामीणों से आवेदन लिए। उन्होंने ग्रामीणों को आश्वासन दिया कि कोई भी जरूरतमंद व्यक्ति सरकार की योजनाओं से वंचित नहीं रहेगा। गांव वालों की सुविधा के लिए 18 सितंबर को फिर से 'आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार' शिविर लगाया जाएगा। इस बार सभी ग्रामीणों को योजना से जोड़ने का प्रयास किया जाएगा।

पत्नी व बेटी संग आत्मदाह करने पहुंचे पूर्व मेला संचालक को हिरासत में लिया

डिगवाडीह, 15 सितंबर (एजेंसियां)। डिगवाडीह में चल रहे गणेश मेला में शनिवार को पत्नी व बेटी के साथ आत्मदाह करने पहुंचे पूर्व मेला संचालक पवन प्रजापति को पुलिस ने हिरासत में ले लिया.

डिगवाडीह सर्कस मैदान में चल रहे गणेश पूजा महोत्सव के दौरान उस समय अफरातफरी मच गयी, जब पूर्व मेला संचालक पवन प्रजापति सपरिवार आत्मदाह करने वहां पहुंचने वाला था. जोड़ापोखर पुलिस ने पवन प्रजापति के साथ उसकी पत्नी पूरण देवी, पुत्री मनीषा कुमारी को हिरासत में ले लिया. पूर्व में मिली सूचना के आधार पर जोड़ापोखर थानेदार राजेश प्रकाश सिन्हा ने वाहन चेकिंग अभियान चलाकर पवन को हिरासत में ले लिया. साथ ही पत्नी व पुत्री को टेंपो से उतार कर थाना ले जाया गया. जोड़ापोखर पुलिस ने अनहोनी को लेकर फायर ब्रिगेड की गाड़ी मंगा ली थी. पवन प्रजापति ने पुलिस को बताया कि पूजा कमेटी व जमीन मालिक ने उसके साथ धोखा कर किसी ओर से मेला लगवा लिया, जबकि मेला कमेटी व जमीन मालिक के साथ पूर्व में एग्रीमेंट किया गया था. पवन प्रजापति ने कहा कि 2031 तक मेला कमेटी व जमीन मालिक को पांच लाख रु एडवांस में दिया था. पवन ने डीसी व वरीय एसएसपी से इस बाबत पूर्व में लिखित शिकायत की थी.

पूजा कमेटी ने की प्रेस कॉन्फ्रेंस

पवन को हिरासत में लेने के बाद पूजा कमेटी व जमीन मालिक बिनोद मरांडी ने प्रेस वार्ता आयोजित की. कमेटी के पदाधिकारी व जमीन मालिक ने संयुक्त रूप से कहा कि पवन प्रजापति ने 40 हजार रु दिया था. पांच लाख रु देने की बात गलत है. जमीन मालिक का फर्जी सिग्नेचर करके एग्रीमेंट बनाया गया है. इस दौरान मेला कमेटी के सह सचिव दिनेश यादव ने कहा कि पवन ने लगातार तीन वर्षों तक मेला का संचालन किया था. जोड़ापोखर थाना प्रभारी राजेश प्रकाश सिन्हा ने कहा कि पुलिस मामले की जांच कर रही है. जांचोपरांत कानूनी करवाई की जाएगी.

फाइनेंस कंपनी का एजेंट बताकर दर्जनभर किसानों के साथ की ठगी
वृंदावन घूमने में खर्च की रकम

कबीरधाम, 15 सितंबर (एजेंसियां)। कबीरधाम पुलिस ने आज एक ठग को गिरफ्तार किया है। आरोपी ने फाइनेंस कंपनी का एजेंट बताकर भोरमदेव थाना क्षेत्र के एक किसान के साथ ठगी की है। इससे पूर्व में आरोपी ने थाना रेंगाखार क्षेत्र में भी ठगी किया था। एडिशनल एसपी पुष्पेंद्र बघेल ने बताया कि पीड़ित सुखदेव निवासी ग्राम निवासपुर थाना रेंगाखार द्वारा लिखित आवेदन प्रस्तुत किया था। उन्होंने आवेदन में बताया कि आरोपी अमित पांडेय पिता रवि पांडेय निवासी बरगाही जिला राजनांदगांव द्वारा सात अगस्त को पिकअप वाहन का किस्त जमा करने देरी होने की जानकारी देकर ड्यू रकम 5 हजार रुपए मांगे। पीड़ित ने चार हजार रुपए दिए।

इसके बाद पीड़ित ने पता किया तो जानकारी मिली की ऐसा कोई भी राशि ड्यू नही है। इसके बाद आरोपी अमित पांडेय के खिलाफ रेंगाखार थाना में धारा - 318 दर्ज कर जांच शुरू किया। जांच के दौरान आरोपी को छुईखदान में होने की जानकारी मिली। पुलिस ने आरोपी को छुईखदान से गिरफ्तार किया। पूछताछ किया गया तो आरोपी अमित पांडेय ने थाना छुईखदान जिला केसजी के ग्राम गाड़ाडीह में एक किसान संकलेश कंवर से ट्रैक्टर लोन में छूट दिलाने के नाम पर 3200 रुपए, थाना साल्हेवारा जिला केसीजी के ग्राम लालपुर के किसान विनोद साहू से ट्रैक्टर सर्विसिंग का रुपए होना कहकर 5300 रुपए ठगी करना व थाना रेंगाखार जिला कबीरधाम के ग्राम निवासपुर के किसान सुखेदव धुर्वे को पिकअप वाहन की ड्यू रकम पटाने की बात पर 4 हजार रुपए ठगी कर भाग जाना बताया।

ठगी के रुपए को वृन्दावन घूमने खर्च करना बताया। साथ ही ठगी करने का अपराध स्वीकार किया है। इसी प्रकार पीड़ित गौतम साहू पिता हीराराम साहू उम्र 40 निवासी ग्राम हरमो थाना भोरमदेव ने भी शिकायत दर्ज कराई थी कि आरोपी अमित पांडेय ने फाइनेंस वाहन ट्रैक्टर का पूरा बायोडाटा बताकर किस्त का 60 हजार रुपए लेकर भाग गया था।

चोर गिरोह पकड़ा गया, 9 आरोपी गिरफ्तार
कब्जे से 16 लाख रुपये से ज्यादा का सामान जब्त

कबीरधाम 15 सितंबर (एजेंसियां)। कबीरधाम पुलिस ने चोरी के मामले में बड़ा खुलासा किया है। पुलिस ने चोर गिरोह के 9 आरोपी को गिरफ्तार किया है। इस आरोपियों के पास से करीब 16 लाख 99 हजार 700 रुपए कीमत के सामान जब्त किए गए है। यह मामला बोड़ला थाना क्षेत्र के पुलिस चौकी पोंड़ी का है। एडिशनल एसपी पुष्पेंद्र सिंह बघेल ने बताया कि इसी माह 9 सितंबर को एक राइस मिल के मालिक चंद्रकांत चंद्रवंशी ने पुलिस चौकी पोंड़ी में शिकायत दर्ज कराई थी। उन्होंने अपने आवेदन में बताया कि उनके मिल से 80 बोरी धान चोरी हुआ है।

मामले में रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू किया गया। जांच के दौरान राइस मिल में लगे सीसीटीवी का अवलोकन करने पर एक पिकअप वाहन 7 सितंबर की रात तीन बजे मिल के अंदर से बाहर निकलता हुआ दिखाई दिया। इसके बाद ग्राम मानिकपुर का ईश्वर चंद्रवंशी अपने बाइक से दो व्यक्ति मिल की तरफ जाते हुए दिखाई दिए। इन्हे संदेह के आधार पर पुलिस ने पूछताछ किया। तब इन लोगों ने बताया कि मिल में चोरी करने के लिए ग्राम पोंड़ी के शिवकुमार लांझी से डूप्लीकेट चाबी बनाकर चोरी करना किया है। ईश्वर चंद्रवंशी के निशानदेही पर अन्य आरोपी मनहरण चंद्रवंशी, यशवंत चंद्रवंशी, तिलक साहू, नंदू केवट, सुनील चंद्रवंशी, मुकेश चंद्रवंशी, देवकुमार साहू, दुर्गेश साहू को गिरफ्तार किया है।

पकड़े गए आरोपियों द्वारा पूर्व में कई चोरी की वारदात को अंजाम देना बताया है। इनके निशानदेही पर चोरी किए गए 174 बोरी धान 69.6 क्विंटल कीमत 1 लाख 39 हजार 200 रुपए, दो पिकअप वाहन कीमत 13 लाख रुपए, 8 नग मोबाइल को जब्त किया गया है। सभी 9 आरोपी को आज देर शाम को रिमांड पर जेल भेज दिया गया है।

यात्रियों से भरी बस और ट्रक में जोरदार भिड़ंत
20 यात्री घायल, चपेट में आए तीन पुलिसकर्मी

धमतरी 15 सितंबर (एजेंसियां)। धमतरी जिले के भखारा थाना क्षेत्र कोसमर्रा के पास यात्रियों से भरी बस और ट्रक में जोरदार भिड़ंत हो गई। हादसे में करीब 15 से 20 यात्री घायल हो गये, इसके अलावा उसी दुर्घटना ग्रस्त ट्रक पर रेडियम लगा रहे तीन पुलिस कर्मियों को अज्ञात वाहन ने पीछे से ठोकर मार कर घायल कर दिया। बताया गया की अंबिकापुर मैनपाट घूमने बस में सवार होकर करीब 56 यात्री निकले हुए थे।इस बीच कोसमर्रा के पास पीछे से आ रही ट्रक ने जबरदस्त ठोकर मार दिए। हादसे में करीब 20 लोग घायल होना बताया जा रहा है। सभी घायलों को धमतरी जिला अस्पताल सहित निजी अस्पतालों में इलाज के लिए भर्ती कराया गया जहा घायलों का उपचार जारी है। वहीं दो की स्थिति ज्यादा गंभीर होने के कारण रायपुर रेफर कर दिया गया है।

शहबाज शरीफ को पीएम कहने का कोई मतलब नहीं : इमरान खान

इस्लामाबाद, 15 सितंबर (एजेंसियां)। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने मौजूदा सरकार और देश की संस्थाओं की आलोचना की है। उन्होंने मौजूदा हालात की तुलना सैन्य शासक याह्या खान के दौरे से की और आरोप लगाया कि देश की संस्थाओं को तबाह किया जा रहा है।

इमरान ने अपनी पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के कार्यकर्ताओं के खिलाफ कार्रवाई की भी आलोचना की और मौजूदा सरकार को 'याह्या खान पार्ट-2' करार दिया। उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, ₹देश एक बार फिर याह्या खान के शासन को महसूस कर रहा है। याह्या खान ने देश की सबसे बड़ी सियासी पार्टी के खिलाफ ऑपरेशन चलाया था। यह याह्या खान पार्ट-2 वहीं कर रहा है और देश की संस्थाओं को नष्ट कर रहा है।

'फैसला सुनाने वाले जज को दी करोड़ों की जमीन'

पीटीआई के संस्थापक ने यह भी आरोप लगाया कि मौजूदा सरकार जजों को गलत फैसले लेने पर

मजबूर कर रही है। उन्होंने कहा, याह्या खान पार्ट-2 की सरकार ने जज हुमायूं दिलावर को करोड़ों रुपये की जमीन और अवैध अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) दी, जिससे मेरे खिलाफ फैसला सुनाया गया। याह्या खान पाकिस्तान के तीसरे राष्ट्रपति थे और उनके शासन के दौरान पूर्व पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) ने आजादी हासिल की थी। उन्होंने चुनाव के नतीजों को स्वीकार नहीं किया था, जिससे देश में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हुए थे और 1971 का युद्ध हुआ था।

उन्होंने मौजूदा प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ पर भी निशाना साधा। इमरान खान ने कहा, शहबाज शरीफ को प्रधानमंत्री कहने का कोई मतलब नहीं है। वे केवल एक मोहरे हैं, जिनके फैसले प्रतिष्ठान की मंजूरी पर निर्भर हैं। हगो सकता है कि इस मोहरे को कल जबरन गायब कर दिया जाए।

पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति को लेकर साधा निशाना

इसके साथ ही, इमरान ने पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति पर भी चिंता जताई। उन्होंने कहा, सिंगापुर कराची से भी कम आबादी वाला देश है और पाकिस्तान से ज्यादा निवेश आकर्षित कर रहा है। सिंगापुर में निवेशक अरबों डॉलर ला रहे हैं। जबकि पाकिस्तान दुनिया का पांचवां सबसे बड़ी आबादी वाला देश है, उसका विदेशी निवेश अब तक के सबसे निचले स्तर पर है। निवेश केवल उन्हीं देशों में होते हैं, जहां कानून का राज हो।

रावलपिंडी की अदियाला जेल में बंद हैं इमरान खान

क्रिकेटर से राजनेता बने इमरान खान फिलहाल रावलपिंडी की अदियाला जेल में बंद हैं और उनके खिलाफ कई मामले चल रहे हैं। जेल में रहते हुए भी वे अपने सोशल मीडिया खाते पर नियमित रूप से संदेश पोस्ट कर रहे हैं, जो अक्सर विवाद का कारण बन जाते हैं। पीटीआई ने हाल ही में एक विशाल रैली का आयोजन किया था और इमरान की रिहाई की मांग की थी। पार्टी ने आरोप लगाया था कि उनके नेताओं के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की गई और उन पर गोलीबारी भी की गई।

खैबर पख्तूनख्वा के मुख्यमंत्री की गिरफ्तारी की निंदा की

इसके अलावा, इमरान खान ने खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के मुख्यमंत्री अली अमीन गंडापुर की गिरफ्तारी की भी निंदा की और कहा कि यह स्थिति बेहद भयावह है। उन्होंने यह भी कहा, जब भी सिकंदर सुल्तान राजा (मुख्य चुनाव आयुक्त) गेंदबाजी करते हैं, काजी फैज ईसा (पाकिस्तान के चीफ जस्टिस) स्लिप में होते हैं, जबकि आमिर फारूक (इस्लामाबाद हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस) दूसरे स्लिप में होते हैं। यह एक फिक्स मैच है और इसके सभी पात्र बेईमान हैं।

एफबीआई ने मेरे घर रेड डाली, निजता भंग की : मेलानिया ट्रम्प

वॉशिंगटन, 15 सितंबर (एजेंसियां)। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की पत्नी मेलानिया ट्रम्प ने अपने घर मार-ए-लागो पर 2022 में एफबीआई को रेड के लिए लताड़ लगाई है। सोशल मीडिया पर शनिवार को एक वीडियो शेयर कर मेलानिया ने चेतावनी देते हुए लिखा कि अमेरिका में लोगों के हकों की रक्षा होनी चाहिए। दरअसल, 1 अक्टूबर को मेलानिया ट्रम्प अपने जीवन के कुछ किस्सों पर एक किताब (मेमॉयर) जारी करने वाली हैं। उन्होंने इसका प्रमोशनल वीडियो जारी किया है। इसमें मेलानिया ने कहा, ₹मैंने कभी नहीं सोचा था कि अमेरिकी सरकार मेरी प्राइवेसी पर इस तरह से हमला करवाएगी। मेलानिया ने बताया कि उस दिन जब एफबीआई की टीम डाली तब उन्होंने मेरे निजी समानों की तलाशी ली। यह सिर्फ मेरी कहानी नहीं है। यह अमेरिका के सभी नागरिकों के लिए एक चेतावनी है, हमारे अधिकारों और आजादी की रक्षा होनी चाहिए।

इससे पहले 5 नवंबर को होने वाले राष्ट्रपति चुनाव के लिए एक

अमेरिका सबक ले; खुफिया फाइलें ढूंढने के लिए ट्रम्प के घर पहुंचे थे एजेंट्स

रैली के दौरान भी ट्रम्प ने कहा था कि एफबीआई के छापेमारी के बाद मेलानिया को अपमानित महसूस हुआ था। ट्रम्प ने कहा था, ₹यह बहुत ही बुरा अनुभव था। एफबीआई के अधिकारी मेलानिया की अलमारी में घुसे थे। उसके कपड़ों के बीच तलाशी ली थी। वे पूरे घर की हालात खराब कर गए थे।

ट्रम्प ने बताया था कि एफबीआई एजेंट्स ने उनके 16 साल के बेटे बैरन के कमरे में भी तलाशी ली थी। दरअसल, 2021 में राष्ट्रपति चुनाव हारने के बाद ट्रम्प व्हाइट छोड़कर फ्लोरिडा में अपने घर मार-ए-लागो लौट गए थे। इस दौरान उन पर आरोप लगा कि वे अपने साथ कई सरकारी और खुफिया दस्तावेज भी ले गए।

अगस्त 2021 में एफबीआई ने ट्रम्प के घर पर रेड डाली थी। पिछले साल इस मामले में पूर्व राष्ट्रपति पर क्रिमिनल केस भी दर्ज हुआ था। आरोप पत्र में बताया गया था कि एफबीआई ने ट्रम्प के पास से 337 सरकारी डॉक्यूमेंट्स बरामद किए थे। इनमें से 21 डॉक्यूमेंट्स पर टॉप सीक्रेट लिखा हुआ था। ये वो दस्तावेज होते हैं जिसमें सबसे संवेदनशील जानकारी रखी जाती है।

ट्रम्प ने बाथरूम-स्टोर रूम में छिपाई थी फाइलें

इसके अलावा, 9 डॉक्यूमेंट्स पर सीक्रेट लिखा हुआ था। ये वो फाइल्स होती हैं, जिसके लीक होने पर राष्ट्रीय सुरक्षा को गंभीर खतरा पहुंचने की आशंका रहती है। ट्रम्प ने जो क्लासिफाइड फाइल्स छिपाई थीं उनमें अमेरिका के न्यूक्लियर प्रोग्राम्स और US और दूसरे देशों की रक्षा और हथियारों की क्षमता से जुड़ी डीटेल्स मौजूद थीं।

49 पेज के आरोप पत्र में बताया गया था कि ट्रम्प ने ये दस्तावेज अपने बाथरूम, बॉलरूम, शावर की जगह पर, ऑफिस, स्टोर रूम और बेडरूम में छिपाए थे। ये भी बताया गया कि ट्रम्प ने 2021 में 2 अलग-अलग मौकों पर बिना सिक्योरिटी क्लियरेंस के ये फाइल्स एक राइटर और स्टाफ के 2 मेंबर्स को दिखाई थीं।

हालांकि, इस साल जुलाई में फेडरल जज एलीन कैनन ने ट्रम्प के इस केस को खारिज कर दिया था। उन्होंने कहा था कि ट्रम्प के खिलाफ केस लड़ रहे वकील जैक स्मिथ को कानूनी तरह से हायर नहीं किया गया था।

दावा-भारत में रूसी मीडिया को बैन करना चाहता है अमेरिका

नई दिल्ली, 15 सितंबर (एजेंसियां)। अमेरिका का बाइडेन प्रशासन भारत में रूसी मीडिया हाउस RT को बैन करवाना चाहता है। हाल ही अमेरिका ने दुनिया भर में रूस के मीडिया नेटवर्क आरटी को बैन कराने के लिए अपनी कोशिशों को तेज किया है। इसी तर्ज पर भारत से भी RT को बैन करने की उम्मीद की जा रही है। रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिकी अधिकारियों ने भारत के विदेश मंत्रालय से इसे लेकर बात की है। उन्होंने भारत से मांग की है कि वो आरटी को भारत में जर्नलिज्म के लिए दी गई मान्यता छीन लें। उनके पत्रकार को रूसी दूतावास के कर्मचारी ही मानें।भारत ने इसे लेकर अभी तक कोई पुष्टि नहीं की है। वहीं एक पूर्व डिप्लोमेट ने कहा है कि मीडिया नेटवर्क पर बैन लगवाना पश्चिमी देशों के दोहरे रवैये को उजागर करता है।

रूस का पलटवार

रूस ने अमेरिका के सभी आरोपों को खारिज किया है। RT के एक सीनियर अधिकारी ने कहा है कि अमेरिका उनके विरोध में उठने वाली हर आवाज को कुचल देना चाहता है।वहीं, रूस की फॉरेन मिनिस्ट्री की प्रवक्ता मारिया जाखरोवा कहती हैं कि अमेरिका की ये हरकत हिटलर की नाजी जर्मनी जैसी है। अमेरिका दुनिया भर में रूस के खिलाफ नफरत फैलाने का काम कर रहा है।भारत के सामने रूस का तेल खरीदने के बाद अब RT की कसौटी है। भारत ने जंग के बावजूद रूस से तेल खरीदना जारी रखा था। इसे लेकर पश्चिमी देशों ने भारत की खूब आलोचना की थी। जेलेंस्की ने भी पीएम मोदी के यूक्रेन दौरे के बाद कहा था कि अगर भारत रूस से तेल खरीदना बंद कर दे जंग रुक जाएगी। हालांकि, भारत ने अपनी आर्थिक स्थिति स्पष्ट करते हुए ये स्पष्ट कर दिया वह रूस से तेल खरीदना बंद नहीं करेगा। RT को लिए लगातार लिखने वाले रूस में भारत के पूर्व राजदूत कंवल सिब्बल का मानना है कि भारत अमेरिका के दबाव में नहीं आएगा।

वेनेजुएला में राष्ट्रपति की हत्या की साजिश में 6 गिरफ्तार

अमेरिकी नेवी कमांडो शामिल, सरकार का आरोप- सीआईए ने रची साजिश

वॉशिंगटन, 15 सितंबर (एजेंसियां)। दक्षिण अमेरिकी देश वेनेजुएला में राष्ट्रपति निकोलस मादुरो की हत्या की साजिश के आरोप में यूएस नेवी सील कमांडो समेत 6 विदेशियों को गिरफ्तार किया है। वेनेजुएला के गृह मंत्री डियोसडाडो कबेलो ने दावा किया है कि यह साजिश अमेरिकी खुफिया एजेंसी सीआईए ने रची थी। राष्ट्रपति मादुरो ने शनिवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि US कमांडो के अलावा अमेरिका के 2 और नागरिक, स्पेन के 2 लोगों और एक चेक रिपब्लिक के शख्स को गिरफ्तार किया गया है।

इसके अलावा अधिकारियों ने 400 अमेरिकी राइफल भी जब्त की हैं। वेनेजुएला के गृह मंत्री कबेलो ने कहा कि सीआईए के साथ साजिश में स्पेन का नेशनल इंटेलिजेंस सेंटर भी शामिल था। उनका मकसद राष्ट्रपति मादुरो समेत उप-राष्ट्रपति और कई दूसरे राजनेताओं की हत्या करना था। वहीं अमेरिका के विदेश मंत्रालय ने वेनेजुएला के आरोपों को खारिज कर दिया।

मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा कि वे अमेरिकी नागरिकों की गिरफ्तारी से जुड़ी जरूरी जानकारी जुटाने की कोशिश कर रहे हैं। स्पेन के विदेश मंत्रालय ने भी वेनेजुएला से गिरफ्तार हुए नागरिकों से जुड़ी जानकारी मांगी है।वेनेजुएला ने यह आरोप तब लगाया है जब जुलाई में देश में हुए राष्ट्रपति चुनाव के नतीजों को कई दक्षिण अमेरिकी देशों और यूएस ने खारिज कर दिया। वेनेजुएला के विपक्ष ने भी मादुरो पर चुनाव में धांधली का आरोप लगाया है।

पाक ने अफगानिस्तान से अपने खास डिप्लोमैट को हटाया : काम से खुश नहीं थी फौज; तालिबान से रिश्ते सुधारने के लिए भेजा था

इस्लामाबाद, 15 सितंबर (एजेंसियां)।पाकिस्तान ने अफगानिस्तान में तैनात किए अपने स्पेशल डिप्लोमेट आसिफ दुर्रानी को निकाला दिया है। पाकिस्तानी मीडिया हाउस डॉन के मुताबिक पाक फौज दुर्रानी के काम से खुश नहीं थी। वहीं दुर्रानी के मुताबिक, अफगानिस्तान के लिए नीतियों को लेकर वे जो भी सलाह देते थे, उसे विदेश मंत्रालय लगातार नजरअंदाज कर रहा था। पाकिस्तान ने जून 2020 में अफगानिस्तान के लिए स्पेशल डिप्लोमैट भेजने की शुरुआत की थी। इनका काम तालिबान शासन और अफगानिस्तान में मौजूद दूसरे देशों के साथ मिलकर काम करना था। दरअसल तब अफगानिस्तान में नाटो देशों की सेना तैनात थी। 2020 में अमेरिका, तालिबान के बीच दोहा में एक समझौता हुआ था। समझौते के तहत अमेरिका के नेतृत्व में नाटो अफगानिस्तान से अपनी सेना हटाने वाला था। बदले में तालिबान ने वादा किया था कि वह आतंकी संगठन अल-कायदा को बढ़ने से रोकेगा और अफगान सरकार के साथ मिलकर काम करेगा। इस समझौते के बाद ही पाकिस्तान से अपने खास डिप्लोमैट को अफगानिस्तान भेजा था। वहीं आसिफ दुर्रानी मई 2023 से यह पद संभाल रहे थे। इनका काम अफगानिस्तान से ऑपरेट होने वाले आतंकी संगठन तहरीक-ए-तालिबान की वजह से खराब हुए पाक-अफगान संबंधों को बेहतर करना था। दुर्रानी फिलहाल ईरान में पाकिस्तान के राजदूत भी हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, 32 साल के अपने करियर में दुर्रानी को अकसर पाकिस्तान के विदेश विभाग में बाहरी व्यक्ति के तौर पर देखा जाता था। ऐसा

इसलिए क्योंकि वह सीधे मिलिट्री को रिपोर्ट करते हैं। ऐसे में जब उनकी नियुक्ति अफगानिस्तान में हुई तो उन्हें विदेश मंत्रालय के साथ तालमेल बैठाने में दिक्कत आई। दुर्रानी ने जुलाई में तालिबानी डेलिगेशन से कतर की राजधानी दोहा में मुलाकात की थी। तालिबान ने इस बैठक को सकारात्मक बताया था। दुर्रानी पाकिस्तान में गैरकानूनी तरह से रह रहे अफगान नागरिकों को निकालने के खिलाफ थे। उनका मानना था कि इससे पाकिस्तान को लेकर तालिबान का रवैया सख्त हो जाएगा। साथ ही सीमा की सुरक्षा के लिए भी सही नहीं है।

अफगानिस्तान में तालिबान के सत्ता में आने के बाद से पाकिस्तान में आंतकी संगठन तहरीक-ए-तालिबान को मजबूती मिली है। आतंकवाद की फैक्ट्री कहे जाने वाले पाकिस्तान में अब तक जितने भी आतंकी संगठन हैं, उनमें तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान सबसे खतरनाक माना जाता है। दरअसल, पाकिस्तानी तालिबान की जड़ें जमना उसी वक्त शुरू हो गई थीं, जब 2002 में अमेरिकी कार्रवाई के बाद अफगानिस्तान से भागकर कई आतंकी पाकिस्तान के कबाइली इलाकों में छिपे थे। इन आतंकियों के खिलाफ कार्रवाई शुरू हुई तो स्वात घाटी में पाकिस्तानी आर्मी की मुखालफत होने लगी।

मस्क का स्पेस मिशन कामयाब, 4 एस्ट्रोनॉट धरती पर लौटे

ड्रैगन स्पेसक्राफ्ट की पानी में लैंडिंग; वापसी में 27000 किमी की स्पीड

फ्लोरिडा, 15 सितंबर (एजेंसियां)। स्पेसएक्स का पोलारिस डॉन क्रू आज यानी, 15 सितंबर को पृथ्वी पर वापस लौट गया। ड्रैगन स्पेसक्रॉफ्ट ने दोपहर 1:06 बजे फ्लोरिडा के ड्राई टोर्टुगास कोस्ट पर लैंडिंग की। पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करते समय स्पेसक्राफ्ट की रफ्तार 27,000 Km प्रति घंटे थी। हवा से टकराने के कारण घर्षण पैदा हुआ और तापमान 1,900 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया।

इलॉन मस्क की कंपनी के फाल्कन-9 रॉकेट से पोलारिस डॉन मिशन को 10 सितंबर को लॉन्च किया गया था। 5 दिन के इस मिशन में 4 एस्ट्रोनॉट जिस ऑर्बिट (1,408.1 km) में गए थे, उसमें 50 साल से ज्यादा समय से कोई एस्ट्रोनॉट नहीं गया।

किसी भी स्पेस मिशन का सबसे मुश्किल हिस्सा पृथ्वी पर लौटना होता है। सुरक्षित रूप से घर पहुंचने के लिए, क्रू ड्रैगन कैप्सूल ने डी-ऑर्बिट बर्न शुरू किया। लगभग 27,000 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार

से स्पेसक्राफ्ट ने पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश किया।

हवा से टकराने के कारण घर्षण पैदा हुआ और तापमान 1,900 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। 4-मीटर चौड़े ड्रैगन स्पेसक्राफ्ट के नीचे लगी हीटशील्ड एस्ट्रोनॉट्स को इस तापमान से सुरक्षित रखा। जैसे-जैसे स्पेसक्राफ्ट नीचे आया उसकी रफ्तार को धीमा किया गया। इसकी रफ्तार को और ज्यादा धीमा करने के लिए पैराशूट खोले गए और पानी में लैंडिंग हुई। वहां एक स्पेशल बोट पर पहले से बचाव दल मौजूद है।

एस्ट्रोनॉट्स को कैप्सूल से निकालने से पहले बचाव दल ने फाइनल सेफ्टी चैक किया, फिर उन्हें पानी से जमीन पर लेकर गए। इस मिशन का मकसद पहली प्राइवेट एक्स्ट्राव्हीकलर एक्टिविटी (स्पेसवॉक) था। साथ ही इंसानी स्वास्थ्य से जुड़ी 36 रिसर्च और एक्सपेरिमेंट भी इस मिशन में किए गए। 12 सितंबर को 2 एस्ट्रोनॉट्स ने पृथ्वी से करीब 700 किलोमीटर ऊपर स्पेसवॉक कीं।

अमेरिकी विदेश विभाग के एक प्रमुख राजनयिक मुख्य सलाहकार बांग्लादेश पहुंचे

ढाका, 15 सितंबर (एजेंसियां)। यहां वह मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार के साथ मुख्य रूप से वित्तीय और व्यापार मामलों पर चर्चा करेंगे। विदेश मंत्रालय द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया कि दक्षिण और मध्य एशियाई मामलों के सहायक सचिव डोनाल्ड लू ढाका में एक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व कर रहे हैं, जिसमें दक्षिण और मध्य एशिया के लिए सहायक अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि ब्रैंडन लिंच भी हैं। विज्ञप्ति के अनुसार, द्विपक्षीय मुद्दों पर चर्चा के लिए यूनुस से मिलने के अलावा, प्रतिनिधिमंडल वित्त और वाणिज्य सलाहकार सालेहुद्दीन अहमद से भी मुलाकात करेगा। विदेश सलाहकार तौहीद हुसैन ने कहा कि चर्चा मुख्य रूप से वित्तीय और व्यापार मामलों पर केंद्रित होगी।

मालदीव-चीन ने रक्षा सहयोग मजबूत करने के तरीकों पर की चर्चा

मालदीव , 15 सितंबर (एजेंसियां)। मालदीव और चीन ने दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग को मजबूत करने के तरीकों पर चर्चा की। मालदीव के रक्षा मंत्रालय ने शुक्रवार को एक्स पर एक पोस्ट में कहा, रक्षा मंत्री घासन मौमून ने 11वें बीजिंग जियांगशान फोरम के मौके पर अपने चीनी समकक्ष एडमिरल डोंग जून से मुलाकात की। चर्चा के विवरण का खुलासा किए बिना कहा, 'बैठक के दौरान, दोनों मंत्रियों ने दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग को मजबूत करने के तरीकों पर चर्चा की।' चीन में मालदीव के राजदूत डॉ. फजील नजीब भी बैठक के दौरान मौजूद थे। मालदीव और चीन पहले भी सैन्य संबंधों को मजबूत करने के लिए बातचीत कर चुके हैं।मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, मार्च में मालदीव और चीन ने मालदीव की सैन्य और सुरक्षा सेवाओं को सैन्य सहायता प्रदान करने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। समझौते के तहत, राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू ने कहा था कि चीन मालदीव को सैन्य उपकरण और प्रशिक्षण प्रदान करेगा।

एक शाम बाबा रामदेवजी के नाम जागरण सम्पन्न

हैदराबाद, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। अलवाल स्थित मच्छाबोलारम बाबा रामदेवजी महाराज के मंदिर प्रांगण में शुक्रवार 13 सितम्बर रात्रि 9.15 बजे से श्री बाबा रामदेव नवयुवक मित्र मंडल अलवाल वेकन्टापुरम मे 13 वां भव्य जागरण आयोजित किया गया।

नवयुवक मंडल के महेन्द्रसिंह पितावत ने बताया कि हर वर्ष की भांति भादव मास के पावन अवसर पर श्री बाबा रामदेवजी महाराज का भव्य जागरण भक्तों के सानिध्य मे आयोजित किया गया। भव्य शोभा यात्रा, बाबा रामदेवजी महाराज का विशेष श्रृंगारकर शुक्रवार 13 सितम्बर पूजा-अर्चना, ज्योत प्रज्वलितकर व आरती के पश्चात सायं 7 बजे से भोजन प्रसादी एवं रात्रि 8.15 बजे से जागरण का आयोजन किया गया।

संदीप सेजु ने भजनों से मन मोह लिया।जागरण के मध्य रावत राजपूत समाज अध्यक्ष टीलसिंह रावत, गज्जु भाई कोलरिया, लुणाराम कच्छावा, सीरवी समाज महिला अध्यक्षा सुशीला देवड़ा सचिव निर्मला देवड़ा व अतिथियों का पुष्प-माल व शॉल से सम्मान किया गया। नवयुवक मंडल के महेन्द्रसिंह पितावत, नेमीचन्द गोयल, पारसनाथ चौहान, सुनिल पंवार, दिनेश मागर, पुरणमल कच्छावा, किसनलाल देवासी, रतनलाल सोलंकी, प्रभुराम भाटी , रामसिंह भाटी, सुखराम सांखला, हनुमान कच्छावा, गणपतलाल गोयल, मांगीलाल माली, गणेश जान्दू, शांतिलाल टॉक, भंवरलाल प्रजापत, मुनालाल कुमावत, अनिल रेडवाल, गोविन्दसिंह पितावत, चेनाराम कुमावत, हनुमानराम कुमावत, नेमाराम राठौड़, सुखाराम गेहलोत, अजय मुलेवा, शिवनन्द, मुकेश, रतनलाल गाँधी, बाबुलाल नायक, मुकेश पुनियां, भुराराम टॉक, सुरेश बांकरेचा, घनश्याम भाटी, शेषाराम मुलैवा, धर्माराम सैंणचा, तिलोक नाथ, दिनेश कुमावत, श्याम सुन्दर कुमावत, जीतमल कच्छावा, प्रकाश कुमावत, नवरतन कच्छावा, रामकुमार कच्छावा, सुनिल मुकेश, तेजाराम सोलंकी, सत्यनारायण कच्छावा, हनुमान पटेल, पूनाराम काग, दिनेश कुमावत, राधेश्याम जाट, मोतीलाल बर्फा, सज्जनलाल रामावत, अण्दाराम राकेश कुमावत, बुधाराम काग, पन्नालाल भाटी, चम्पालाल कच्छावा, मनीराम भाटी, राजु दिनेश कुमावत, दिनेश पंवार, राजुराम, रमेश देवड़ा आदि उपस्थित रहे। मंच का संचालन नेमीचन्द गोयल, पारसनाथ ने संयुक्तरुप से किया। महाआरती के साथ जागरण संपन्न हुआ।

एकादशी उद्यापन एवं घोड़ा उजवना कार्यक्रम सम्पन्न

हैदराबाद, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। जीडिमेटला स्थित श्री आईमाताजी बडेर मे दो दिवसीय कार्यक्रम के प्रथम दिन शुक्रवार 13 सितम्बर पूजा-अर्चना, कलश यात्रा, हवन यज्ञ, भजनो के साथ एकादशी उद्यापन एवं दूसरे दिन 14 सितम्बर घोड़ा उजवना पंडित सत्यनारायण पाठक के मंत्रोच्चारण से चेन्नाईगुड़ी में आयोजित किया गया ।

प्रकाश परिहार व दिनेश परिहारिया ने बताया कि अतिथियों का सम्मानकर मांगीलाल सीरवी, प्रह्लाद टोकरला के भजनों का भक्तों ने सपरिवार लाभ लिया । कार्यक्रम के लाभार्थी गंडीमैसम्माः भंवरीबाई-नारायणलाल गेहलोत, रुपीबाई-भरत गेहलोत, कमलाबाई-मोहनलाल बर्फा, आशादेवी-अरविन्द गेहलोत, पेपीबाई-कालुराम गेहलोत, ताराबाई-भंवरलाल काग,देवीबाई-मदनलाल गेहलोत, इन्द्राबाई-तारामकाग, कमलाबाई-मदनलाल बर्फा, सीतादेवी-कन्हैयालाल बर्फा,रिन्कुदेवी-कैलाश बर्फा, ज्योतिदेवी-दिनेश परिहारिया, कंचनदेवी-रामलाल परिहारिया, सुशीला-जगदीश काग,ज्योति-खंगारराम गेहलोत, दुर्गा-जालाराम गेहलोत, पूजा-दिनेश काग, संतोष-मांगीलाल काग, ममता-रुपाराम आगलेचा, केलीबाई-प्रकाश परिहार, रेखा-रमेश परिहार, भंवरीबाई-मोहन हाम्बड़, भंवरीबाई-गमनाराम

हाम्बड़,कन्चन-शेषाराम हाम्बड़, सुकियाबाई-केसाराम हाम्बड़, संगीता-प्रकाश बर्फा, प्यारीदेवी-बुददास साद,मियापुरः रेखा-नेनाराम काग, बहादुरपल्लीः गीताबाई-वोराराम चोयल, संगीता-प्रकाश चोयल, विमला-गणेशराम चोयल,अमीरपेटः भावना-विकास चोयल, तीजाबाई-पूनाराम चोयल, जीडिमेटलाः लीलादेवी-रमेश सोलंकी,गुन्डला पोचमपल्लीः रेखा-प्रकाश परिहार, पोतयापल्लीः भुन्डीबाई-भंवरलाल परिहार, राहुल कोलः अनिता-रमेश परिहार,बोरमपेटः कन्चन-रमेश पंवार प्रमुखरुप से उपस्थित रहे। महाआरती के पश्चात कार्यक्रम का समापन हुआ ।

10 लाख युवाओं को मिलेगी नौकरी

सीएम भजनलाल ने किया बड़ा एलान

जयपुर, 15 सितंबर (एजेंसियां)। राजधानी जयपुर में अखिल भारतीय हरियाणा गौड ब्राह्मण महासभा के प्रतिभा सम्मान समारोह एवं सामूहिक गोठ कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शिरकत की।

इस दौरान राष्ट्रीय अध्यक्ष बिरधीचंद शर्मा व महासभा पदाधिकारियों ने सीएम शर्मा का 51 किलो की माला व साफा पहनाकर स्वागत किया। वहीं, मुख्यमंत्री ने प्रतिभाओं को सम्मानित किया।

सीएम भजनलाल ने दिलाया भरोसा

सीएम भजनलाल शर्मा ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सभी समाज के विद्यार्थियों को आगे बढाने के लिए छात्रावासों के लिए जमीन आवंटित करने का भरोसा दिलाया। साथ ही उन्होंने कहा कि राजस्थान सरकार दस लाख युवाओं को नौकरी देगी। जिसमें चार लाख सरकारी व छह लाख निजी क्षेत्र में नौकरी देने का काम करेगी। युवाओं को कौशल विकास के क्षेत्र में आगे बढाया जाएगा।

अखिल भारतीय हरियाणा गौड ब्राह्मण महासभा के प्रतिभा सम्मान समारोह एवं सामूहिक गोठ कार्यक्रम के दौरान लालसोट विधायक रामविलास डूंगरपुर, जयपुर शहर सासंद मंजू शर्मा, प्रदेश भाजपा महामंत्री मुकेश दाधीच, जमवारामगढ विधायक महेंद्रपाल मीना व सचिवालय कर्मचारी महासंघ के अध्यक्ष बुद्धिप्रकाश शर्मा भी शामिल हुए।

मासूम अर्जुन को लगा 17.50 करोड़ का इंजेक्शन

भावावेग में निशब्द हो गई मां

जयपुर, 15 सितंबर (एजेंसियां)। अभी भी समाज में मानवता मरी नहीं है। इसका एक बड़ा उदाहरण आपकी आंखें खोल देगा। 24 माह के अर्जुन जांगिड़ दुर्लभ बीमारी स्पाइनल मस्कुलर अट्रोपी से जूझ रहा था। अमेरिका से मंगाए गए 17.50 करोड़ रुपए का इंजेक्शन आखिरकार उसे सफलतापूर्वक लगा दिया गया। इस दुर्लभ बीमारी में मरीज के 24 माह आयु तक ही ये इंजेक्शन लगाने पर ही जान बचाई जा सकती है। शिक्षा विभाग के शिक्षकों तथा भामाशाहों के सहयोग से अब अर्जुन को एक नया जीवन मिलने की संभावनाएं प्रबल हो गई हैं।

दो माह पहले ही हुई जानकारी

मासूम अर्जुन जांगिड़ की इस दुर्लभ बीमारी की जानकारी से माता पिता बेखबर थे। जब अभिभावकों को इसकी जानकारी हुई तो उनके होश फाख्ता हो गए। उसे ठीक करने के लिए 17.50 करोड़ का इंजेक्शन लगाने की जरूरत थी। वो भी 24 माह की आयु के अंदर तक। उस समय बच्चा 22 माह का हो चुका था। दो माह के अंदर इतनी बड़ी राशि की व्यवस्था कर पाना शिक्षा विभाग में प्रयोगशाला सहायक के पद पर कार्यरत उसकी माता पूनम जांगिड़ के लिए नामुमकिन जैसा था। जब विभाग को जानकारी हुई, तो पूरे विभाग के अधिकारी और कर्मचारी इस मासूम की जान बचाने को आगे आ गए।

निदेशक की पहल, भामाशाहों-शिक्षकों व कार्मिकों का सहयोग

माध्यमिक शिक्षा निदेशक आशीष मोदी ने यह राशि जुटाने के लिए विभाग स्तर पर सभी कर्मचारियों से अपने वेतन से सहयोग देने की अपील की, तो कई भामाशाहों के साथ शिक्षक संगठन भी आगे आए।

परिणाम यह हुआ कि देखते ही देखते 17.50 करोड़ की राशि निर्धारित अवधि से पहले ही इकट्ठी कर ली गई। अमेरिका से इस इंजेक्शन को मंगाने का आर्डर दे दिया गया।

वरदान साबित हुआ यह दिन

14 सितंबर का दिन मासूम अर्जुन और उसके परिवार के लिए वरदान साबित हुआ, जब चिकित्सकों ने 24 माह के अर्जुन को यह इंजेक्शन लगाया। ऐसी ही दुर्लभ बीमारी से ग्रसित पुलिस विभाग में कार्यरत एक एएसआई के पुत्र के लिए भी पुलिस विभाग के कर्मचारियों ने ऐसे ही प्रयास किए थे। इंजेक्शन लगने के बाद अर्जुन के माता पिता इतने खुश हैं कि वे खुद नहीं बोल पा रहे।

कृतज्ञता के भाव के साथ खुशी से छलकती उनकी आंखें बोलती हैं। द्वारिकापुरी, जयपुर के उस घर में भी आज खुशियों के दीपक जल रहे हैं, जहां यह बच्चा रहता है।

6 नहीं अब 7 विधानसभा सीटों पर होंगे उपचुनाव

जयपुर, 15 सितंबर (एजेंसियां)। राजस्थान में अब विधानसभा उपचुनाव 6 नहीं बल्कि 7 सीटों पर होंगे। लोकसभा चुनाव के बाद प्रदेश की 5 विधानसभा सीटें खाली हो गई थी। जिन पर उपचुनाव होने थे। लेकिन उदयपुर जिले की सलूंबर से भाजपा विधायक अमृतलाल मीना के निधन के बाद सीटें बढ़कर 6 हो गई।

जिसके बाद अब अलवर जिले की रामगढ़ सीट से कांग्रेस विधायक जुबेर खान का निधन हो गया। उनके निधन के बाद अब विधानसभा में सातवीं सीट रिक्त हो गई है। खान के निधन के बाद

प्रदेश में कांग्रेस के विधायकों की संख्या 65 रह गई है।

राजस्थान में 7 सीटों पर विधानसभा उपचुनाव होगा। हालांकि चुनाव आयोग अभी तक चुनाव तारीखों का ऐलान नहीं किया है। गौरतलब है कि विधानसभा सीट खाली होने के 6 महीने बाद आयोग उपचुनाव करवाता है।

इन विधानसभा सीटों से जीतकर बने सांसद

अब चौरासी, सलूंबर, देवली-उनियारा, दौसा, झुंझुनूं, खींवसर और रामगढ़ विधानसभा सीटों पर उपचुनाव होंगे। चौरासी से राजकुमार रोत, दौसा से मुरारी लाल मीना, देवली-उनियारा से हरीश मीना, झुंझुनूं से बृजेश ओला और खींवसर सीट से हनुमान बेनीवाल सांसद बन गए थे, जिस वजह से यह पांच सीटें रिक्त हुई थी।

उपचुनाव को लेकर तैयारियां शुरू

राजस्थान में राजनीतिक पार्टियों ने विधानसभा उपचुनाव को लेकर तैयारियां तेज कर दी है। उपचुनाव को लेकर सियासी हलचल बढ़ती जा रही है। अब एक सीट और खाली होने से पार्टियों को दूसरा दृश्य दिखने लगा है। इन सीटों पर राजनीतिक दलों को भी मजबूती से काम करना पड़ रहा है।

आईएमडी की बड़ी भविष्यवाणी, इस साल पड़ेगी कड़ाके की ठंड

जयपुर, 15 सितंबर (एजेंसियां)। राजस्थान में इस बार मौसम का मिजाज पूरी तरह बदला हुआ है। भीषण गर्मी के बाद मानसून सक्रिय होते ही प्रदेशभर में भारी बारिश ने कहीं खूब कहर बरपाया तो कहीं सूखी पड़ी नदियों में पानी आने से खुशियां छलक पड़ी। माना जा रहा है कि भारी बारिश का दौर अभी थमने वाला नहीं है और अक्टूबर के अंत तक बना रहेगा। इसी बीच मौसम विभाग ने एक और नई भविष्यवाणी कर दी है। मौसम विभाग की मानें तो इस साल राजस्थान में कड़ाके की ठंड पड़ेगी। ऐसे में यह तो साफ है कि ठंड प्रदेशवासियों को परेशान करेगी।

विश्व मौसम विज्ञान संगठन डब्ल्यूएमओ का कहना है कि राजस्थान सहित देशभर में इस साल कड़ाके की ठंड पड़ेगी। इतना ही नहीं, इस साल सर्दियों के मौसम की अवधि भी बढ़ेगी। आईएमडी के महानिदेशक मृत्युंजय

महापात्रा ने भी कड़ाके की ठंड को लेकर भविष्यवाणी की थी।

प्रदेश में पहले भीषण गर्मी, अब भारी बारिश

बता दें कि मई और जून के महीने में राजस्थान के कई इलाकों में पारा 50 डिग्री पार कर गया था। रेगिस्तानी इलाकों में तो हालात ऐसे बन गए थे कि तेज धूप में कहीं पापड़-रोटी सिक गई थी, तो कहीं चावल तक उबल गए थे। लेकिन, जब भारी बारिश का दौर शुरू हुआ तो ऐसे इलाके चेरापूंजी बन गए। अब सर्दियों के दिनों में कड़ाके की ठंड परेशानी बढ़ाने वाली है।

क्यों पड़ेगी कड़ाके की ठंड?

दरअसल, ला नीना अल नीनो के उलट एक प्राकृतिक मौसम पैटर्न है, जिसमें प्रशांत महासागर के मध्य और पूर्वी हिस्सों में समुद्र का तापमान सामान्य से कम ठंडा होता है। ला नीना की वजह से देशभर में मानसूनी मौसम लंबा खींचता है और सामान्य से अधिक वर्षा होती है। जैसा की इन दिनों देखने को भी मिल रहा है।

इस साल सितंबर-नवंबर के बीच ला नीना की स्थिति बनने की 55 प्रतिशत संभावना है। ऐसे में अक्टूबर के अंत तक बारिश की संभावना है। अक्टूबर से फरवरी 2025 तक ला नीना के 60 प्रतिशत मजबूत होने की उम्मीद है। ऐसे में इस साल सामान्य से ज्यादा ठंड पड़ेगी और सर्दियों की अवधि भी बढ़ेगी।

आबूरोड में 10 करोड़ की लागत से बनेगा खेल स्टेडियम

खिलाड़ियों को मिलेगा प्रोत्साहन

सिरोही, 15 सितंबर (एजेंसियां)। केंद्रीय श्रम, रोजगार एवं युवा मामले तथा खेल मंत्री मनसुख मांडविया ने कहा कि खेलो इंडिया के तहत खिलाड़ियों के प्रोत्साहन के लिए आबूरोड में 10 करोड़ की लागत से खेल स्टेडियम बनेगा। इससे खिलाड़ियों को प्रोत्साहन मिलेगा तथा छिपी प्रतिभाओं को अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का मौका मिलेगा। वे एक दिवसीय यात्रा पर यहां पहुंचे थे।

भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष मनीष परसाई ने बताया कि केंद्रीय मंत्री मांडविया दिल्ली-अहमदाबाद राजधानी एक्सप्रेस ट्रेन से आबूरोड पहुंचे थे। एक निजी होटल में अभिनंदन के बाद पार्टी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं से बातचीत कर रहे थे। यहां से समीपवर्ती गुजरात के अमीरगढ़ में कई कार्यक्रमों में हिस्सा लेने के बाद अहमदाबाद के लिए प्रस्थान कर गए। इस दौरान जिलाध्यक्ष सुरेश

कोठारी ने बताया कि आबूरोड सिरोही जिले का सबसे बड़ा शहर है। यहां पर स्टेडियम नहीं होने से प्रतिभाओं का पूर्णरूप से विकास नहीं हो पा रहा है।

आबूरोड एक ग्रामीण क्षेत्र है तथा आसपास के गांव के बच्चों को अगर खेलों में सुविधाएं ओर उपकरण मिले तो वे राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अमिट छाप छोड़ सकते है। इस दौरान जिलाध्यक्ष द्वारा खेल मैदान के लिए आबूरोड सांतपुर स्तिथ आईटीआई रोड पर 7.5 बीघा जमीन स्थित है जोकि क्रीड़ा विभाग के अधीन है। इस पर आधुनिक सुविधाओं से युक्त स्टेडियम बनाने का सुझाव दिया गया। इस दौरान कोठारी का कहना था कि ये जगह आबूरोड शहर से 5 किलोमीटर की दूरी पर है। इसके समीप ही 2 छात्रावास भी है जो बालक व बालिका वर्ग के अलग अलग है।

वहां पर बच्चों को तीरंदाजी सहित अन्य खेलों का प्रशिक्षण दिया जाता है। सांसद लुंबाराम चौधरी ने कहा कि सिरोही में खेल का स्तर बहुत कम है। यहां प्रतिभा तो बहुत है पर उस छुपी हुई प्रतिभा को निखारने का कार्य करना होगा। यहां के लोग तीरंदाजी एवं तैराकी में निपुण है, अगर उन्हें सही प्रशिक्षण एवं उपकरण की व्यवस्था के साथ तकनीकी गुण सिखाए जाए तो यहां के बच्चे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान का ही नहीं पूरे भारत का नाम रोशन कर सकते है। इस पर खेलमंत्री मनसुख मंडविया ने कहा पूरे देश मे खेल की प्रतिभा 80 प्रतिशत गांवों से ही मिलती है। आबूरोड व उसके जिले के खिलाड़ियों के लिए उनकी छिपी प्रतिभा को सामने लाने के लिए जल्दी ही खेल स्टेडियम के लिए खेलो इंडिया के तहत 10 करोड़ रुपए के बजट की स्वीकृति की घोषणा की।

यहां के बच्चे भी अब अपने जिले ओर प्रदेश का नाम रोशन कर पाएंगे। मंत्री ने कहा 'खेलो इंडिया' कार्यक्रम को हमारे देश में खेले जाने वाले सभी खेलों के लिए एक मजबूत ढांचा तैयार करके जमीनी स्तर पर भारत में खेल संस्कृति को पुनर्जीवित करने और भारत को एक महान खेल राष्ट्र के रूप में स्थापित करने के लिए शुरू किया गया है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की एक सोच है कि खेलो इंडिया सेंटर पर हमारे जो पूर्व खिलाड़ी हैं उनके अनुभव को काम में लिया जाए और जिलास्तर पर उनकी नियुक्ति कर प्रतिवर्ष 5 लाख रुपए उस सेंटर को संचालित करने के लिए दिए जाए।

बैंक से 99.44 लाख का गबन किया

महिला लिपिक और उसका पति गिरफ्तार

अलवर, 15 सितंबर (एजेंसियां)। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की महल चौक शाखा के पार्किंग खाते से 99.44 लाख रुपए के गबन मामले में पुलिस ने महिला लिपिक और उसके पति को गिरफ्तार किया। दोनों आरोपियों को न्यायालय में पेश किया। जहां से उन्हें न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया गया।

शहर कोतवाली थाना पुलिस ने बताया कि शहर के स्कीम-10 निवासी निक्की सेठी पत्नी योगेश खत्री स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) महल चौक शाखा में लिपिक पद पर कार्यरत थी। जिसके पास बैंक के पार्किंग खाता प्रभारी का चार्ज भी था। लिपिक निक्की सेठी ने अपने पति योगेश खत्री के साथ मिलीभगत कर फर्जी वाउचर बनाकर पार्किंग खाते से 99.44 लाख रुपए का गबन करते हुए अनाधिकृत रूप से अपने परिवार और मिलने-जुलने वालों के 20

अलग-अलग खातों में ट्रांसफर कर लिए। बैंक की जांच में पता चलने पर बैंक मैनेजर अंशुमन ने महिला लिपिक निक्की सेठी के खिलाफ 6 सितम्बर 2022 को शहर कोतवाली थाने में प्रकरण दर्ज कराया। पुलिस ने मामले में करीब दो साल बाद महिला लिपिक निक्की सेठी और उसके पति योगेश खत्री को सूर्यनगर स्थित किराए के मकान से गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

जानकारी के अनुसार उक्त प्रकरण में बैंक प्रबंधन की ओर से आरोपी लिपिक निक्की सेठी के खिलाफ विभागीय जांच शुरू की। जांच में 99.44 लाख रुपए का गबन पाए जाने पर बैंक की ओर से लिपिक निक्की सेठी को पहले निलंबित और फिर बर्खास्त कर दिया था।

पुलिस ने बताया कि निक्की सेठी का पति योगेश खत्री क्रिकेट सट्टा खेलता है। वह क्रिकेट सट्टे में काफी रुपए हार गया था। सटोरियों को पैसा चुकाने के लिए पति योगेश के कहने पर निक्की ने बैंक के पार्किंग खाते से 99.44 लाख रुपए का गबन किया। इस गबन राशि से सटोरियों का पैसा चुकाया।

बैंक के पार्किंग से फर्जी वाउचर के जरिए निक्की ने शहर के कई सटोरियों के खातों में सीधे ही रकम ट्रांसफर की थी। पुलिस जांच में कई सटोरियों के नाम सामने आए हैं। जिन-जिन खातों में पैसा ट्रांसफर किया गया पुलिस उनसे भी अनुसंधान करेगी।

जयपुर के एमएनआईटी कॉलेज में मादा लेपर्ड कैद

सुरक्षित स्थान पर किया गया रिहा

जयपुर, 15 सितंबर (एजेंसियां)। एमएनआईटी कॉलेज झालाना लेपर्ड सफारी के पास स्थित है, और हाल के दिनों में यहाँ लेपर्ड की लगातार उपस्थिति की सूचना मिल रही थी। वन विभाग की टीम ने इस जानकारी के आधार पर कॉलेज परिसर में पिंजरे लगाए थे। कुछ दिन पहले भी एक नर लेपर्ड को इसी क्षेत्र से पकड़ा गया था।

रेस्क्यू के बाद मादा लेपर्ड को नाहरगढ़ वाइल्डलाइफ सेंचुरी में सुरक्षित रूप से छोड़ दिया गया, जहाँ उसे प्राकृतिक वातावरण में रहने का अवसर मिलेगा।

वन विभाग ने कॉलेज के स्टाफ और छात्रों को आश्वस्त किया है कि अब परिसर में कोई खतरा नहीं है।

इस सफल रेस्क्यू ऑपरेशन के चलते वन विभाग की टीम की काफी सराहना की जा रही है, जो लगातार इस क्षेत्र में वन्यजीवों की सुरक्षा और लोगों की सुरक्षा के लिए सतर्कता बरत रही है।

डीओआईटी के 10 बड़े घोटालों को लेकर किरोड़ी ने सौंपे सबूत

केस दर्ज करवाने की मांग, चर्चित आईएएस राडार पर

जयपुर, 15 सितंबर (एजेंसियां)। राजस्थान की सियासत में रविवार को एक बड़ा घटनाक्रम हुआ। सरकार से इस्तीफा दे चुके कैबिनेट मंत्री किरोड़ी लाल मीणा ने मौजूदा सरकार के फाइनेंस सेक्रेट्री आईएएस अखिल अरोड़ा सहित डीओआईटी के अन्य अफसरों के खिलाफ एफआईआर दर्ज करवाने की मांग की है। मामले में पूर्व में जांच एजेंसी एसीबी ने अखिल अरोड़ा के खिलाफ सरकार से भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की धारा 17-ए के तहत अनुसंधान की अनुमति के लिए सरकार को चिट्ठी खिली थी।

किरोड़ी लाल मीणा ने रविवार को सीएम भजनलाल शर्मा के भरोसेमंद मंत्री जवाहर सिंह बेड़म को ज्ञापन सौंप कर अखिल अरोड़ा सहित डीओआईटी के अन्य कई अफसरों के खिलाफ केस दर्ज करवाने की मांग की। ज्ञापन में डॉ. किरोड़ी ने इन सभी अफसरों के खिलाफ पूर्व में एसीबी को परिवादी टीएन शर्मा की ओर से सौंपे गए सबूतों की कॉपी भी सौंपी। उन्होंने ज्ञापन में एसीबी में दर्ज परिवाद सख्या 403/2019 एवं 19/2020 का हवाला देते हुए बताया कि उक्त परिवादों पर जांच के लिए एसीबी ने सरकार से अनुमति मांगी लेकिन पूर्व सरकार ने इस पर कोई निर्णय नहीं लिया। गौतरलब है कि एसीबी का यह पत्र अब पिछले 9 महीनों से मौजूदा सरकार के पास जांच की अनुमति के लिए पेंडिंग है।

किरोड़ी बोले जिनके खिलाफ मैं धरने पर बैठा, उन पर केस हो

डॉ. किरोड़ी ने ज्ञापन में वीडियो वॉल टेंडर, ई-मित्र मशीन घोटाला, फाइबर ऑप्टिक केबल घोटाला, ट्रेवलिंग अलाउंस घोटाला, राजनेट घोटाला, मेन पावर घोटाला, फर्जी दस्तावेजों से टेंडर लेने का घोटाला और अन्य दूसरे घोटालों का जिक्र करते हुए लिखा कि इन मामलों में एफआईआर दर्ज करवाने के लिए वे पिछली सरकार में 3 दिन तक अशोक नगर थाने के बाहर धरने पर बैठे थे।

लेकिन पूर्ववर्ती गहलोत सरकार ने इसके लिए जांच की अनुमति नहीं दी। डॉ. किरोड़ी बोले लॉकर्स में सोना मिलने का जिक्र प्रधानमंत्री ने अपने चुनावी सभाओं में किया, अब बीजेपी सरकार है इसलिए केस होनी जरूरी है।

बूंदी में भीषण सड़क हादसा, छह लोगों की मौत

कई गंभीर रूप से घायल, पुलिस घटनास्थल पर पहुंची

बूँदी, 15 सितंबर (एजेंसियां)। बूंदी में भीषण सड़क हादसे में छह लोगों की मौत हो गई है। पुलिस के अनुसार घटना सुबह साढ़े चार बजे के आसपास हुई है। इस घटना में जिनकी मौत हुई है उनकी शिनाख्त की जा रही है, जबकि जो तीन लोग घायल हुए हैं, वो मध्यप्रदेश के रहने वाले हैं। पुलिस फिलहाल उस अज्ञात वाहन की तलाश में है, जिसने इको गाड़ी को टक्कर मारी है। हाइवे पर लगे कैमरों और टोल प्लाजा पर लगे कैमरों की भी जांच की जा रही है।

घटना को लेकर बूंदी की एएसपी उमा शर्मा ने बताया कि पुलिस को इस घटना की जानकारी करीब साढ़े चार बजे मिली। मौके पर पहुंचने के बाद हमने इस हादसे में घायल लोगों को पास के अस्पताल पहुंचाया। इस घटना में अभी तक 6 लोगों की मौत की खबर है जबकि कई लोग गंभीर रूप से घायल है। जिन लोगों की मौत हुई है उनकी शिनाख्त की जा रही है।

एससीआर जीएम ने "कवच संस्करण 3.2' प्रणाली के कामकाज का निरीक्षण किया

हैदराबाद, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। एससीआर महाप्रबंधक अरुण कुमार जैन ने रविवार को सिकंदराबाद और उम्दानगर सेक्शन के बीच तुंगभद्रा एक्सप्रेस में यात्रा करके "कवच संस्करण 3.2' प्रणाली के कामकाज का निरीक्षण किया। उनके साथ सौरभ बंदोपाध्याय, प्रिंसिपल चीफ सिग्नल एंड टेलीकॉम इंजीनियर, एससीआर; लोकेश विश्नोई, डिवीजनल रेलवे मैनेजर, हैदराबाद डिवीजन; वीएनएम राव चीफ सिग्नल एंड टेलीकॉम इंजीनियर/प्रोजेक्ट्स/सिकंदराबाद और अन्य वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे। निरीक्षण के दौरान महाप्रबंधक ने कवच टावर्स, ट्रैक साइड उपकरण और सिग्नलिंग सिस्टम जैसे विभिन्न पहलुओं के कामकाज की जांच की। दक्षिण मध्य रेलवे के नागरसोल-मुदखेड़-सिकंदराबाद-धोन-गुंटकल और बीदर-परली वैजनाथ-परभणी सेक्शन (1200 किमी रूट) में सफल परीक्षणों के बाद कवच (संस्करण 3.2) को वाणिज्यिक परिचालन में लाया गया है। कवच प्रणाली लोको पायलट द्वारा ब्रेक लगाने में विफल रहने की स्थिति में स्वचालित रूप से ब्रेक लगाकर ट्रेन को निर्दिष्ट गति सीमा के भीतर चलाने में लोको पायलट की सहायता करती है और खराब मौसम के दौरान ट्रेन को सुरक्षित रूप से चलाने में भी मदद करती है। इस अवसर पर बोलते हुए अरुण कुमार जैन ने विस्तार से बताया कि ब्लॉक सेक्शनों और स्टेशनों पर चलती लाइनों पर ट्रेनों की टक्कर को रोकने के लिए कवच प्रणाली को स्वतंत्र सुरक्षा निर्धारक द्वारा उच्चतम स्तर की सुरक्षा अखंडता स्तर - (एसआईएल4) के लिए प्रमाणित किया गया है। उन्होंने कहा कि कवच के संचालन से खतरे में सिग्नल पासिंग की घटनाओं में भी कमी आएगी जिससे ट्रेन संचालन की सुरक्षा सुनिश्चित होगी। उन्होंने बताया कि जोन निकट भविष्य में कवच संस्करण को 4.0 में अपग्रेड करने की भी योजना बना रहा है। महाप्रबंधक ने उम्दानगर रेलवे स्टेशन का भी निरीक्षण किया तथा यात्री सुविधाओं, सर्कुलेटिंग एरिया आदि का जायजा लिया। उन्होंने कवच प्रणाली के लिए सुरक्षा संबंधी प्रतिष्ठानों का भी निरीक्षण किया। उन्होंने भविष्य की जरूरतों और मांगों को ध्यान में रखते हुए उम्दानगर रेलवे स्टेशन के लिए विकास योजनाओं पर चर्चा की।

कांग्रेस कार्यकर्ताओं की सेवाओं को मान्यता देती है : भट्टी

हैदराबाद, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। उपमुख्यमंत्री भट्टी विक्रमार्क ने आश्वासन दिया है कि पार्टी में उनकी सेवाओं के लिए हर कांग्रेस कार्यकर्ता को मान्यता और सम्मान दिया जाएगा। उन्होंने महेश कुमार गौड़ के पीसीसी अध्यक्ष बनने को एक प्रेरणादायक उदाहरण बताया।रविवार को गांधी भवन में महेश कुमार गौड़ के टीपीसीसी अध्यक्ष के रूप में कार्यभार संभालने के बाद पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए भट्टी विक्रमार्क ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं के अथक प्रयासों की सराहना की, जिन्होंने भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) के पिछले 10 साल के शासन के दौरान दमन और कई कानूनी मामलों का सामना करने के बावजूद पार्टी को मजबूत करने के अपने मिशन में अडिग रहे। विक्रमार्क ने महेश कुमार गौड़ को उनकी नियुक्ति पर बधाई देते हुए इसे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के मार्गदर्शन, राहुल गांधी के विज़न और सोनिया गांधी के आशीर्वाद का श्रेय दिया। उन्होंने गौड़ को इतनी महत्वपूर्ण भूमिका सौंपने के लिए एआईसीसी के प्रति आभार व्यक्त किया और पार्टी के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता को स्वीकार किया। उपमुख्यमंत्री ने जोर देकर कहा कि महेश कुमार गौड़ के नेतृत्व में, पीसीसी को इंदिरा गांधी के दौर के कांग्रेस शासन के मूल्यों को प्रतिबिंबित करते हुए कांग्रेस सरकार के कल्याणकारी कार्यक्रमों और विकासात्मक योजनाओं को हर घर तक पहुंचाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। कांग्रेस पार्टी के वादों पर प्रकाश डालते हुए, विक्रमार्क ने बताया कि उन्होंने लोगों को महिलाओं के लिए मुफ्त सार्वजनिक परिवहन और गैस सिलेंडर पर सब्सिडी सहित छह प्रमुख गारंटियां सफलतापूर्वक दी हैं। उन्होंने प्रति घर 200 यूनिट मुफ्त बिजली प्रदान करने और प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र में 3,500 इंदिराम्मा घरों के निर्माण के साथ-साथ प्रति लाभार्थी 5 लाख रुपये तक की वित्तीय सहायता प्रदान करने के चल रहे प्रयासों के बारे में बात की। विक्रमार्क ने तेलंगाना कांग्रेस सरकार द्वारा 15 दिनों के भीतर किसानों के 18,000 करोड़ रुपये के कर्ज माफ करने के ऐतिहासिक फैसले पर भी गर्व जताया और इसे भारत के इतिहास में अभूतपूर्व कदम बताया। उन्होंने पार्टी सदस्यों से इन उपलब्धियों को जनता के बीच फैलाने का आह्वान किया ताकि कांग्रेस की स्थिति और मजबूत हो सके।

त्योहारी भीड़ को कम करने हैदराबाद मेट्रो करेगी विशेष व्यवस्था

हैदराबाद, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। गणेश उत्सव के दौरान मेट्रो ट्रेनों में भारी भीड़ को नियंत्रित करने के लिए हैदराबाद मेट्रो ने अधिक आवृत्ति वाली अतिरिक्त ट्रेनें चलाने सहित विशेष व्यवस्था करने का निर्णय लिया है। एचएमआरएल ने रविवार को एक बयान में कहा कि पिछले कुछ सप्ताहों में मेट्रो ट्रेनों और स्टेशनों पर भारी भीड़ देखी गई है और यात्रियों की संख्या प्रतिदिन 5 लाख का आंकड़ा पार कर गई है।

खैरताबाद गणेश के दर्शनार्थियों की भीड़ ने मेट्रो यात्रियों की भीड़ को और बढ़ा दिया तथा शनिवार को खैरताबाद मेट्रो स्टेशन का उपयोग लगभग 94,000 यात्रियों ने किया, जिनमें 39,000 यात्री प्रवेश कर रहे थे तथा 55,000 यात्री बाहर जा रहे थे। सामान्य रूप से मेट्रो ट्रेनों में और विशेष रूप से खैरताबाद स्टेशन पर भारी भीड़ को सुविधाजनक बनाने और प्रबंधित करने के लिए, एचएमआरएल के प्रबंध निदेशक एनवीएस रेड्डी ने विशेष व्यवस्था करने के लिए एलएंडटीएमआरएचएल के प्रबंध निदेशक केवीबी रेड्डी और दोनों संगठनों के अन्य अधिकारियों के साथ बैठक की। तदनुसार, गणेश प्रतिमा विसर्जन की समाप्ति तक आवश्यकतानुसार पीक आवर्स के दौरान अधिक आवृत्ति वाली अतिरिक्त रेलगाड़ियां चलाई जाएंगी। मंगलवार को ट्रेनें आधी रात के बाद भी संचालित की जाएंगी और सभी दिशाओं में अंतिम ट्रेनें रात 1 बजे रवाना होंगी तथा लगभग 2 बजे यानी बुधवार तड़के अपने गंतव्यों पर पहुंचेंगी।

अग्रसेन बैंक की 26वीं वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत

अग्रसेन बैंक ने अपने शेयरधारकों को दिया 16%लाभांश : प्रमोद कुमार केडिया

हैदराबाद, 15 सितंबर(स्वतंत्र वार्ता)। अग्रसेन बैंक चेयरमैन प्रमोद कुमार केडिया ने कहा कि, अग्रसेन बैंक की 26वीं वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी है।जिसमें उन्होने कहा कि, बैंकिंग क्षेत्र में अद्भुत प्रगति के चलते अग्रसेन बैंक ने अपने शेयरधारकों को 16%लाभांश दिया है।

इस संदर्भ में, महानगर हैदराबाद में, अग्रसेन बैंक के निदेशक मंडल की बैठक आयोजित हुई। जिसमें बैंक चेयरमैन प्रमोद कुमार केडिया ने कहा कि, यह सूचित करते हुए मुझे प्रसन्नता है कि, बैंक ने समाप्त तिमाही 31 मार्च 2024 को, अपने शेयरधारकों या शेयरहोल्डर्स को 16 प्रतिशत लाभांश दिया है तथा यह लाभांश जोकि, हाल ही में गत वर्ष के जनरल बाडी बैठक के अनुमोदन की तुलना में एक प्रतिशत अधिक है। सभी शाखाएं नगरव्दय के क्षेत्राधिकार के तहत होंगी। इसके चलते महानगर हैदराबाद के अन्य क्षेत्रों में भी हमारे बैंक की प्रतिष्ठा बनाएं रखेंगे।

इस मामले में बैंक चेयरमैन ने यह भी बताया कि, इस वर्ष के दौरान, अर्थात् जून 2024 में, आपके इस बैंक को, अत्याधुनिक कारपोरेट सुविधाओं सहित सिध्दअंबर बाजार स्थित मेन ब्रांच के विस्तृत परिसर में स्थानांतरित किया गया है। साथ ही इसी परिसर में बैंक के हेडआफिस(बैंक मुख्यालय) को अपग्रेड करने की योजना है एवं जल्द ही इसे अपग्रेड किया जायेगा।

इसके बारे में अग्रसेन बैंक चेयरमैन प्रमोद कुमार केडिया ने कहा कि, मैं, निदेशक मंडल व प्रबंधन मंडल की ओर से, प्रतिष्ठित शेयरधारकों, बहुमूल्य ग्राहकों, भारतीय रिजर्व बैंक के पदाधिकारियों, को-आपरेशन विभाग व रजिस्ट्रार आफ को-आपरेटिव सोसाइटीज, स्टेट को-आपरेटिव इलेक्शन एथारिटी(एसीइए) तेलंगाना सरकार, नेशनल पेमेन्ट्स कारपोरेशन आफ इंडिया, तेलंगाना स्टेट को-आपरेटिव अर्बन बैंक फेडरेशन, एनएएफसीयूबी, एनयुसीएफडीसी, आडिटर्स, कानूनी सलाहकार, वैल्यूएर्स, साफ्टवेयर वेन्डर्स, स्वीच प्रोवाइडर्स, प्रेस एंड मीडिया तथा अन्य को धन्यवाद देता हूं तथा हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं कि, इन उक्त सभी के अतुलनीय सहयोग के बिना हमारा बैंक उत्कृष्टता शिखर छूने में न सफल रहता एवं बैंक द्वारा संपादित आशान्वित परिणाम ही न प्राप्त करता। इस बैठक में तत्संबंधित बैंकिंग क्षेत्र के अधिकारियों सहित अन्य संबंधित अधिकारियों ने भी भाग लिया।

बालापुर गणेश लड्डू नीलामी पर सबकी निगाहें

हैदराबाद, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। विनायक चविथि उत्सव के मंगलवार को समापन के साथ, बालापुर गणेश लड्डू नीलामी में भारी भीड़ उमड़ रही है और उम्मीद है कि बोली आसानी से पिछले वर्ष के 27 लाख रुपये के रिकॉर्ड मूल्य को पार कर जाएगी। 21 किलो का 'बंगारू लड्डू' (स्वर्ण लड्डू), जैसा कि स्थानीय लोग इसे कहते हैं, पिछले साल उत्सव के दौरान तुर्कयामजाल के दसारी दयानंद रेड्डी ने खरीदा था। मंगलवार की सुबह होने वाली इस साल की नीलामी ने भक्तों और संभावित बोलीदाताओं के बीच पहले से ही दिलचस्पी जगा दी है। जबकि पिछले सफल बोलीदाता

भागीदारी के लिए पात्र हैं, रविवार तक पांच नए उम्मीदवारों ने अपनी भागीदारी की पुष्टि की है।

बालापुर गणेश उत्सव समिति के अध्यक्ष कल्लेम निरंजन रेड्डी ने कहा कि मंगलवार सुबह तक लड्डू प्रसादम की दौड़ में और अधिक प्रतिभागियों के शामिल होने की उम्मीद है। इस वर्ष से बालापुर गणेश उत्सव समिति ने बोली प्रक्रिया में कुछ बदलाव किए हैं। गैर-स्थानीय लोगों की तरह अब बालापुर के स्थानीय लोगों के लिए भी बोली में भाग लेने के लिए पिछले वर्ष की सफल बोली राशि को आधार राशि के रूप में जमा करना अनिवार्य होगा। अब तक स्थानीय लोगों को राशि जमा करने के लिए एक वर्ष का समय दिया जाता था। मंगलवार को भोर होने से पहले, नीलामी शुरू होने से पहले बालापुर गणेश की भव्य पूजा की जाएगी और पूरे क्षेत्र में जुलूस निकाला जाएगा।

गुडिहात्नुर कालेज में मनाया गया हिंदी दिवस

आदिलाबाद , 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। जिला शासकीय माध्यामिक माहविध्यालय गुडिहात्नुर में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया । महाविद्यालय के छात्रों ने विविध कार्यक्रम प्रस्तुत कर कार्यक्रम को सफल बनाया। समारोह की अध्यक्षता डी.श्रीनीवास , हिंदी प्रवक्ता श्रावण राठोड ने दीप प्रज्वलितकर कार्यक्रम का प्रारंभ किया गया। अध्यक्ष ने हिंदी संबंधी गतिविधियों पर प्रकाश डाला। हिंदी प्रवक्ता हिंदी भाषा के महत्व राजभाषा हिंदी को राष्ट्रीय एकता की भाषा कहा। छात्रों ने देश भक्ति का गाना गाकर सभी को मंत्रमुग्ध किया। हिंदी प्रतियोगिताओं तथा हिंदी परीक्षाओं में प्रथम , द्वितीय आने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार दिया गया।

इस संदर्भ में हिंदी प्रवक्ता श्रावण राठौड़ को माह विद्यालय के प्राध्यापक प्रधापिका, विद्यार्थियों ने शाल से सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में महा विद्यालय के प्राध्यापक, प्राध्यापिका गाजुला श्रीनिवास, संजय रेड्डी, प्रविण , राजेदर, रत्नाकर, नरस्या ,ज्ञानेश्वर,राजेश्वर, मेडम मीना, रवी , वेंकट , मणी, विद्यार्थिनी ,विद्यार्थि उपस्थित थे।

एयर कमोडोर वीएम रेड्डी, डीडीजी एनसीसी ने कैडेटों को सम्मानित किया

हैदराबाद, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। एनसीसी निदेशालय आंध्र प्रदेश और तेलंगाना ने प्रतिष्ठित अखिल भारतीय थल सेना बालिका प्रतियोगिता - 2024 जीती। यह शिविर 02 से 13 सितंबर 2024 तक नई दिल्ली में आयोजित किया गया था। उत्कृष्टता के एक उल्लेखनीय प्रदर्शन में, 91 कैडेटों से युक्त निदेशालय दल ने दो अखिल भारतीय ट्रॉफी, 10 स्वर्ण पदक, 9 रजत पदक और 9 कांस्य पदक जीते थे, इसके अलावा अखिल भारतीय थल सैनिक शिविर (एआईटीएससी) - बालिकाओं में कड़ी प्रतिस्पर्धा को हराकर पहला स्थान हासिल किया था। भारत के अन्य एनसीसी निदेशालयों में से। टीएससी लड़कों की टुकड़ी ने अखिल भारतीय प्रतियोगिता में चौथा स्थान हासिल किया था। एपी और तेलंगाना टीम 1% निदेशालय टीमों में से दूसरे स्थान पर रही। "लड़कियों और लड़कों' की टीमों ने क्रमशः स्वास्थ्य और स्वच्छता और मानचित्र पढ़ने की प्रतियोगिताओं में पहला स्थान हासिल किया है। जूनियर विंग की कैडेट हंसिता ने व्यक्तिगत स्वर्ण पदक और सीनियर डिवीजन के कैडेट साई चंदू ने शूटिंग प्रतियोगिता में कांस्य पदक जीता। एनसीसी निदेशालय (एपी और तेलंगाना) के उप महानिदेशक एयर कमोडोर वीएम रेड्डी ने दिल्ली से लौटने पर टीएससी टुकड़ी के कैडेटों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि यह अनुकरणीय प्रदर्शन आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के अधिकारियों और कैडेटों की उत्कृष्टता के प्रति सावधानीपूर्वक प्रशिक्षण व्यवस्था और प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उन्होंने टीएससी प्रशिक्षण टीम के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को धन्यवाद दिया और कैडेटों को उनके शानदार प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष महेश गौड़ के पदभार ग्रहण करने के दौरान मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी के साथ वन एवं पर्यावरण मंत्री कोंडा सुरेखा ने मुलाकात की।

हैदराबाद क्षेत्र की केवी एएफएस बेगमपेट टीम ने बॉस्केट बॉल में दूसरा स्थान हासिल किया। फाइनल में, उन्होंने जयपुर क्षेत्र के खिलाफ खेला और 58-49 के स्कोर के साथ उपविजेता रहा।

गणपति प्रतिमा का विसर्जन

निर्मल में क्रेन द्वारा गणेश विसर्जन करते हुए विधायक रामराव पटेल, एसपी जानकी शर्मिला

निर्मल, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। नौ दिनों के भगवान गणेश उत्सव के बाद भैंसा में लोगों ने धूम धाम से सार्वजनिक गणेश विसर्जन किया। सुबह शहर में सर्व प्रथम भट्टी गल्ली मुन्नूर कापू संघम, भजरंग युत गणेश मंडल और ब्राह्मण गल्ली स्थित गोपाल कृष्ण मंदिर सार्वजनिक गणेश मंडल में एसपी जानकी शर्मिला, भैंसा आरडीओ कोमल रेड्डी, एएसपी अविनाश कुमार, मुधोल विधायक पवार रामा राव पटेल, और नगर आयुक्त राजेश कुमार सहित उत्सव समिति अध्यक्ष पेंडैप कासीनाथ सहित अन्य ने पूजा कर शोभा यात्रा को प्रारंभ किया।

विसर्जन के दौरान एसपी जानकी शर्मिला और एएसपी अविनाश कुमार विधायक पवार रामराव पटेल ने सुबह गड्डेना परियोजना का निरीक्षण किया और क्रेन द्वारा गणेश विसर्जन व्यवस्था की जांच की।

भैंसा में लगभग 200 गणेश मंडप बनाए गए जिनमें से करीब 80 मंडलियों ने शोभा यात्रा में भाग लिया अन्य ने सुबह 2 बजे तक विसर्जन किया। शोभा यात्रा मुख्य मार्ग व गलियों से होते हुए पंजेशा चौक किसान गल्ली, नेताजी सुभाष चंद्र बोस चौक, पुराना बाजार, गोशाला से परियोजना तक निकाली गई। शहर में श्रद्धालु ने जगह जगह अन्न दान, जल वितरण आयोजित किया।

भाजपा कार्यकर्ताओं को बलात्कार पीड़िता से मिलने से रोका गया

के.बी.आर. पार्क बंजारा हिल्स में भगवान गणेश की पूजा करते हुए राजेंद्र कुमार अग्रवाल, सुरेंद्र कुमार अग्रवाल, मंसाराम अग्रवाल, गोपाल बलदावा, रवींद्र सिंह, नरसिंग राव, प्रवीण जैन, कमल किशोर, आनंद श्रीनिवास, पप्पू डाकोतिया, सी.ए. सुरेश अग्रवाल, किशोर अग्रवाल, विजय कुमार अग्रवाल, विट्ठल दास अग्रवाल, शंकर लाल अग्रवाल, माया अग्रवाल, पल्लवी, प्रेरणा आदि।

आदिलाबाद, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। आदिलाबाद के सांसद जी नागेश और विधायक पायल शंकर के नेतृत्व में भाजपा कार्यकर्ताओं को पुलिस द्वारा रोके जाने पर कुछ देर के लिए हल्का तनाव पैदा हो गया। वे रविवार को उत्नूर मंडल केंद्र में बलात्कार और हत्या के प्रयास से बची आदिवासी महिला से मिलने जा रहे थे। उत्नूर-जैनूर रोड पर स्थापित पुलिस चेक पोस्ट पर पीड़िता से मिलने से रोकने पर नेताओं की पुलिस से बहस हो गई। पुलिस ने नेताओं को रोकने के लिए लाठीचार्ज किया, जिससे तनाव की स्थिति पैदा हो गई। उन्हें उटनूर के एक पुलिस स्टेशन में स्थानांतरित कर दिया गया, जहां से शाम को उन्हें रिहा कर दिया गया।

बस की टक्कर से 2 लोगों की मौत

जगतियाल, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। जगतियाल ग्रामीण मंडल के पोलासा के पास रविवार दोपहर हुई सड़क दुर्घटना में दो लोगों की मौत हो गई। यह घटना उस समय घटी जब एक बस ने दोपहिया वाहन को टक्कर मार दी। जगतियाल से धर्मपुरी की ओर जा रही बस ने पोलास मोड़ पर वेलगोंडा से जगतियाल जा रहे दोपहिया वाहन को टक्कर मार दी। मोटरसाइकिल सवार दो लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि एक अन्य व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया।

मेडकनेक्ट में 1 हजार से अधिक स्वास्थ्य पेशेवरों ने लिया भाग

हैदराबाद, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। जवाहरलाल नेहरू प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (जेएनटीयू) हैदराबाद में हेल्थकेयर एड-टेक कंपनी एकेडमिकली ग्लोबल द्वारा आयोजित मेडकनेक्ट के दूसरे चरण में 1,000 से अधिक स्वास्थ्य पेशेवरों और छात्रों ने भाग लिया। प्रतिभागियों को चिकित्सा, दंत चिकित्सा, फार्मेसी, फिजियोथेरेपी, ऑप्टोमेट्री और प्रयोगशाला प्रौद्योगिकी तथा विभिन्न प्रवासन मार्गों में वैश्विक स्वास्थ्य देखभाल कैरियर के अवसरों के बारे में जानकारी प्राप्त हुई।

जेएनटीयू-हैदराबाद के रेक्टर डॉ. के विजय कुमार रेड्डी और जेएनटीयूएच यूसीपीएस की प्रिंसिपल डॉ. एम सुनीता रेड्डी ने स्वास्थ्य पेशेवरों को अंतर्राष्ट्रीय करियर पथों के बारे में मार्गदर्शन देने में व्यावहारिक दृष्टिकोण के लिए इस पहल की सराहना की। एकेडमिकली ग्लोबल के संस्थापक और सीईओ डॉ. अकरम अहमद ने वैश्विक स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में करियर विकास और अवसरों के विभिन्न पहलुओं के बारे में बात की। कार्यक्रम में प्रवासन मार्ग, लाइसेंस परीक्षाओं की तैयारी, उभरते वैश्विक अवसर और विदेश में व्यावसायिक सफलता के लिए अनुकूलित रणनीति जैसे विषयों पर सत्र शामिल थे।

प्रथम पृष्ठ का शेष भाग...

एके का पद..

दो-तीन महीने पहले दिल्ली में चुनाव की मांग कर केजरीवाल इस सिपथी को भुनाना चाहेंगे।

भाजपा ने इस्तीफा मांगा था, उसका भी जवाब दे सकेंगे: दिल्ली शराब नीति केस में नाम आने और गिरफ्तारी के बाद से ही भाजपा के नेता अरविंद केजरीवाल से मुख्यमंत्री पद छोड़ने की मांग कर रहे हैं। केजरीवाल ने अब इस्तीफे का ऐलान कर दिया है। अब वे भाजपा नेताओं के हर हमले का जवाब सकेंगे कि मैंने तो इस्तीफा दे दिया।

इस्तीफे पर 3 पार्टियों के बयान

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा: अरविंद केजरीवाल कह रहे हैं कि वे दिल्ली की जनता के बीच जाएंगे। जनता ने तो 3 महीने पहले ही अपना फैसला सुना दिया था, जब उन्होंने जेल के बदले वोट नारा लगाया था। जनता ने अपना फैसला सुनाते हुए उन्हें शून्य सीटें दीं।

दिल्ली कांग्रेस के नेता संदीप दीक्षित: केजरीवाल का दोबारा सीएम बनने का सवाल ही नहीं उठता। हम लंबे समय से कह रहे हैं कि उन्हें इस्तीफा दे देना चाहिए। यह एक नौटंकी है। सुप्रीम कोर्ट केजरीवाल के साथ एक अपराधी की तरह व्यवहार कर रहा है। नैतिकता और अरविंद केजरीवाल के बीच कोई संबंध नहीं है।

आप राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा: सीएम अग्नि-परीक्षा से गुजरने के लिए तैयार हैं। केजरीवाल ने 2020 में काम के नाम पर वोट मांगा था और कहा था कि अगर मैंने काम किया है तो ही मुझे वोट देना, अगर काम नहीं किया तो वोट मत देना। जनता आप को वोट देकर सीएम को ईमानदार घोषित करेगी।

मोदी ने छह वंदे ...

साथ ही उन्होंने आज रांची हवाई अड्डे पर उनके लिए किए गए स्वागत की कुछ जानकारी भी दी, जहां एक महिला ने उन्हें कर्म पर्व का प्रतीक भेंट किया। उन्होंने कहा कि कर्म पर्व के तहत महिलाएं अपने भाइयों के सुखी जीवन की कामना करती हैं। इस अवसर पर मोदी ने झारखंड के लोगों और इन वंदे भारत ट्रेनों के माध्यम से कनेक्टिविटी पाने वाले अन्य राज्यों को भी बधाई दी। उस समय को याद करते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा कि, 'सबका साथ सबका विकास' के मंत्र ने देश की सोच और प्राथमिकताओं को बदल दिया है। देश की प्राथमिकताएं गरीब, आदिवासी, दलित, वंचित, महिलाएं, युवा और किसान हैं।

प्रधानमंत्री ने कुछ दिन पहले उत्तर और दक्षिण भारत के राज्यों के लिए तीन नई वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी दिखाने के अवसर को याद किया और आज छह नई वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी दिखाने का उल्लेख किया, जो पहले ही अपनी यात्रा शुरू कर चुकी हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि पूर्वी भारत में रेल कनेक्टिविटी के विस्तार से क्षेत्र की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी और व्यवसायों, पेशेवरों और छात्रों को काफी लाभ होगा। छह नई वंदे भारत ट्रेनों के चलने से सांस्कृतिक गतिविधियों में होने वाली बढ़ोत्तरी का ज़िक्र करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत और दुनिया से बड़ी संख्या में काशी आने वाले तीर्थयात्रियों को अब वाराणसी-देवघर वंदे भारत ट्रेन के शुरु होने से, देवघर में बाबा बैद्यनाथ के दर्शन करने का भी मौका मिलेगा।

स्वतंत्र वार्ता
Email :
svaarttha2006@gmail.com
svaarttha@rediffmail.com
svaarttha2006@yahoo.com
Epaper :
epaper.swatantravaartha.com
For Advertisement :
swadds1@gmail.com

टूटे हाथ के साथ डायमंड लीग फाइनल में उतरे नीरज चोपड़ा

ब्रुसेल्स, 15 सितंबर (एजेंसियां)। नीरज ने बताया कि सोमवार (नौ सितंबर) को अभ्यास के दौरान वह चोटिल हो गए थे। बाद में एक्स-रे से पता चला कि उनके बाएं हाथ की चौथी मेटाकार्पल हड्डी में फ्रैक्चर हो गया है। हालांकि, चिकित्सकों की मदद से वह फाइनल खेलने में कामयाब हुए। नीरज ने लिखा- जैसे-जैसे 2024 का सीजन समाप्त हो रहा है, मैं उन सब चीजों को याद कर रहा हूं जो मैंने साल भर में सीखा है जिसमें सुधार, असफलताओं, मानसिकता और बहुत कुछ है। सोमवार को अभ्यास के दौरान मुझे चोट लग गई और एक्स-रे से पता चला कि मेरे बाएं हाथ की चौथी मेटाकार्पल हड्डी में फ्रैक्चर हो गया है। यह एक और दर्दनाक चुनौती थी। लेकिन अपनी टीम की मदद से मैं ब्रसेल्स में भाग लेने में सक्षम हो गया।

ब्रसेल्स में खेले गए फाइनल मुकाबले में नीरज 87.86 मीटर के थ्रो के साथ दूसरे स्थान पर रहे। वहीं, ग्रेनेडा के एंडरसन पीटर्स ने 87.87 मीटर के थ्रो के साथ पहला स्थान हासिल किया और खिताब पर कब्जा जमाया।

उन्होंने आगे लिखा- यह साल की आखिरी प्रतियोगिता थी और मैं अपने सीजन का अंत ट्रैक पर करना चाहता था। हालांकि, मैं अपनी उम्मीदों पर खरा नहीं उतर पाया, लेकिन मुझे लगता है कि यह एक ऐसा सीजन था जिसमें मैंने बहुत कुछ सीखा। अब मैं पूरी तरह से फिट और खेलने के लिए तैयार हूं। मैं आप सभी को आपके प्रोत्साहन के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं। 2024 ने मुझे एक बेहतर एथलीट और इंसान बनाया है। 2025 में मिलते हैं। जय हिन्द!

दूसरे स्थान के सिलसिले को तोड़ने से चूके

टोक्यो ओलंपिक में स्वर्ण के बाद पेरिस में रजत पदक जीतने वाले नीरज चोपड़ा डायमंड लीग के सत्र का समापन जीत के साथ करने का लक्ष्य लेकर उतरे थे। वह 14 अंक लेकर चौथे स्थान के साथ फाइनल में पहुंचे। हालांकि, यहां उन्हें दूसरे स्थान के साथ संतोष करना पड़ा। इससे पहले वह दोहा और लुसाने में दूसरे स्थान पर रहे थे। वहीं, पेरिस ओलंपिक में भी वह दूसरे स्थान पर रहे थे।

कमर की चोट के बावजूद नीरज ने 2024 में खुद को पहले से कहीं अधिक कठिन बना लिया है। महत्वपूर्ण ओलंपिक वर्ष पर ध्यान केंद्रित करने के लिए उन्होंने सर्जरी में देरी करने का विकल्प चुना है। हर बार जब वह मैदान पर उतरे तो उन्हें पता होता था कि एक गलती उनके करियर को भी नुकसान पहुंचा सकती है। चोट ने कभी-कभी उनके रन-अप, ब्रेकिंग और रिलीज को प्रभावित किया है, लेकिन उनके दृढ़ संकल्प को नहीं हिला सकी है। उनकी दृढ़ता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा उनकी समर्पित टीम है। विशेष रूप से फिजियो ईशान मारवाहा ने नीरज को इस चुनौतीपूर्ण सीजन के दौरान मैच फिट रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

ऐसे में फैंस यह उम्मीद कर सकते हैं कि भारतीय स्टार नए सीजन से पहले अपने चोट और बाकी समस्याओं को सुलझा लेंगे और एक बार फिर 90 मीटर को छूने के लक्ष्य का पीछा करेंगे। नीरज ने कहा कि वह इस उपलब्धि के बारे में ज्यादा नहीं सोचते थे, लेकिन अब यह उनके दिमाग में है और नए सत्र में इसे तोड़ने का लक्ष्य रखेंगे। साल 2025 में फैंस निश्चित रूप से ऐसे नीरज को देखने की उम्मीद कर सकते हैं जो दूसरी डायमंड लीग ट्रॉफी हासिल करने और 90 मीटर के निशान को पार करने के लिए पहले से कहीं अधिक दृढ़ संकल्पित होगा।

भारत-बांग्लादेश सीरीज से शुभमन गिल को टी20 सीरीज से रखा जाएगा दूर

मुंबई, 15 सितंबर (एजेंसियां)। भारत और बांग्लादेश के बीच दो टेस्ट मैचों के बाद 7 अक्तूबर से टी20 सीरीज खेली जाएगी. दोनों टीमों के बीच खेले जाने वाले 3 टी20 मैचों में एक स्टार खिलाड़ी टीम इंडिया का हिस्सा नहीं होगा. इस खिलाड़ी को टेस्ट क्रिकेट के चलते आराम दिया जाएगा.

भारत-बांग्लादेश सीरीज से जुड़ी बड़ी खबर, इस खिलाड़ी को एक्शन से रखा जाएगा दूर, बीसीसीआई ने इस वजह से लिया फैसला! भारत और बांग्लादेश के बीच 19 सितंबर से दो मैचों की टेस्ट सीरीज खेली जाएगी. इस सीरीज से टीम इंडिया के टेस्ट सीजन की शुरुआत होगी. इस सीजन में भारतीय टीम को कुल 10 टेस्ट मैच खेलने हैं. वहीं, भारत और बांग्लादेश के बीच टेस्ट टेस्ट सीरीज के बाद टी20 सीरीज भी खेली जाएगी. दोनों टीमों के बीच 3 टी20 मैच होंगे. इस सीरीज को लेकर एक बड़ा अपडेट सामने आया है. टीम इंडिया के एक स्टार खिलाड़ी को इस सीरीज में आराम दिया जाएगा. ये खिलाड़ी स्टार ओपनर शुभमन

गिल हैं, जो टेस्ट में तीसरे नंबर पर खेलते हैं और टीम के अहम खिलाड़ियों में से एक हैं.

टी20 सीरीज में दिया जाएगा आराम

टीम इंडिया को बांग्लादेश के खिलाफ टेस्ट सीरीज के बाद न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ भी टेस्ट में भिड़ना है. ऐसे में रिपोर्ट्स के मुताबिक, वर्कलोड मैनेजमेंट को देखते हुए शुभमन गिल को टी20 सीरीज में आराम दिया जाएगा, क्योंकि इस सीजन में उनके पूरे 10 टेस्ट मैच खेलने की संभावना है. गिल टेस्ट फॉर्मेट में रोहित शर्मा, विराट कोहली और यशस्वी जायसवाल के साथ टीम के टॉप ऑर्डर में अहम खिलाड़ी हैं.

बांग्लादेश के खिलाफ 7 अक्टूबर से शुरू होने वाली तीन मैचों की टी20 सीरीज को लेकर बीसीसीआई के एक सूत्र ने पीटीआई को बताया, 'हां, शुभमन गिल को बांग्लादेश के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए आराम दिया जाएगा. अगर आप मैचों की संख्या देखें तो तीन टी-20 मैच 7 अक्टूबर, 10 और 13 को खेले जाएंगे. इसके बाद न्यूजीलैंड के खिलाफ पहला टेस्ट मैच 16 अक्टूबर से शुरू होगा. इसलिए तीन दिन के गैप को देखते हुए गिल को आराम देना महत्वपूर्ण है.'

जिम्बाब्वे दौरे पर संभाली थी कमान

जिम्बाब्वे को हाल ही में एक टी20 सीरीज के लिए कप्तान भी बनाया गया था. टी20 वर्ल्ड कप 2024 के बाद हरारे में जिम्बाब्वे के खिलाफ पांच मैचों की सीरीज के लिए कप्तान नियुक्त किया गया था, जिसे भारत ने 4-1 से जीता था. वहीं, उनके टी20 करियर की बात की जाए तो वह टीम इंडिया के लिए अभी तक 21 टी-20 मैच खेल चुके हैं. इन मैचों में उन्होंने 578 रन बनाए हैं. उनके नाम एक शतक और तीन अर्धशतक भी दर्ज हैं, साथ ही उनका स्ट्राइक रेट लगभग 140 का है.

वहीं, टेस्ट की बात की जाए तो वह टीम इंडिया के लिए 25 मुकाबले खेल चुके हैं. इस दौरान गिल ने 35.52 की औसत से 1492 रन बनाए हैं. टेस्ट में वह 6 अर्धशतक और 4 शतक जड़ चुके हैं. पिछले कुछ समय से वह इस फॉर्मेट में तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी कर रहे हैं. वहीं, वनडे में उन्होंने अभी तक 47 मैचों में 2328 रन बनाए हैं. जिसमें एक दोहरा शतक भी शामिल है.

फेवरेट तो हम ही हैं, चिंता उन्हें होनी चाहिए- शमी

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी पर बोले भारतीय पेसर

कहा- 100% फिट होने पर ही वापसी करूंगा

नई दिल्ली, 15 सितंबर (एजेंसियां)। तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी ने बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी पर बात करते हुए कहा कि 'फेवरेट तो हम ही हैं, उन्हें चिंता होनी चाहिए।'

34 साल के तेज गेंदबाज ने बंगाल क्रिकेट एसोसिएशन के अवॉर्ड शो में हिस्सा लिया। शमी एनसीए में टखने की चोट से रिकवर कर रहे हैं। ऑस्ट्रेलियाई टीम भारत को पिछली 4 टेस्ट सीरीज से नहीं हरा सकी है।

शमी ने टीम इंडिया में वापसी के सवाल पर कहा- 'मैं जबरदस्ती और जल्दबाजी नहीं करना चाहता हूं। मैं 100 फीसदी फिट होकर मैदान पर लौटना चाहता हूं।'

शमी ने पीटीआई से कहा, 'मैं जितना मजबूत होकर वापस आऊंगा, मेरे लिए उतना ही बेहतर होगा। मैं जल्दबाजी नहीं करना चाहता, क्योंकि फिर से चोटिल होने का जोखिम नहीं उठाना चाहता,

चाहे वे बांग्लादेश, न्यूजीलैंड या ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीरीज हो।' उन्होंने कहा- 'मैंने पहले ही गेंदबाजी शुरू कर दी है। शमी ने आखिरी इंटरनेशनल मैच 2023 वनडे वर्ल्ड कप में खेला था। वे ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ फाइनल मैच में चोटिल हो गए थे।

रणजी ट्रॉफी खेल सकते हैं शमी

शमी अक्टूबर में होने वाली रणजी ट्रॉफी में खेलते दिख सकते हैं। वे बंगाल की ओर से 11 अक्टूबर को यूपी और 18 अक्टूबर को बिहार के खिलाफ मैच में उतर सकते हैं। यदि वो डोमेस्टिक क्रिकेट खेलते हैं तो न्यूजीलैंड के खिलाफ टेस्ट मैचों में से इंडियन टीम में वापसी कर सकते हैं।

शमी की मुख्य बातें

अगर मुझे अपनी फिटनेस जांचने के लिए डोमेस्टिक खेलने की जरूरत पड़ी, तो मैं खेलूंगा। सबसे अहम बात यह है कि मैं आगे आने वाली किसी भी चुनौती के लिए पूरी तरह तैयार हूं, चाहे टीम हो या फॉर्मेट।

मैं अक्सर कहता हूं कि मैं यूपी में पैदा हुआ, लेकिन बंगाल में बना हूं, यहां 20 साल से अधिक का सफर तय किया है मैंने और मैं बंगाल से मिले प्यार और समर्थन के लिए आभारी हूं।

श्रेयस अय्यर पर बासित अली ने लगाया बड़ा आरोप

उनका प्रदर्शन कप्तानी वाला नहीं रहा

इस्लामाबाद, 15 सितंबर (एजेंसियां)। कहते हैं वक्त बहुत बलवान होता है. और, जब ये किसी का बुरा चलता है तो फिर हर कोई उस पर उंगलियां उठाना शुरू कर देता है. ठीक वैसे ही जैसे कि पाकिस्तान के पूर्व क्रिकेटर बासित अली ने आउट ऑफ फॉर्म चल रहे भारतीय बल्लेबाज श्रेयस अय्यर पर आरोप लगाया है. बासित अली ने अपने यू-ट्यूब चैनल के जरिए श्रेयस अय्यर पर निशाना साधते हुए कहा है कि अय्यर में टेस्ट क्रिकेट की अब भूख नहीं है. उनके मन में अब रेड बॉल क्रिकेट को लेकर चाह नहीं रही. बासित अली के सीधे-सीधे आरोप लगाने वाले इस बड़े बयान के पीछे की वजह दलीप ट्रॉफी में श्रेयस अय्यर का हालिया प्रदर्शन है.

दलीप ट्रॉफी में श्रेयस अय्यर का फीका प्रदर्शन

दलीप ट्रॉफी में श्रेयस अय्यर इंडिया D के कप्तान हैं. लेकिन, बल्ले से उनका प्रदर्शन कप्तानी वाला नहीं रहा है. अब तक खेली

3 पारियों में उन्होंने सिर्फ 9, 54 और 0 का स्कोर किया है. यानी 3 पारियों में उनके सिर्फ 63 रन है. बासित अली ने इसी को लेकर श्रेयस अय्यर पर बड़ा हमला बोला है.

अय्यर में टेस्ट क्रिकेट की भूख नहीं- बासित अली का आरोप

पाकिस्तान के लिए खुद सिर्फ 19 टेस्ट खेलने वाले बासित अली ने कहा कि ऐसा लग रहा है जैसे अय्यर में अब लंबे फॉर्मेट खेलने की चाह नहीं रही. उनमें रेड बॉल क्रिकेट को लेकर अब भूख नहीं दिखती है. वो अब सिर्फ बाउंड्रीज के भूखे नजर आते हैं. बासित अली ने भारतीय क्रिकेट फैंस से माफी मांगते हुए कहा कि अगर वो भारत के सेलेक्टर होते तो अय्यर को दलीप ट्रॉफी के लिए कभी नहीं चुनते. ऐसा इसलिए क्योंकि वो खेल की इज्जत नहीं कर रहे.

'खुद को विराट कोहली ना समझें अय्यर'

बासित अली ने आगे कहा कि अगर वर्ल्ड कप में 2 शतक ठोककर श्रेयस अय्यर खुद को ये समझते हैं कि वो विराट कोहली हो गए हैं तो ऐसा बिल्कुल भी नहीं है. श्रेयस अय्यर को पहले ही बांग्लादेश के खिलाफ टेस्ट सीरीज के लिए नहीं चुना गया है. और, अब दलीप ट्रॉफी में जैसा बल्ले से उनका परफॉर्मेन्स देखने को मिल रहा है, उससे लगता है कि आगे आने वाली न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीरीज में भी उनका चयन मुश्किल ही रहेगा. अय्यर ने भारत के लिए आखिरी टेस्ट इस साल फरवरी में खेला था.

श्रेयस अय्यर के पास मौका है, क्या देंगे करारा जवाब?

हालांकि, श्रेयस अय्यर के पास टीम इंडिया में वापसी करने और पाकिस्तान के पूर्व क्रिकेटर बासिल अली के लगाए आरोपों का जवाब देने के लिए मौका है. दलीप ट्रॉफी के दूसरे मैच में इंडिया A ने इंडिया D के सामने जीत के लिअ 488 रन का लक्ष्य रखा है. अय्यर अगर कप्तानी और बड़ी पारी खेलकर इस मुकाबले में अपनी टीम को जिताते हैं तो फिर चित भी उनकी और पट भी उनकी हो सकती है. इसके अलावा दलीप ट्रॉफी में इसके बाद एक मुकाबला और होगा, जिसमें अय्यर बेहतर प्रदर्शन के दम पर टीम इंडिया का दरवाजा खटखटा सकते हैं और बासित अली की बोलती बंद कर सकते हैं.

पापा ने कभी स्कूल नहीं जाने दिया

अब 47 छक्कों के साथ ठोके 499 रन, बना डाले 5 बड़े रिकॉर्ड

लखनऊ, 15 सितंबर (एजेंसियां)। स्कूल क्या होता है, उसने जाना ही नहीं? क्योंकि, पापा ने एडमिशन ही नहीं कराया. और, इसके पीछे की वजह थी सिर्फ क्रिकेट, जिसे लेकर स्वास्तिक चिकारा से भी ज्यादा उनके पापा क्रेजी रहे हैं. पापा की तमन्ना थी कि बेटा खेलेगा तो बस क्रिकेट. इसी का नतीजा रहा कि स्वास्तिक ने सिर्फ 5 साल की उम्र से ही क्रिकेट खेलना शुरू कर दिया. उनके पहले कोच उनके पिता ही रहे. पापा कि जिद से शुरू हुआ बेटे का क्रिकेट आज हदें पार कर चुका है और जिसका सबसे ताजा प्रमाण यूपी टी20 लीग 2024 में मिलता है, जहां उन्होंने 47 छक्के उड़ाते हुए 499 रन बनाने के साथ 5 हाहाकारी रिकॉर्ड भी बनाए हैं.

क्रिकेट में रिकॉर्ड का दूसरा नाम स्वास्तिक चिकारा

यूपी टी20 लीग 2024 में स्वास्तिक चिकारा की टीम मेरठ मैवरिक्स ने चैंपियन का चोला पहना. पिछले साल फाइनल में

आकर खिताब से चूकने वाली टीम, इस सीजन अपनी जीत का डंका पीटने में कामयाब हुई तो सिर्फ इसलिए क्योंकि स्वास्तिक चिकारा का बल्ला पूरे सीजन, मैच दर मैच, आग उगलता दिखा. इसी का असर है कि UP T20 लीग 2024 का हर बड़ा रिकॉर्ड स्वास्तिक चिकारा के नाम पर है.

47 छक्केके साथ 499 रन, बनाए 5 हाहाकारी रिकॉर्ड

स्वास्तिक चिकारा ने UP T20 लीग 2024 में खेले 12 मैचों में 47 छक्के और 30 चौके के साथ 49.90 की औसत से 499 रन बनाए. इस दौरान उन्होंने 5 बड़े रिकॉर्ड बनाए, जिसमें सबसे ज्यादा छक्के, सबसे ज्यादा रन, सबसे ज्यादा बाउंड्रीज, सबसे बड़ा स्कोर और सबसे ज्यादा अर्धशतक दर्ज है.

यूपी टी20 लीग 2024 में स्वास्तिक चिकारा सबसे ज्यादा 47 छक्के लगाने वाले बल्लेबाज हैं. भले ही वो 500 रन का आंकड़ा नहीं छू सके लेकिन 499 रन के साथ भी वो सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज हैं. उनके नाम इस सीजन में सबसे ज्यादा 77 बाउंड्रीज जड़ने का रिकॉर्ड भी दर्ज हुआ. 114 रन का सबसे बड़ा स्कोर भी उन्हीं के नाम पर दर्ज रहा. उन्होंने सबसे ज्यादा 5 अर्धशतक यूपी टी20 लीग 2024 में जड़े हैं.

पापा ने जो चाहा, स्वास्तिक उसे अच्छे से दे रहे अंजाम

यूपी टी20 लीग 2024 में इन सारे रिकॉर्डों को बनाते उनके पिता ने जब देखा होगा तो यकीनन उन्हें गर्व हुआ होगा. आखिरकार ये उनका ही तो सपना था कि बेटा क्रिकेट खेले. पिता के ख्वाब को अपनी हसरतों से जोड़े स्वास्तिक चिकारा ने क्रिकेट तो 4-5 साल की उम्र से ही खेलना शुरू कर दिया था. लेकिन, उन्होंने प्रोफेशनल ट्रेनिंग 11-12 साल की उम्र से लेनी शुरू की. उनके पहले प्रोफेशनल कोच गाजियाबाद में अमर सर बने. उसके बाद उन्होंने हरियाणा के नरेंद्र गुर्जर सर से ट्रेनिंग ली. भारत के लिए अंडर 19 क्रिकेट खेल चुके मंजोत कालरा से बातचीत में स्वास्तिक चिकारा ने इन बातों का खुलासा किया है.

'गौतम गंभीर दोस्त नहीं थे', टीममेट आकाश चोपड़ा ने बताया 'सच'

क्या शुरू होगा नया विवाद?

नई दिल्ली, 15 सितंबर (एजेंसियां)। भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर अपने क्रिकेटर करिअर के अलावा कोचिंग करिअर में भी खूब नाम कमा चुके हैं। वह मौजूदा समय में इंडियन क्रिकेट टीम के हेड कोच के पद पर अपनी सेवा दे रहे हैं। इससे पहले उन्होंने आईपीएल में बतौर मेंटोर के तौर पर कोलकाता नाइट राइडर्स को चैंपियन बनाया था। गौतम गंभीर का इन सबसे हटकर विवादों से भी गहरा नाता रहा है। खासतौर पर महेंद्र सिंह धोनी और विराट कोहली को लेकर उनका मतभेद किसी से भी छिपा नहीं रहा था। अब टीम इंड़िया के एक पूर्व क्रिकेटर ने अपने बयान से नए विवाद को जन्म दे दिया है।

पॉडकास्ट में पूर्व क्रिकेटर ने दिया बयान

इंडियन क्रिकेट टीम के पूर्व सलामी बल्लेबाज आकाश चोपड़ा ने यूट्यूब चैनल पर राज शामानी के साथ पॉडकास्ट में बात करते

हुए कहा कि भारतीय टीम में कई बार बड़े बदलाव किए गए। यहां तक कि वीरेंद्र सहवाग जैसे खिलाड़ी को भी नंबर-4 पर बल्लेबाजी करने के लिए उतारा गया। हमारी टीम बहुत अच्छी थी। जब हम खेल रहे थे तो उस समय विराट कोहली और शिखर धवन में से केवल एक को ही खेलने का मौका मिल रहा था। सहवाग को ओपनिंग के बजाय नंबर-4 पर बल्लेबाजी के लिए भेजा जा रहा था ताकि नंबर-3 पर विराट कोहली या शिखर धवन बल्लेबाजी कर सकें। ओपनिंग स्पॉट के लिए सचिन तेंदुलकर के साथ उनमें और गौतम गंभीर में किसी एक को चुना जा रहा था।

गंभीर नहीं थे मेरे दोस्त

आकाश चोपड़ा ने कहा कि वह गंभीर के दोस्त नहीं थे, क्योंकि टीम में ओपनिंग स्पॉट के लिए शुरू में उनकी गौतम गंभीर से ही कड़ी प्रतिस्पर्धा थी। लेकिन, गंभीर का जुनून उनके साथ सभी को दिखाई दे रहा था। गंभीर बेहद भावुक, मेहनती और अपने काम को लेकर जुनूनी व्यक्ति थे। इसी वजह से वह सफल क्रिकेटर बने और खूब सारे रन बनाए।

आकाश चोपड़ा ने कहा कि गौतम गंभीर एक अच्छे दिल वाले व्यक्ति हैं। वह बहुत संपन्न परिवार से आते हैं। उनमें बच्चे जैसा जुनून है। वह पूरे दिन मैदान पर रहते हैं। वो सोने की चम्मच लेकर पैदा हुए हैं चांदी की भी नहीं। गौतम का दिल सही जगह पर है।

17 साल की अनमोल खरब ने बेल्जियम में बढ़ाई भारत की शान

बैडमिंटन टूर्नामेंट में जीता खिताब

ब्रसेल्स,15 सितंबर (एजेंसियां)। भारत की 17 वर्षीय अनमोल खरब ने बेल्जियम अंतरराष्ट्रीय बैडमिंटन टूर्नामेंट के महिला एकल में अपना पहला अंतरराष्ट्रीय खिताब जीता। उन्होंने कड़े मुकाबले में डेनमार्क की अमाली शुल्ज को हराया। क्वालिफाइंग राउंड के जरिए मुख्य ड्रॉ में जगह बनाने वाली खरब ने 59 मिनट तक चले फाइनल मुकाबले में अपनी सातवीं वरीयता प्राप्त प्रतिद्वंद्वी पर 24-22, 12-21, 21-10 से जीत दर्ज की। यह टूर्नामेंट एक अंतरराष्ट्रीय चैलेंज इवेंट है।

ईशान किशन की 9 महीने बाद टीम इंडिया में हो सकती है वापसी

मुंबई, 15 सितंबर (एजेंसियां)। टीम इंडिया से ईशान किशन की दूरियां अब मिट सकती है. टीम में फिर से वापसी का उनका इंतजार अब खत्म हो सकता है. पीटीआई की मुताबिक ऐसा भारत-बांग्लादेश सीरीज के दौरान ही होता दिख सकता है. ईशान किशन ने भारत के लिए आखिरी मैच पिछले साल नवंबर में T20 के तौर पर खेला था. उसके बाद से ही वो टीम इंडिया से दूर हैं. लेकिन, 9 महीने बीत जाने के बाद उनकी वापसी के फिर

से आसार जगे हैं. ये संभावना कैसे जगी है, अब जरा वो समझिए.

पीटीआई की खबर के मुताबिक ईशान किशन का सेलेक्शन बांग्लादेश के खिलाफ 3 टी20 मैचों की सीरीज के लिए हो सकता है. रिपोर्ट के मुताबिक ईशान का चयन T20 सीरीज में ऋषभ पंत की जगह हो सकता है. ऋषभ पंत लंबे फॉर्मेट में भारत के नंबर वन विकेटकीपर हैं. भारतीय टीम को आगे अभी कई सारे लंबे फॉर्मेट यानी टेस्ट क्रिकेट मुकाबले खेलने हैं. ऐसे में भारतीय सेलेक्टर्स बांग्लादेश के खिलाफ टी20 सीरीज से ब्रेक देकर पंत के वर्कलोड को मैनेज करना चाहेंगे.

ऋषभ पंत को अगर बांग्लदेश के खिलाफ टी20 सीरीज से आराम मिला तो इस बात की पूरी संभावना बनेगी कि ईशान किशन टीम इंडिया में 9 महीने बाद वापसी कर सकते हैं. इशान किशन को अनुशासनहीनता को लेकर टीम से बाहर किया गया था. लेकिन, हाल के दिनों में उनका मिजाज बदला है. उन्होंने घरेलू क्रिकेट में अच्छा प्रदर्शन भी किया है. यही वजह है कि भारतीय सेलेक्टर्स अगर पंत को आराम देने का मन बनाते हैं तो ईशान को चांस दे सकते हैं.

बास्केटबॉल चैंपियनशिप में केवी एएफएस बेगमपेट टीम रनर

कानपुर, 15 सितंबर (एजेंसियां)। 53वीं केवीएस राष्ट्रीय बास्केटबॉल चैंपियनशिप 11 से 15 सितंबर 2024 तक केवी आईआईटी कानपुर में आयोजित की गई थी। हैदराबाद क्षेत्र की केवी एएफएस बेगमपेट टीम ने दूसरा स्थान हासिल किया। गुरुग्राम क्षेत्र के खिलाफ सेमीफाइनल मैच में केवी एएफएस बेगमपेट ने 57-52 के स्कोर से जीत हासिल की। फाइनल में, उन्होंने जयपुर क्षेत्र के खिलाफ खेला और 58-49 के स्कोर के साथ उपविजेता रहे।

केवी एएफएस बेगमपेट को केवीएस हैदराबाद क्षेत्र के उपायुक्त मंजूनाथ और सहायक आयुक्त (खेल) रेजी नाथ ने बधाई दी। प्राचार्य आर वेंकटेश्वर राव, खेल प्रकोष्ठ के सदस्य सूर्य प्रकाश और पॉन के साथ, कोच दयाश्री रामू, सहायक कोच आशीष सिंह, रियाज़ खान, अमित त्यागी ने सभी प्रतिभागियों को बधाई दी।

विसर्जन के दिन सभी विभागों के प्रतिनिधि मौजूद रहेंगे : सीवी आंनद

सीपी ने सभी जोनल डीसीपी, एसएचओ और गश्ती स्टाफ के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंस की

हैदराबाद, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। 17 तारीख को गणेश प्रतिमा जुलूस और विसर्जन के लिए केवल एक दिन बाकी हैं, साथ ही उसी दिन पब्लिक गार्डन और परेड ग्राउंड में अन्य कार्यक्रम और आज रात से शुरू होने वाले मिलाद उन नबी उत्सव को देखते हुए हैदराबाद सिटी पुलिस ने तैयारी गतिविधियों के अंतिम चरण को तेज कर दिया है। रविवार, सिटी पुलिस कमिश्नर सी.वी. आनंद ने सभी जोनल डीसीपी, एसएचओ और गश्ती और ब्लू कोल्ट्स स्टाफ के साथ एक वीडियो कॉन्फ्रेंस की। इस व्यापक ब्रीफिंग के दौरान, सीपी आनंद ने आगे की चुनौतियों को रेखांकित किया और कई प्रमुख कारकों पर जोर दिया, जिन्हें बंदोबस्त योजना तैयार करते समय विचार करने की आवश्यकता है। उन्होंने आज रात से शुरू होने वाले सुरक्षा उपायों, खुफिया जानकारी जुटाने और समग्र कार्य योजना के महत्व पर जोर दिया। ब्लू कोल्ट्स और

गश्ती दलों को गलियों, उपनगरों और मिश्रित-समुदाय के इलाकों में गश्त बढ़ाने का निर्देश दिया गया।

पिछले साल की खामियों का जिक्र करते हुए उन्होंने विशेष रूप से बशीरबाग और एमजे मार्केट जैसे महत्वपूर्ण जंक्शनों और क्रॉस ओवर पॉइंट्स पर एक मजबूत यातायात प्रबंधन योजना की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा, "विभिन्न सड़कों से महत्वपूर्ण जंक्शनों पर पहुंचने वाले वाहनों को आनुपातिक रूप से प्रबंधित किया जाना चाहिए।" आयोजकों को बिना देरी के मूर्तियों को स्थानांतरित करने के लिए प्रोत्साहित करने और सभी आवश्यक रसद सहायता प्रदान करने के लिए डीसीपी को निर्देश दिए गए थे। बल समायोजन, बाहरी बलों की ब्रीफिंग, संचार प्रणाली, तोड़फोड़ विरोधी जांच, सोशल मीडिया निगरानी, एसएचई टीमों की तैनाती, ड्रोन और कैमरा-माउंटेड वाहनों के साथ-साथ अतिरिक्त प्लाटून की रणनीतिक तैनाती के संबंध में प्रमुख निर्देश जारी किए गए थे। 19 तारीख को मिलाद-उन-नबी जुलूस की व्यवस्था और अन्य परिचालन पहलुओं पर भी विस्तार से चर्चा की गई। सभी डीसीपी ने अपने अधिकार क्षेत्र में लागू किए जा रहे उपायों और कार्य योजनाओं की जानकारी दी और डीसीपी - एसबी ने एहतियाती उपायों, दोनों पक्षों के समुदाय के बुजुर्गों और युवाओं की भूमिकाओं और सड़क सुरक्षा पर चर्चा करने में काफी समय बिताया। बशीरबाग में पुराने सीपी कार्यालय में टीजीसीसीसी और सीसीसी सुबह से ही काम करना शुरू कर देंगे, जिसमें विसर्जन के दिन उत्पन्न होने वाली किसी भी समस्या को हल करने के लिए सभी विभागों के प्रतिनिधि मौजूद रहेंगे। जे. परिमाला हाना नूतन संयुक्त सीपी प्रशासन, के. शिल्पवल्ली डीसीपी एसएमआईटी, रोहिणी प्रियदर्शिनी डीसीपी, पी साई चैतन्य डीसीपी, चैतन्य कुमार डीसीपी विशेष शाखा, हैदराबाद और अन्य वरिष्ठ अधिकारी वीडियो कॉन्फ्रेंस में शामिल हुए।

वित्तीय अपराधों का केंद्र बन रहा मंचेरियल

मंचेरियल, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। मंचेरियल शहर धीरे-धीरे वित्तीय अपराधों का केंद्र बनता जा रहा है। पिछले कुछ सालों में यहां चार बड़े वित्तीय अपराध दर्ज किए गए हैं। कुछ क्रेडिट कोऑपरेटिव सोसाइटीज अनुसूचित बैंकों की तुलना में अधिक ब्याज दर (आरओआई) का वादा करके ग्राहकों को लुभा रही हैं। वे भारी जमाराशि प्राप्त करने में सक्षम हैं। केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा निगरानी प्रणाली की कमी के कारण वे कथित तौर पर कुछ समय बाद फंड को दूसरी जगह लगा रहे हैं। कथित तौर पर वे फंड को रियल एस्टेट और अन्य क्षेत्रों में निवेश कर रहे हैं।

बेल्लमपल्ली मंडल के चंद्रवेल्ली के कामरा चंद्रमौली, बेल्लमपल्ली के रत्नम श्रीकांत और गोलम कार्तिक उर्फ हनुमंत को शनिवार को जिले के करीब 88 किसानों से 2.76 करोड़ रुपये की ठगी करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया। किसानों को रियायती दरों पर ट्रैक्टर बेचने के नाम पर ठगा गया। जिस कंपनी के जरिए किसानों को ठगा गया, उसका चेयरमैन पुन्ना कुमार स्वामी फरार है।

सकारात्मक दृष्टिकोण से उत्सव मनाया जाना चाहिए : पोन्नम

मंत्री ने गणेश विसर्जन की व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया

हैदराबाद, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। परिवहन और बीसी कल्याण मंत्री पोन्नम प्रभाकर ने विधायक कव्वमपल्ली सत्यनारायण के साथ करीमनगर में होने वाले गणेश विसर्जन के लिए मानकोंदूर तालाब की व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया। इस दौरान मंत्री पोन्नम प्रभाकर ने तालाब की व्यवस्था को लेकर अधिकारियों को कई निर्देश दिये। उन्होंने करीमनगर कलेक्टर और नगर निगम अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया है कि विसर्जन में कोई परेशानी न हो।पुलिस ने विसर्जन स्थल पर प्रकाश व्यवस्था और अन्य व्यवस्था करने का सुझाव दिया है ताकि शोभायात्रा के दौरान शांति और सुरक्षा में खलल न पड़े। कार्यक्रम में जिला कलेक्टर पामेला सत्पथी, अतिरिक्त कलेक्टर प्रपुल देसाई (स्थानीय निकाय), लक्ष्मी किरण (राजस्व), नगर निगम आयुक्त चाहत बाज पई, आरडीओ, पुलिस और अन्य अधिकारियों ने भाग लिया। मंत्री पोन्नम प्रभाकर ने कहा कि 16 तारीख सोमवार को, गणेश नवरात्रि उत्सव बड़े धूमधाम से आयोजित किया जाता है और करीमनगर शहर के केंद्र में स्थापित सैकड़ों गणेश मूर्तियों को मानकोंदूर, कोट्टापल्ली और चिंताकुंटा तालाबों में विसर्जित किया जाता है। इस संबंध में, सरकार ने जिला, नगर निगम मशीनरी और विभिन्न विभागों के समन्वय से गणेश विसर्जन की प्रक्रिया को बिना किसी कठिनाई के सुचारू रूप से चलाने के लिए सभी व्यवस्थाएं की हैं। सरकार ने गणेश मंडपमों को इतनी मुफ्त बिजली प्रदान की है जितनी इतिहास में पहले कभी नहीं की गई। एक सकारात्मक दृष्टिकोण कि उत्सव भव्यता से मनाए जाने चाहिए और लोक प्रशासन में किसी भी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न किए बिना नवरात्रि भव्यता से आयोजित की जानी चाहिए। करीमनगर नगर निगम मशीनरी,

एम्बुलेंस में हो रही गांजे की तस्करी

2.5 करोड़ का 4 कुंतल गांजा बरामद

कोत्तागुडेम, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। कोत्तागुडेम कस्बे की दो-नगरीय सीमा के अंतर्गत रामावरम इलाके में रविवार तड़के एक एम्बुलेंस में ले जाया जा रहा भारी मात्रा में गांजा पकड़ा गया। बताया जा रहा है कि कोत्तागुडेम-विजयवाड़ा हाईवे पर एंबुलेंस का एक टायर पंचर होने के कारण यह पदार्थ दुर्घटनावश उसमें फंस गया। स्थानीय युवकों ने जब वाहन का टायर पंचर देखा तो वे आगे आए और वाहन चालक की मदद कर टायर बदलवाया। गाड़ी की रजिस्ट्रेशन प्लेट तमिलनाडु की है, इसलिए युवकों ने एंबुलेंस में बैठे मरीज के बारे में पूछताछ की, लेकिन ड्राइवर उन्हें ठीक से जवाब नहीं दे पाया।

संदिग्ध युवकों ने गाड़ी के अंदर जांच की तो पाया कि उसमें चादर से ढके गांजे के पैकेट रखे हुए थे। खिड़कियों पर भी काले कपड़े से ढका हुआ था।

इसके बाद उन्होंने ड्राइवर को पकड़ लिया और स्थानीय पुलिस को सूचना दी, जिसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची और वाहन की जांच की और पूछताछ के लिए वाहन चालक को थाने ले गई। बताया जा रहा है कि ड्राइवर ने युवकों को पैसे का लालच देकर उसे जाने दिया, लेकिन युवकों ने कर्तव्यनिष्ठा से पुलिस को बुला लिया।

प्रारंभिक रिपोर्टों के अनुसार, गांजा का वजन लगभग 4 क्विंटल है और इसकी कीमत 2.5 करोड़ रुपये है।

पुलिस ने अभी तक इस घटना के बारे में कोई आधिकारिक बयान नहीं दिया है। संदेह है कि गांजा ओडिशा से तमिलनाडु ले जाया जा रहा था।

टैंक बंड विसर्जन प्रतिबंध हटाने की मांग

हैदराबाद, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। भाग्यनगर गणेश उत्सव समिति ने रविवार को तेलंगाना सरकार को टैंक बंड पर गणेश प्रतिमाओं के विसर्जन पर प्रतिबंध हटाने का अल्टीमेटम दिया। गणेश उत्सव समिति के नेताओं ने विरोध स्वरूप मूर्ति विसर्जन के लिए अधिकारियों द्वारा लगाए गए बैरिकेड को हटा दिया। उन्होंने उच्च न्यायालय के आदेशानुसार टैंक बंड पर मूर्ति विसर्जन पर प्रतिबंध लगाने वाले फ्लेक्स बैनर भी हटा दिए। यह कहते हुए कि झील में मूर्तियों के विसर्जन पर रोक लगाने के लिए कोई अदालती आदेश नहीं है, समिति के नेताओं ने कुछ भक्तों द्वारा लाई गई मूर्तियों को बैरिकेड हटाकर विसर्जित कर दिया।

पुलिस ने समिति नेताओं को रोकने के लिए कुछ नहीं किया और बाद में उसी स्थान पर पुनः बैरिकेड लगा दिए। गणेश उत्सव समिति ने सरकार से रविवार शाम तक टैंक बंड पर विसर्जन के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं करने की मांग की है। समिति के महासचिव राज्यवर्धन रेड्डी ने कहा कि सरकार को किसी भी तरह की रोक न लगाकर विसर्जन को सुचारू और शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न कराने में मदद करनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि अगर सरकार बैरिकेड हटाकर व्यवस्था करने में विफल रहती है तो उसके खिलाफ सीधी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने दावा किया कि समिति पिछले 45 सालों से सरकार की मदद से टैंक बंड से मूर्तियों के विसर्जन का आयोजन करती आ रही है। उन्होंने आश्चर्य जताया कि सरकार ने इस साल प्रतिबंध क्यों लगाए? समिति के नेता ने चेतावनी दी कि भक्त इसे बर्दाश्त नहीं करेंगे और घोषणा की कि वे मूर्तियों को टैंक बंड में विसर्जित करेंगे। अधिकारियों ने एनटीआर मार्ग और नेकलेस रोड की ओर से हुसैन सागर में विसर्जन की व्यवस्था की है, लेकिन उन्होंने टैंक बंड पर प्रतिबंध लगा दिया है।

पुलिस और ग्रेटर हैदराबाद नगर निगम (जीएचएमसी) ने पहले ही बैनर लगा दिए हैं, जिसमें घोषणा की गई है कि तेलंगाना उच्च न्यायालय के आदेश के अनुसार टैंक बंड पर विसर्जन की अनुमति नहीं है। पुलिस ने विसर्जन को रोकने के लिए सड़क और झील के बीच बैरिकेड भी लगाए हैं। गणेश उत्सव समिति ने दावा किया कि उच्च न्यायालय ने हुसैन सागर में विसर्जन पर रोक नहीं लगाई है, इसलिए कोई प्रतिबंध नहीं होना चाहिए।

इसके नेताओं ने कहा कि मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी द्वारा आयोजित समीक्षा बैठक में भी, जिसमें पुलिस महानिदेशक, पुलिस आयुक्त और सभी विभागों के प्रमुख शामिल हुए थे, यह नहीं कहा गया कि टैंक बंड पर विसर्जन पर प्रतिबंध है। 7 सितम्बर से शुरू हुआ गणेश उत्सव 17 सितम्बर को विशाल विसर्जन जुलूस के साथ समाप्त होगा।

हैदराबाद में गणेश विसर्जन की तैयारियां जोरों पर

हैदराबाद, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद में 17 सितंबर को होने वाले भव्य गणेश प्रतिमा विसर्जन की तैयारियां जोरों पर हैं। जहां शहर में मुख्य कार्यक्रम का बेसब्री से इंतजार है, वहीं कई भक्तों ने पहले ही अपनी मूर्तियों का विसर्जन शुरू कर दिया है, पिछले कुछ दिनों से सड़कों पर छोटे-छोटे जुलूस निकाले जा रहे हैं। हुसैन सागर, सफिलगुडा, सरूरनगर, एनटीआर घाट, सुन्नम चेरुवु, आईडीएल और कपरा जैसे जलाशयों में विसर्जन गतिविधियों में वृद्धि देखी गई है, क्योंकि परिवार और समुदाय भगवान गणेश को विदाई दे रहे हैं।

नगर निगम और पुलिस ने कहा है कि विसर्जन स्थलों और मूर्ति विसर्जन जुलूस के मार्ग पर सभी आवश्यक व्यवस्थाएं की जा रही हैं। अधिकारियों ने बताया कि गड्ढों को भरने से लेकर प्रमुख सड़कों के किनारे पेड़ों और तारों को हटाने और आस-पास के स्थानों पर विसर्जन के लिए छोटे तालाब और पोर्टेबल तालाब उपलब्ध कराने जैसे काम किए जा रहे हैं। हुसैन सागर और अन्य जलाशयों, जहां बड़ी मूर्तियां रखी जाती हैं, वहां क्रेन और विशेष वाहन तैनात किए गए हैं।

हैदराबाद ट्रैफिक पुलिस ने उत्सव को सुचारू रूप से मनाने के लिए शहर में श्रद्धालुओं की भीड़ के लिए डायवर्जन की योजना बनाई है। प्रमुख सड़कों पर चहल-पहल देखने को मिलेगी क्योंकि परिवार अपने प्रिय गणेश को अंतिम विदाई देने के लिए इकट्ठा होंगे। खैरताबाद गणेश मंगलवार की सुबह पानी की ओर अपनी शानदार यात्रा करेंगे, जिसमें हजारों की भीड़ उमड़ेगी।

गणेश पंडाल में लगाई आग, दो हिरासत में

सिद्दीपेट, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। अज्ञात बदमाशों ने शनिवार रात मुलुग मंडल के दसरलापल्ली गांव में एक दलित कॉलोनी में गणेश पंडाल में आग लगा दी। आधी रात के करीब जब श्रद्धालु उठे तो उन्होंने देखा कि पंडाल में आग लग गई है। उन्होंने बाल्टी और बर्तनों में पानी डालकर आग बुझाई। पंडाल और मूर्ति का एक बड़ा हिस्सा जलकर खाक हो गया। शिकायत के बाद पुलिस गांव पहुची और जांच शुरू की। पुलिस ने कथित तौर पर कुछ लोगों को हिरासत में ले लिया है।

कोलनुपाका मंदिर में काकतीय-युग के मिले शिलालेख

हैदराबाद, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। कोठा तेलंगाना चरित्र ब्रुंडम की एक टीम ने कोलनुपाका स्थल का दौरा किया और कोलानुपाका सोमेश्वरालय परिसर में चंडिकांबा मंदिर अंतरालम सीढ़ी पर काकतीय शिलालेख पाया। यह शिलालेख 13वीं शताब्दी की तेलुगु लिपि में, तेलुगु भाषा में लिखा गया है चूंकि यह मंदिर के रूप में बनाया गया है, इसलिए शिलालेख केवल दोनों तरफ से ही दिखाई देता है। शिलालेख में, काकतीय महाराजा गणपतिदेव, जिन्होंने वारंगल्लू स्वयंभूदेव की पूजा की थी, को अनुमाकोंडा पुरवरेश्वर के रूप में उल्लेखित किया गया है। मंदिर के रूप में दीवार के नीचे प्रतिमा स्तंभ को छिपाए जाने के कारण शिलालेख पूरी तरह नहीं मिल पाया। इसे देखते हुए इसे हटाकर संग्रहालय में रखने का अनुरोध किया गया है। कोठा तेलंगाना चरित्र ब्रुंदम के संयोजक श्रीरामोजू हरगोपाल ने कहा कि नए तेलंगाना इतिहास समूह ने तेलंगाना विरासत विभाग से आग्रह किया है कि वह मंदिर की सीढ़ी के रूप में बने विधान स्तंभ को हटाकर कोलानुपाका संग्रहालय में रख दे।

केटीआर ने दलबदलू विधायकों से नाता तोड़ने पर उड़ाया कांग्रेस का उपहास

हैदराबाद, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। बीआरएस के कार्यकारी अध्यक्ष केटी रामा राव ने मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी और उद्योग मंत्री डी श्रीधर बाबू की इस टिप्पणी पर कटाक्ष किया कि कांग्रेस का बीआरएस विधायकों पाडी कौशिक रेड्डी और अरेकापुडी गांधी के बीच अंदरूनी लड़ाई से कोई लेना-देना नहीं है। उन्होंने कांग्रेस की ईमानदारी पर सवाल उठाया और उनकी राजनीतिक चालबाजी का मजाक उड़ाया। उन्होंने पूछा कि श्रीमान ओवर स्मार्ट मंत्री, आपके तर्क के अनुसार, क्या आपके 'चित्तनायडू' (मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी) अभी भी टीडीपी में हैं या वे पूरी तरह से कांग्रेस में शामिल हो गए हैं? भले ही हम मान लें कि आप सही हैं, लेकिन वह मूर्ख कौन है जो हमारे बीआरएस विधायकों के घर गया और कांग्रेस के स्कार्फ़ पहनाकर उनका अपनी पार्टी में स्वागत किया? ऐसी बेशर्म राजनीति क्यों?

रामा राव ने कांग्रेस के दोहरे मापदंड की ओर इशारा किया। उन्होंने आश्चर्य जताया कि कांग्रेस बीआरएस विधायकों को अपने पाले में करने के लिए क्यों बेताब थी और फिर उससे इनकार क्यों कर रही थी? उन्होंने पूछा कि यह सब ड्रामा क्यों? क्या आपको पद खोने का डर है? उन्होंने दलबदलू विधायकों को अपना बताने में कांग्रेस की असमर्थता का भी मज़ाक उड़ाया।

गणेश विसर्जन के मद्देनजर यातायात प्रतिबंध

जगतियाल, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। गणेश प्रतिमा विसर्जन के मद्देनजर पुलिस ने जगतियाल कस्बे में मालवाहक वाहनों की आवाजाही पर प्रतिबंध लगा दिया है और उन्हें अलग-अलग मार्गों पर मोड़ दिया है। 16 और 17 सितंबर को यातायात प्रतिबंध लागू रहेंगे। करीमनगर से धर्मपुरी और मंचेरियल की ओर जाने वाले मालवाहक वाहनों को एसआरएसपी नहर, लक्ष्मीपुर बाईपास रोड से डायवर्ट किया गया है। करीमनगर से निजामाबाद की ओर जाने वाले वाहनों को एसआरएसपी नहर, चलगल बाईपास रोड से डायवर्ट किया गया है।

कोरुतला और मेटपल्ली से करीमनगर और मंचेरियल की ओर जाने वाले वाहनों को चलगल बाईपास रोड से डायवर्ट किया गया है। मंचेरियल और धर्मपुरी के वाहनों को राजीव चौक, गोलापल्ली बाईपास रोड से डायवर्ट किया गया है। एसकेएनआर कॉलेज से शहर में प्रवेश करने वाले वाहनों को पुराने बस स्टैंड से गोलापल्ली बाईपास की ओर मोड़ दिया गया है। धारूर से आने वाले वाहनों को चिन्ना नहर से गोलापल्ली बाईपास होते हुए राजीव चौक की ओर मोड़ दिया गया है। रायकल से आने वाले वाहनों को चलगल बाईपास रोड से भेजा गया है।

हरीश राव ने खैरताबाद में भगवान गणपति की पूजा की

हैदराबाद, 15 सितंबर (स्वतंत्र वार्ता)। पूर्व मंत्री हरीश राव ने आज विनायक नवरात्रि समारोह के तहत खैरताबाद में सम्मुख महाशक्ति गणपति के दर्शन किए। उन्होंने इस अवसर पर विशेष पूजा की। इससे पहले गणेश उत्सव समिति के आयोजकों ने हरीश राव का भव्य स्वागत किया। 70 फीट ऊंचे भगवान गणेश के दर्शन करने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु खैरताबाद पहुंचे। इस अवसर पर बोलते हुए हरीश राव ने कहा कि भारतीय संस्कृति बहुत समृद्ध है और उन्होंने कहा कि इस संस्कृति को आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाया जाना चाहिए। हमारा खैरताबाद विनायक दुनिया भर में प्रसिद्ध है। एक समय में विनायक चतुर्थी मुंबई की याद दिलाती थी। लेकिन अब पूरा देश खैरताबाद गणेश की प्रशंसा कर रहा है। हमारे खैरताबाद गणेश उत्सव समिति के आयोजकों को दुनिया की सबसे बड़ी गणेश मूर्ति बनाने का श्रेय है। उन्होंने कहा, अगर हम घर पर छोटी पूजा करते हैं, तो हमें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। लेकिन पिछले %0 वर्षों से इतने बड़े पैमाने पर गणेश मूर्ति स्थापित की जा रही है और मैं खैरताबाद समिति के आयोजकों के प्रयासों की ईमानदारी से सराहना करता हूं। उन्होंने कहा कि राज्य और देश में एकता और विविधता की संस्कृति है और कहा कि अगर लोगों को कोई समस्या है, तो वे एक साथ आगे बढ़ेंगे।

राव ने कहा कि चाहे दशहरा हो, दिवाली हो, बथुकम्मा हो, बोनालु हो, राम नवमी हो या विनायक चविथी, भारतीयों में इसे भव्य तरीके से मनाने की संस्कृति है और उन्होंने कहा कि इस संस्कृति को आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाना सभी की जिम्मेदारी है। जब हम सभी विनायक चतुर्थी के बारे में सोचते हैं, तो हमें लगता है कि यह एक जीवंत कार्यक्रम है स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान, बाल गंगाधर तिलक ने देश के सभी लोगों को एक साथ लाने के लिए विनायक चतुर्थी समारोह आयोजित किए। इन समारोहों ने स्वतंत्रता संग्राम को आगे बढ़ाया। हम उस संस्कृति को जारी रख रहे हैं, "उन्होंने याद किया। हरीश राव ने आने वाले दिनों में इस संस्कृति को जारी रखने का आह्वान किया। यह याद दिलाते हुए कि केसीआर के नेतृत्व में नौ वर्षों तक गणेश उत्सव भव्य तरीके से मनाया गया, राव ने राज्य सरकार से उसी तरीके से विसर्जन समारोह आयोजित करने का अनुरोध किया। उन्होंने यह भी कहा कि राज्य सरकार को किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाए बिना काम करना चाहिए।

Printed and published by Dr. Gireesh Sanghi on behalf of AGA Publications Ltd., at 396, Lower Tankbund, Hyderabad-500080 Editor: *Dhirendra Pratap Singh *responsible for selection of news under the PRB Act. Postal Licence H/SD/380/21-22, Phone:27644999. Fax:27642512, RNI No.69340/98, Regd.:No.AP/HIN/00196/01/1/97/TC.